

सम्पादक :—

श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०

‘भविष्य’ का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... १२७ रु०

द्विः माही चन्दा ... ६॥७ रु०

तिमाही चन्दा ... ३॥७ रु०

एक प्रति का मूल्य चार आने

Annas Four Per Copy



वार का पता :—

‘भविष्य’ इलाहाबाद

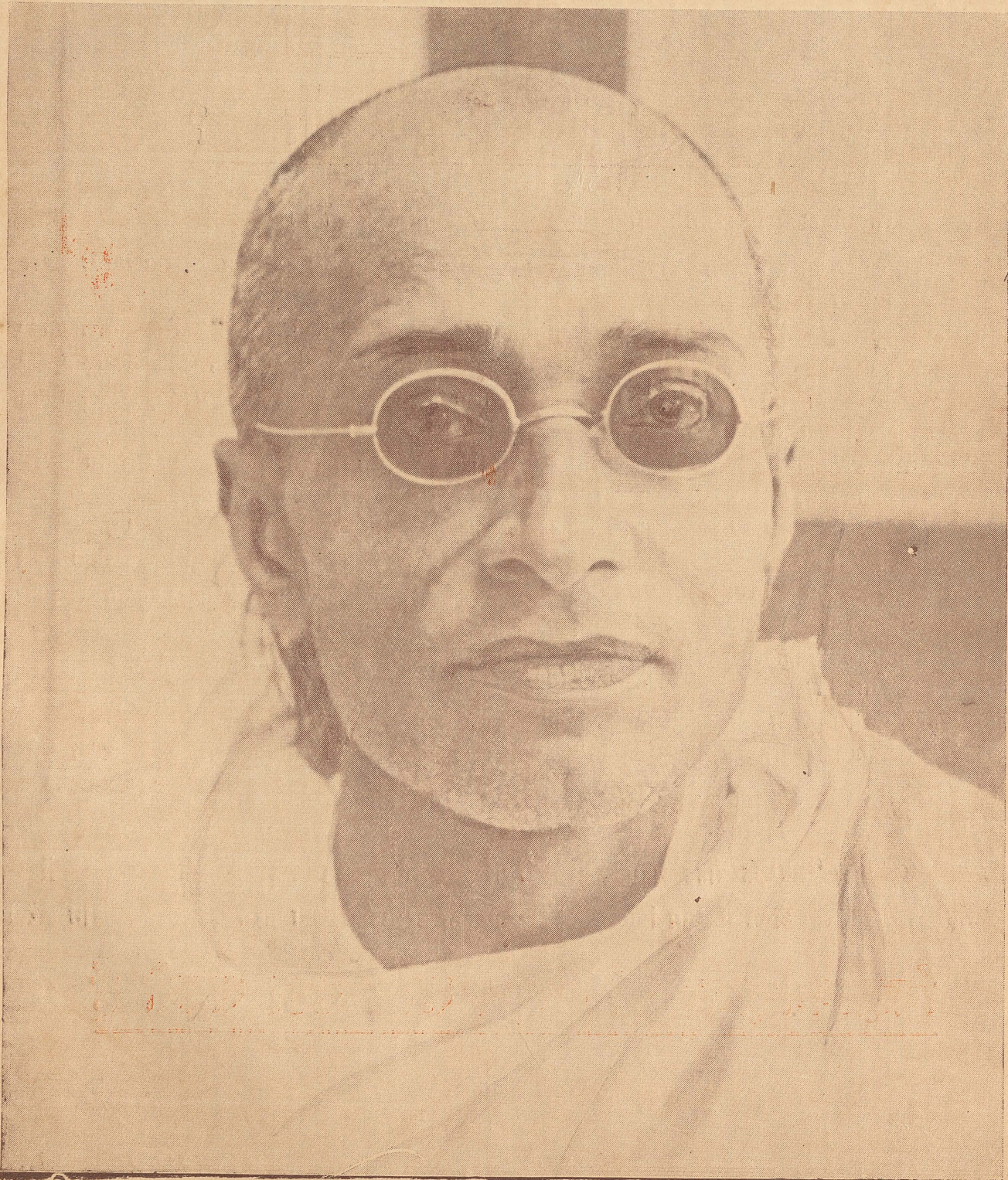
एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा की कौपो के  
मूल्य में कुछ भी नुकताचीनो करने  
में पहिले मित्रों को ‘भविष्य’ में प्रका-  
शित अलभ्य सामग्री और उसके  
प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर  
भी दृष्टिपात करना चाहिए।

वर्ष १, खण्ड ३

इलाहाबाद—बृहस्पतिवार ; १४ मई, १९३१

संख्या ६, पूर्ण संख्या ३३



सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—श्री० सी० राजगोपालाचार्य ( मद्रास )



# ‘चाँद’ के असाधारण सम्मान से लोग क्यों डाह करते हैं ??

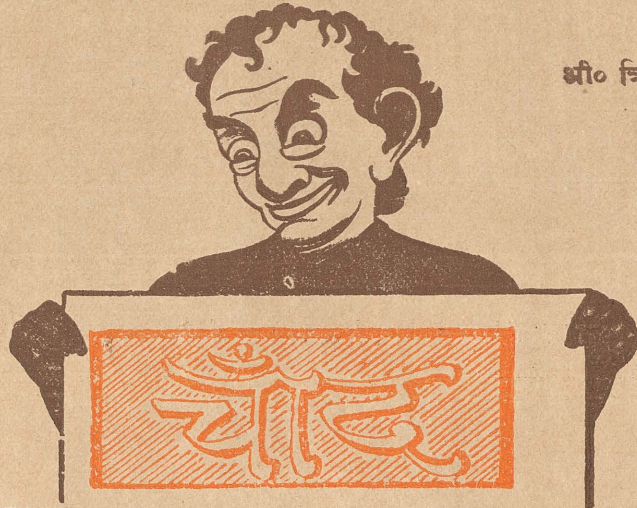
एक प्रति का मूल्य  
दस आने मात्र !

सम्पादक :—

श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०, सं० ‘भविष्य’

पृष्ठ-संख्या १३२

चित्र-संख्या १००



वार्षिक चन्दा ६॥॥ रु०

छः माही चन्दा ३॥॥ रु०

## आखिर ‘चाँद’ में गुण क्या है ?

‘चाँद’ के ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखाना सद्विचारों को आमन्त्रित करना है।

‘चाँद’ ही समस्त भारत में ऐसा प्रभावशाली पत्र रहा है, जिसने अपने थोड़े से ही जीवन में समाज तथा देश में खल-बलो मचा दी है।

‘चाँद’ की प्रशंसा सभी श्रेणी के विचारशील व्यक्तियों, राजाओं, महाराजाओं, बड़े-बड़े प्रसिद्ध नेताओं और आला-अफसरों ने की है। सभी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं ने जितनी प्रशंसा ‘चाँद’ की की है, उतनी किसी पत्र की नहीं।

‘चाँद’ ही समस्त भारत में ऐसा प्रभावशाली एवं भाग्यशाली पत्र है, जो निर्धन की कुटिया से लेकर राजा-महाराजों की अट्टालिकाओं तक आपको मिलेगा।

‘चाँद’ तथा इस संस्था ने पत्र-पत्रिकाओं तथा अपने प्रकाशनों द्वारा थोड़ी-बहुत—जो भी सेवा भारतीय समाज और देश की की है, वह सहज ही विस्मरण करने की बात नहीं है।

‘चाँद’ के प्रत्येक अंक में आपको गम्भीर से गम्भीर राजनैतिक एवं सामाजिक लेखमालाओं के अतिरिक्त, सैकड़ों एकरङ्गे, दुरङ्गे और तिरङ्गे चित्र तथा कार्टून मिलेंगे, जो किसी भी पत्र-पत्रिकाओं में आपको नहीं मिल सकते।

‘चाँद’ में प्रकाशित कविताओं के सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है। जिस पत्रिका की उर्दू शायरी का सम्पादन कविवर “विस्मिल” करते हैं और हिन्दी कविताओं का सम्पादन करते हैं कविवर आनन्दीप्रसाद जो श्रीवास्तव और प्रोफेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०, जैसे सुविख्यात कवि, उस पत्रिका की कविताओं से कौन टक्कर ले सकता है ?

‘चाँद’ में प्रकाशित लेखों के सम्बन्ध में पाठकों को स्वयं निर्णय करना चाहिए। हम इस सिलसिले में केवल इतना ही निवेदन करना चाहते हैं, कि सभी सुप्रसिद्ध लेखकों का अभिन्न सहयोग ‘चाँद’ को प्राप्त है। फिर श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, श्री० विजयानन्द (दुबे जी) और हिज़ होलानेस श्री १०८ श्री० जगद्गुरु के चुंआले विनोद आपको किस पत्र-पत्रिका में मिलेंगे ??

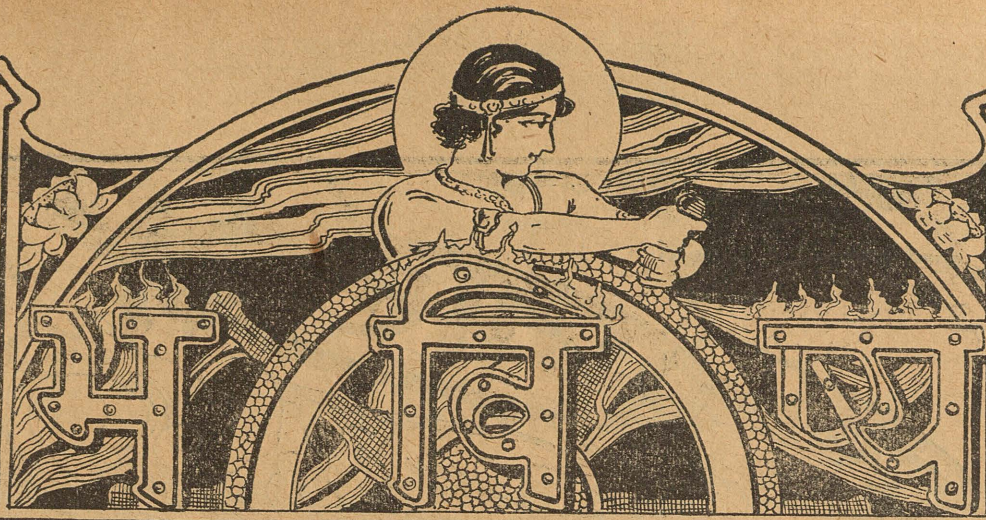
यदि अभी तक आप ‘चाँद’ के ग्राहक नहीं हैं, तो इन्हीं पंक्तियों को हमारा निमन्त्रण समझें और इष्ट-मित्रों सहित ‘चाँद’ के ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा कर हमें और भी उत्साह से सेवा करने का अवसर प्रदान करें।

## विज्ञापनदाता भी भरपूर लाभ उठा सकते हैं

व्यवस्थापक ‘चाँद’ कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद



इस संस्था के प्रत्येक शुभचिन्तक और दूर-दर्शी पाठक-पाठिकाओं से आशा की जाती है कि यथाशक्ति 'भविष्य' तथा 'चाँद' और विद्याविनोद-ग्रन्थमाला का प्रचार कर, वे संस्था को और भी अधिक सेवा करने का अवसर प्रदान करेंगे !!



पाठकों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि इस संस्था के प्रकाशन विभाग द्वारा जो भी पुस्तकें प्रकाशित होती हैं, वे एकमात्र भारतीय परिवारों एवं व्यक्तिगत मङ्गल-कामना को दृष्टि में रख कर प्रकाशित की जाती हैं !!

वर्ष १, खण्ड ३

इलाहाबाद—वृहस्पतिवार ; १४ मई, १९३१

सं० ६, पूर्ण सं० ३३

## बर्मा में विद्रोही अदालत और पुलिस की चौकियाँ जलारहे हैं

### बम द्वारा आदमपुर ज़िला काँग्रेस कमिटी के मन्त्री की मृत्यु !

### चटगाँव भेजे गए एक पार्सल में ३०० कारतूस मिले

### महात्मा गाँधी देवी कस्तूरी बाई सहित शिमला पहुँच गए

( एसोसिएटेड प्रेस द्वारा १४ वीं मई के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के विशेष तार )

—लाहौर का १३वीं मई का समाचार है, कि आदमपुर ( पञ्जाब ) ज़िला काँग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी श्री० चननसिंह की आदमपुर में एक बम-दुर्घटना के कारण मृत्यु हो गई है, और एक काँग्रेस कार्यकर्ता श्री० गुरुदत्तसिंह बुरी तरह घायल हुए हैं ।

पुलिस ने श्री० गुरुदत्तसिंह को गिरफ्तार कर लिया है । होशियारपुर की ज़िला काँग्रेस कमिटी के ऑफिस की तलाशी भी ली गई है ।

—पेशावर का समाचार है कि एक सिक्ख युवक काबुल में गिरफ्तार किया गया है, उसकी तलाशी लेने पर उसके पास कुछ पैसे मिले, जो अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व सम्राट गाज़ी अमानुल्ला खाँ के पत्र में प्रचार करने की दृष्टि से लिखे गए थे ।

—शिमला का १३वीं मई का समाचार है, कि आज दोपहर में महात्मा गाँधी श्रीमती कस्तूरीबाई के साथ यहाँ सकुशल पहुँच गए । एसोसिएटेड प्रेस के प्रतिनिधि के पूछने पर महात्मा जी ने कहा, कि मैं मि० ईमर्सन का पत्र पाकर यहाँ आया हूँ । यहाँ होने वाली फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमिटी की मीटिंग के सम्बन्ध में मुझे कुछ ज्ञात नहीं है । साम्प्रदायिक समझौते के सम्बन्ध में पूछने पर आपने कहा कि अभी मैं बोरसद के मामले में फँसा हुआ हूँ । मैं नहीं कह सकता कि मैं लन्दन जाऊँगा भी या नहीं ।

गाँधी जो यहाँ तीन दिनों तक रहेंगे । उसके बाद आप नैनीताल जायेंगे, क्योंकि संयुक्त प्रान्त के गवर्नर का भी एक निमन्त्रण उन्हें मिला है ।

—रङ्गून का ११वीं मई का समाचार है, कि कल ४५० के लगभग विद्रोहियों ने हेनज़ादा के पुलिस-स्टेशन पर आक्रमण किया । पहरे वाले ने तुरन्त एलार्म देकर सबों को सजग कर दिया । दोनों ओर से कुछ देर तक घनघोर युद्ध होने के बाद कुछ सिपाही घायल हुए । इनमें से एक की अवस्था चिन्ताजनक है । विद्रोहियों की ओर से ४ व्यक्ति मारे गए हैं तथा ५ गिरफ्तार किए गए हैं ।

थाटन की ज़मी अदालत जला डाली गई है । बेसीन में नए उपद्रव उठ खड़े हुए हैं । मायुङ्ग्या में भी उपद्रव उठ खड़े होने की आशङ्का की जाती है । थारावुडी, इन्सीन आदि स्थानों का वातावरण भी

अशान्त बतलाया जाता है । पुलिस की कई चौकियाँ तथा थाने जला डालने के समाचार भी प्रायः नित्य ही आ रहे हैं ।

रङ्गून का १३वीं मई की रात का तार है, कि ११वीं मई को ज़िन्गूगन ( ज़िला थारावाडी ) के समीप फिर सिविल पुलिस और विद्रोहियों में भयङ्कर मुठभेड़ हो गई । थारावाडी पुलिस थाने के अफसर और १५ सिपाहियों से भी विद्रोहियों की मुठभेड़ हुई, परिणाम-स्वरूप पुलिस-ऑफिसर तथा दो सिपाही बुरी तरह घायल हुए और हेड-कॉन्स्टेबल विद्रोहियों द्वारा मार डाला गया । विद्रोही २ बन्दूकें भी ले गए । विद्रोहियों के इताहत व्यक्तियों का अभी तक कोई पता नहीं चल सका है । प्रोम का समाचार है, कि गत सप्ताह विद्रोहियों द्वारा मारे जाने वाले सुपरिण्टेण्डेन्ट पुलिस—मि० ऑस्टिन तथा एक बर्मन दारोगा की फौसी हुई लाशें स्योमा के समीप मिली हैं ।

—कलकत्ते का १३वीं मई की रात का तार है, कि गत सोमवार की रात को मुन्शीगंज ( ढाका ) के अन्तर्गत देवभोग नामक स्थान के एक साहूकार के मकान में पुलिस तथा डाकुओं की भीषण मुठभेड़ हो गई । पुलिस के एक दारोगा के सर में भयङ्कर चोट आई है तथा फनीभूषण नामक एक दूसरे दारोगा भी खून से लत-पथ पाए गए हैं । कहा जाता है, ५ डाकू गिरफ्तार किए गए हैं, लगभग २० डाकुओं के सफलतापूर्वक निकल जाने की खबर है ।

—पेशावर का १०वीं मई का समाचार है, कि लगान न देने के अभियोग में वहाँ ५ खुदाई खिदमतगार गिरफ्तार किए गए हैं । कहा जाता है कि उन्होंने लगान में ५) रुपए तथा गेहूँ देना स्वीकार किया था, किन्तु कमिश्नर ने इसे लेने से इन्कार कर दिया । फलतः वे चरसदा की हिरासत में रक्खे गए हैं । कुछ अन्य खुदाई-खिदमतगारों पर भी वारंट जारी किया गया है ।

कहा जाता है कि लालकुर्ती वालों के कैप्टेन मन-जुल्ला खाँ जेल की सेल में बन्द किए गए हैं, वहाँ उनके भोजन का उचित प्रबन्ध नहीं है ।

—पाठकों को विदित होगा कि जनरल आवारी हाल ही में बहुत आन्दोलन के बाद पागलखाने से रिहा किए गए थे । अब खबर मिली है, कि गत ७वीं मई को

आप फिर गिरफ्तार कर लिए गए । पुलिस उन्हें बलात लॉरी पर बिठा कर ले गई । आपके साथ श्रीमती गङ्गाबाई चौबे और श्री० नवीनचन्द्र भी गिरफ्तार कर लिए गए हैं !

जनरल आवारी का मामला जेल ही में चलाया गया और उन्हें आम्बर्स एक्ट की १६ (ए) तथा ११६ धाराओं के अनुसार डेढ़-डेढ़ वर्ष की ज़ेद की सज़ा दी गई है । सज़ाएँ अलग-अलग भोगनी पड़ेंगी । अन्य अभियुक्तों के मामले का फैसला अभी नहीं हुआ है ।

—चिटगाँव का ११ मई का समाचार है कि एक सन्दिग्ध पार्सल, जो हाज ही में डिगारा लॉस्ट प्रॉपर्टी ऑफिस ( Lost Property Office ) से चिटगाँव भेजा गया था, आसाम-बङ्गाल रेलवे के अधिकारियों ने डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के पास भेज दिया । सब डिविज़नल ऑफिसर के सामने पार्सल खोलने पर उसमें से ३०० कारतूस मिले हैं । कहा जाता है, इसके अतिरिक्त पार्सल में २० छूटे हुए कारतूस भी बरामद हुए हैं । पुलिस जाँच कर रही है ।

—देहली का ११वीं मई का समाचार है कि एक हलवाई की भट्टी में, जब कि वह मिठाइयाँ बना रहा था, एक बड़े जोर का धड़ाका हुआ और कड़ाई उलट गई, जिससे हलवाई पर गर्म धी उलट जाने के कारण वह जल गया । कहा जाता है, कि वह धड़ाका बम फटने का था, जो किसी ने भट्टी में डाल दिया था । पुलिस के जाँच करने पर भट्टी में शीशे के टुकड़े भी मिले हैं, तहक्रीकात जारी है ।

—सहयोगी 'हिन्दोस्तान टाइम्स' के विशेष प्रतिनिधि का कहना है, कि गत रविवार की रात को देहली का सारा स्टेशन खुफिया पुलिस तथा गोरे साजेंगटों से इसलिए घेर लिया गया था, कि पुलिस को पता चला था कि देहली घड्यन्त्र केस के फ़रार अभियुक्त श्री० यशपाल देहली में थे और उस रोज़ वे देहली से बाहर जाने वाले थे, कहा जाता है, पिछले एक सप्ताह से देहली की खुफिया पुलिस बहुत इयादा सतर्क है ; क्योंकि उसे अन्य कई अभियुक्तों के भी देहली में होने का सन्देह है । सारे शहर में पुलिस का अतङ्क बतलाया जाता है ।





—‘हिन्दुस्तान टाइम्स’ के एक सम्वाददाता का कहना है, कि मेरठ षड्यन्त्र-केस की पैरवी में सरकार किस प्रकार बाधाएँ उपस्थित करती है, इसका पता ट्रेड यूनियन काँग्रेस के सेक्रेटरी श्री० देशपाण्डे के एक पत्र से लगा है। कहा जाता है कि जून, १९३० में न्यूयार्क से ५०० डॉलर का एक चेक रजिस्ट्री द्वारा बम्बई की डिफेंस कमिटी के पास भेजा गया था। किन्तु हाल में संयुक्त राज्य अमेरिका के पोस्ट ऑफिस ने उन्हें सूचना दी है, कि उक्त रजिस्टर्ड पत्र भारत-सरकार की आज्ञानुसार रोक लिया गया है।

—कानपुर का ११वीं मई का समाचार है कि स्थानीय जिला काँग्रेस कमिटी के एक उत्साही कार्यकर्ता पं० देवनारायण पाण्डे फिन्कक रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिए गए हैं। काँग्रेस कार्य करते हुए आप दसवीं बार गिरफ्तार किए गए हैं।

—कराची काँग्रेस के बाद ही उसकी कार्यकारिणी समिति ने श्री० के० एफ० नरीमन को उन कैदियों की एक सूची बनाने की आज्ञा दी थी, जो अभी तक जेलों में बन्द हैं और जिन्हें सन्धि की शर्तों के अनुसार छोड़ दिया जाना चाहिए था। मि० नरीमन की जाँच से पता चला है कि १०६५ कैदी—जिन्हें गाँधी-हविन समझौते के अनुसार छोड़ दिया जाना चाहिए था—अभी तक नहीं छोड़े गए हैं। उनका प्रान्त-वार व्योरा इस प्रकार है:—पंजाब ८६; सीमा-प्रान्त ५०; आन्ध्रदेश १०; कर्नाटक २; आसाम २८; सी० पी० (मराठी) ६; सी० पी० (हिन्दी) ८६; महाराष्ट्र १२४; बम्बई सिटी १०; बङ्गाल ६७०; मेरठ-केस के अभियुक्त ३०=१०६५।

—लाहौर से चलती ट्रेन से एक कैदी के निकल भागने की खबर आई है। कहा जाता है कि पुलिस ने कस्तूरीलाल नामक एक व्यक्ति को एक जाली चेक के सम्बन्ध में जम्मु में गिरफ्तार किया था। जब पुलिस उक्त व्यक्ति को ट्रेन से सियालकोट लिए जा रही थी, उसी समय कैदी के डब्बे में बैठे हुए अन्य दो व्यक्तियों ने पुलिस वालों पर फायर करना शुरू किया। इसके बाद वे कैदी के साथ चलती ट्रेन से कूद कर भाग निकले। घायलों में एक को मृत्यु हो गई और दो अस्पताल में पड़े हैं, जिनकी दशा भी चिन्ताजनक बतलाई जाती है।

—शरतनगर की १२वीं मई की एक खबर है, कि शरतनगर और दिङ्गपसार स्टेशनों के बीच रेलवे लाईन की कई फिशप्लेट हटा दी गई थी, जिसके फल-स्वरूप एक पसेन्जर ट्रेन पटरी से नीचे गिर पड़ी। इन्जिन-ड्राइवर के सिवा और किसी को चोट नहीं आई है।

—चटगाँव का ११वीं मई का समाचार है, कि वहाँ भरजगियावाटाली के समीप एक पसेन्जर ट्रेन लाईन-च्युत हो गई। कुछ यात्रियों को चोट आई है, किसी की जान नहीं गई है।

चटगाँव से, एक पोस्ट ऑफिस में भीषण डकैनी की एक खबर आई है। कहा जाता है कि गत ७वीं मई की रात को हथियारबन्द डकैतों ने नोआपारा के सब-

पोस्ट ऑफिस पर छापा मारा और १२०५) रु० नगद तथा बीमा तथा पार्सल आदि वस्तुएँ लेकर चलते बने। इन वस्तुओं के मूल्य का अभी ठीक-ठीक पता नहीं चला है।

—कहा जाता है कि करो स्टेट में बाहर जाने वाले माल पर एक नया कर लगा दिया गया है। यह भी पता चला है कि बाक्री लगान, तक्राबी और ऋणों के वसूलने में रैयत पर बड़ी सफ़्ती की जा रही है। बोरसद की ७वीं मई की एक खबर है, कि राजधानी कम्बे के ३३ गाँवों के किसानों ने इन अत्याचारों के प्रतिवाद-स्वरूप तीन दिनों तक अनशन किया। महात्मा जी के इस सम्बन्ध में समझौते के लिए, कुछ काँग्रेस कार्यकर्ताओं के वहाँ भेजने पर, अधिकारियों ने गरीब किसानों के साथ रियायत करने का वचन दिया है। एक्सपोर्ट ड्यूटी के सम्बन्ध में यह कहा गया है, कि वह परीचार्ज केवल दो मास के लिए जारी की गई है। दो मास के बाद उस पर विचार किया जायगा।

—रङ्गून का ११वीं मई का समाचार है, कि स्थापन की स्पेशल ट्रिब्यूनल ने, जिसके हाथ में थारावड़ी के विद्रोहियों का मामला है, १५ व्यक्तियों को फाँसी तथा २६ व्यक्तियों को कालेपानी की सज़ा दी है। २४ व्यक्ति छोड़ दिए गए हैं।

—हाल के समाचारों से पता चलता है कि कानपूर में अभी तक पूर्ण रूप से शान्ति स्थापित नहीं हो सकी है। अकेले दुकेले राह चलते लोगों पर आक्रमण अभी जारी है। पुलिस का कोई वश नहीं चल रहा है। कहा जाता है कि गत ११वीं मई को कॉटन मिल्स के समीप तीन गाड़ीवान बुरी तरह पीटे गए। १०वीं मई को एक मनुष्य छूरे के साथ गिरफ्तार किया गया है। एक व्यक्ति तालुक मुहाल में घायल किया गया है। रात के समय मकानों पर पत्थर फेंके जाते हैं। जनता में घबड़ाहट फैली हुई है।

—पाठकों को विदित होगा कि चाँदपुर के इन्स्पेक्टर की हत्या के सम्बन्ध में श्री० रामकृष्ण विस्वास को स्पेशल ट्रिब्यूनल ने प्राणदण्ड की आज्ञा सुनाई थी; और स्पेशल ट्रिब्यूनल के इस फैसले के बाद श्री० विस्वास की माता ने बङ्गाल के गवर्नर से अपने पुत्र के लिए दया-याचना की थी। कलकत्ते की ११वीं मई की खबर है कि बङ्गाल गवर्नर ने उक्त प्रार्थना अस्वीकृत कर दी है। अभियुक्त के वकील ने वायसराय के पास तार भी भेजा था कि अभियुक्तों की फाँसी स्थगित कर दी जाय, जिसमें प्रिवी-कौन्सिल के सामने मामला उपस्थित किया जा सके। इसके लिए लन्दन, एटर्नी के पास कागज़-पत्र भेजा जा रहा है। फाँसी २६ मई तक स्थगित कर दी गई है।

—लन्दन के समाचारों से विदित होता है, कि लङ्काशायर वाले भारतीय मुसलमान व्यापारियों ने साथ एक कम्पनी खड़ी करने का विचार कर रहे हैं। वे अन्य मुसलमान व्यापारियों को भी सहायता देकर ब्रिटिश माल को खपत कराना चाहते हैं।

—लाहौर का ८वीं मई का समाचार है, कि आज पंजाब कौन्सिल में मि० सेवकराम ने इस बात की आपत्ति की, कि सिविल सेक्रेट्रियट में हिन्दुस्तानियों को बिना तलाशी लिए नहीं जाने दिया जाता, किन्तु एङ्गलो इण्डियन और यूरोपियन की कोई तलाशी नहीं ली जाती है।

—बम्बई का समाचार है कि लेमिङ्टन रोड शूटिंग केस के सारे अभियुक्त छोड़ दिए गए हैं। ये अभियुक्त अक्टूबर, १९३० के प्रथम सप्ताह में गिरफ्तार किए गए थे। अदालत की कार्यवाही के समय, पुलिस की ओर से प्रमाण इकट्ठा करने के लिए मुहलत पर मुहलत माँगी गई थी। २३ दिनों तक लगातार मामला चलने पर भी पुलिस एक व्यक्ति तक को किसी अभियोग में दोषी नहीं सिद्ध कर सकी। प्रधान जूरी ने ५ बार इढ़तापूर्वक कहा कि अभियुक्त निर्दोष हैं।

—खबर है कि कानपूर के दङ्गे की जाँच करने वाले सरकारी कमीशन ने वहाँ के प्रमुख काँग्रेस कार्यकर्ता श्री० जोग को कमीशन के सामने अपनी गवाही देने के लिए आमन्त्रित किया था; किन्तु श्री० जोग ने यह आमन्त्रण इसलिए अस्वीकृत कर दिया, कि सरकारी अफसरों ने काँग्रेस के सामने गवाही देने से इन्कार कर दिया था।

—बम्बई का ७वीं मई का समाचार है, कि लसल-गाँव के समीप बॉम्बे पेशावर एक्सप्रेस लाइन-च्युत हो गई। जाँच करने पर पता लगा कि लाइन के फिशप्लेट हटा लिए गए थे। किसी को चोट नहीं आई है।

—रङ्गून का ७वीं मई का एक समाचार है, पश्चिमी रङ्गून में एक मनुष्य दिन दहाड़े लूट लिया गया। कहा जाता है, कि एक व्यापारी का दरवान १५,०००) रुपए लेकर जा रहा था, रास्ते में एक मोटर उस आदमी के समीप आ खड़ी हुई और कुछ आदमियों ने उतर कर उस मनुष्य से रुपए छीन लिए। अभी तक कोई गिरफ्तार नहीं किया गया है।

—अमृतसर का समाचार है कि तनतारन में एक साधारण सभा को पुलिस ने अपने बाहुबल से भङ्ग कर दिया।

कहा जाता है कि सिटी काँग्रेस कमिटी के सेक्रेटरी डॉ० आत्मासिंह की गिरफ्तारी पर ‘इन्किजाब बाग’ में एक सभा की गई। जिस समय सभा में राष्ट्रीय गान गाया जा रहा था, उसी समय पुलिस का एक दल आ उपस्थित हुआ और उसने उन लोगों से सभास्थल छोड़ देने के लिए कहा। लोगों के ऐसा करने से इन्कार करने पर उन लोगों ने लाठी-प्रयोग द्वारा सभा भङ्ग की।

कहा जाता है कि कुछ पुलिस वाले रात भर तनतारन की पड़कों पर चक्कर लगाते रहे और सड़क पर जो कोई मिलता उसे वे गाली देते और पाटते थे।

—मछलीपट्टम का समाचार है कि वहाँ श्रीकाकुलम में ऋण्डा-समारोह के अवसर पुलिस ने लाठी-चार्ज की, जिसके फल-स्वरूप ३ व्यक्ति घायल हुए हैं।



# कानपुर में पुलिस का दिवाला

## जाँच कमिटी के सामने कलक्टर और पुलिस-कप्तान को गवाहों

### कोतवाल की "कार्यशैलिका" की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई

### जनता की आँखों में धूल भोंकने का निन्दनीय प्रयत्न :: अफसरों के ऊटपटाङ्ग उत्तर

कानपुर के दूजे की सरकारी जाँच आज ७ मई को समाप्त हुई। कुल मिला कर लगभग एक सौ गवाहियाँ हुईं। आज की गवाहियों में पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० ई० एम० रॉजर्स डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० जे० एफ० सेल तथा कोतवाल खाँ बहादुर गुलामहुसैन ने पुलिस तथा अन्य स्थानीय अधिकारियों पर अब तक के गवाहों द्वारा लगाए गए अभियोगों की सफाई देने का प्रयत्न किया।

पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० ई० एम० रॉजर्स ने कहा कि पुलिस पर मुख्य पाँच दोष लगाए गए हैं। (१) दूजे के अवसर पर पुलिस ने गिरफ्तारियाँ नहीं कीं, (२) लाठी नहीं चलाई, (३) गोली नहीं चलाई, (४) फ़ौज तुरन्त ही नहीं बुलाई गई, और (५) डराने-धमकाने का प्रदर्शन नहीं किया गया।

गिरफ्तारियों के सम्बन्ध में आपने कहा कि पुलिस की कमी के कारण उपद्रवियों को गिरफ्तार करना कठिन था। लाठी चलाने के सम्बन्ध में आपने कहा कि कई मौकों पर मेरे सामने पुलिस ने लाठी चलाई थी। गोली चलाने की कोई आवश्यकता न थी, क्योंकि भीड़ बहुत अधिक एकत्र नहीं होती थी। मुश्किल से दो-दो, तीन-तीन सौ आदमी दोनों तरफ़ दिखलाई पड़ते थे। पुलिस द्वारा हटाए जाने पर भी वे मौक़ा पाते ही फिर से एकत्र हो जाते थे। उस वक्त यह मालूम होता था कि गोली चलाने से तुरन्त ही सारे शहर में लूट, हत्या और अग्निकाण्ड शुरू हो जायगा। क़ानून के अनुसार गैर-क़ानूनी मजमें को तितर-बितर करने में कम से कम बल का प्रयोग करना चाहिए। फ़ौज बुलाने के सम्बन्ध में आपने कहा कि पौने पाँच बजे शाम तक जो ब्रबों मेरे पास पहुँची थीं, उनसे यह नहीं मालूम होता था कि पुलिस परिस्थिति को क़ाबू में न ला सकेगी। पुलिस की कमी के कारण चारों तरफ़ प्रदर्शन करना मुश्किल था। इसके बाद आपने फ़ौजी अफसरों द्वारा लगाए गए अभियोगों का खण्डन किया।

आपने कहा कि मेरे या मेरे किसी अफसर के सामने कहीं भी कोई अग्निकाण्ड, हत्या या लूट नहीं हुई। लोगों का यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि पुलिस के अधिकारियों द्वारा कोई आदेश ही नहीं मिला था। पुलिस ने तेरह दफ़ा गोलीयाँ चलाई, जिसमें दो मरे थे और बहुत से घायल हुए थे। लोगों ने पुलिस पर शहर के बदमाशों को गिरफ्तार न करने का भी दोषारोपण किया है। उन्हें नहीं मालूम कि हम लोग २४ ता० की रात को बदमाशों के घरों पर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए गए, परन्तु कोई मिला नहीं। वे इतने बेवक़ूफ़ नहीं हैं, कि दूजे के समय अपने घरों पर बैठे रहते। घरों पर मिल जाते तो भी उनको गिरफ्तार करना कठिन था। हम क़ानून की किस दफ़ा से उन्हें पकड़ते, उन पर मामला चलाते और अदालत में हिरासत में रखने की मुहलत माँगते ?

इसके बाद आपने ख़ान बहादुर सय्यद गुलाम हुसैन (कानपुर के कोतवाल) के कार्यों की प्रशंसा की। आपने कहा कि इस दूजे में सय्यद गुलाम हुसैन

से बढ़ कर किसी ने कार्य नहीं किया। एक सप्ताह तक उनसे कम शायद ही कोई सोया हो।

आपने जाँच कमीशन के प्रेज़िडेंट मि० कीन के एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि पुलिस हत्याओं का पता बराबर लेती रहती थी।

प्रेज़िडेंट—गवाहों का यह कथन मेरी मिसिल में दर्ज है, कि सन् १९२७ वाले दूजे में ज़िला मैजिस्ट्रेट तथा मि० एण्डरसन ने दूजे के समय ही गिरफ्तारियाँ की थीं। इस दूजे में ऐसा क्यों नहीं किया गया ?

मि० रॉजर्स—तब और अब की परिस्थिति में अन्तर है। हम लोगों को देखते ही उपद्रवी भग जाते थे !

नवाबज़ादा—तब और अब के दूजे में अन्तर इतना ही है कि इस बार का दूजा पहले की अपेक्षा अधिक भयानक हुआ। लेकिन मेरी समझ से भीड़ों के एकत्र होने और दूजा मचाने में कोई विशेषता न थी।

इस प्रश्न के उत्तर में, कि २४ ता० को मेस्टन रोड पर जब दोनों सम्प्रदायों के दल आमने-सामने खड़े थे तब गोली क्यों नहीं चलाई गई, मि० रॉजर्स ने कहा कि वे दोनों दल एक-दूसरे से कुछ दूर फ़ासले पर सिफ़ खड़े थे, इसलिए मैंने गोली चलाना उचित नहीं समझा।

नवाबज़ादा—लोगों का कहना है कि मि० सिद्दीक के घर के पास ही एक सार्वजनिक पुस्तकालय है, पुलिस बजाय सिद्दीक की जगह के, उस सार्वजनिक स्थान को काम में ला सकती थी।

उत्तर—मुझे बतलाया गया था कि उस स्थान पर सब से निकटस्थ टेलीफ़ोन मि० सिद्दीक का है। प्रजा की रक्षा का इससे उत्तम उपाय नहीं हो सकता था।

नवाबज़ादा—आपका कहना है कि पुलिस अब तक शान्ति क़ायम करने के कड़े प्रयत्नों के लिए बदनाम रही है। क्या आप ऐसा कोई उदाहरण बतला सकते हैं, जिसमें लोगों ने कभी साम्प्रदायिक दूजों के दवाने के लिए पुलिस द्वारा किए गए दमन की निन्दा की हो ?

मि० रॉजर्स—मैं तुरन्त कोई उदाहरण नहीं बतला सकता।

नवाबज़ादा—क्या आपका ज़्याला है कि यहाँ के अधिकारियों ने जो प्रबन्ध किया था, उससे अच्छा प्रबन्ध नहीं किया जा सकता था ?

मि० रॉजर्स—मेरी पुलिस का प्रबन्ध जितना उत्तम हो सकता है, उतना था।

प्रश्न—क्या आप समझते हैं, कि आपकी पुलिस ने अपना कर्तव्य पूर्णतया पालन किया है ?

उत्तर—यह प्रश्न ही दूसरा है। मुख्य प्रश्न आपका यह था, कि क्या यहाँ की पुलिस का प्रबन्ध उत्तम था ?

प्रश्न—मेरे प्रश्न का यह भी मतलब है कि क्या यहाँ की पुलिस का प्रबन्ध दूजे के अवसर पर भी अच्छा था ?

उत्तर—जो कुछ मैंने देखा उसके अनुसार मैं कह सकता हूँ, कि प्रबन्ध अच्छा था।

प्रश्न—मुझे आशा है कि अब आपको इस दूजे के

सम्बन्ध की सम्पूर्ण वस्तुस्थिति मालूम हो गई है। शायद आपको यह भी मालूम हो चुका होगा, कि इस दूजे से लोगों को कितनी हानि पहुँची है।

उत्तर—मेरा तो यह निश्चित ज़्याला है कि पुलिस ने अपनी तरफ़ से कोई बात उठा नहीं रखी। प्रबन्ध जितना उत्तम हो सकता था, उतना अच्छा था।

प्रश्न—तो क्या साम्प्रदायिक उपद्रव के अवसरों पर किसी समझदार नागरिक को अपने जान-माल की हिफ़ाज़त की आशा, जितनी इस दूजे में हुई है, उससे अधिक के लिए करना, बुद्धिमत्तापूर्ण होगा ?

उत्तर—नहीं।

प्रश्न—क्या कानपुर में ता० २४ मार्च को ११७ सिपाहियों और अफसरों, ३२ अफसरों और ८२२ ब्रिटिश सैनिकों तथा २१ अफसरों और ३४१ आर्किज़लरी फ़ोर्स के सैनिकों के होते हुए भी साधारण नागरिक इससे अधिक जान-माल के हिफ़ाज़त की आशा नहीं कर सकता ?

उत्तर—मैंने जो उत्तर दिया है वह केवल पुलिस-शक्ति के आधार पर दिया है। जितने आदमी हमारे पास थे, उसके अनुसार हमने उनकी रक्षा की।

प्रश्न—मालूम होता है, आपके पास पुलिस के अतिरिक्त जो अन्य शक्तियाँ मौजूद हैं, उनका विचार नहीं करते ?

उत्तर—नहीं।

प्रश्न—लेकिन स्थानीय अधिकारीगण वक्त पड़ने पर पुलिस के अतिरिक्त शक्तियों का भी तो उपयोग कर सकते हैं।

उत्तर—कर सकते हैं, परन्तु उस पर विचार करना हमारा काम नहीं है।

प्रश्न—किसी गवाह ने कहा है कि फ़ौज से केवल एक कम्पनी माँगी गई थी।

उत्तर—परिस्थिति क़ाबू के बाहर हो जाने पर मैंने कलक्टर से केवल सैनिकों के लिए कहा था।

प्रश्न—क्या आपने उन्हीं सैनिकों के लिए कहा था जो फूलबाग में थे ?

उत्तर—मैंने किसी सैनिक-दल विशेष के लिए नहीं कहा था।

प्रश्न—क्या आपने कलक्टर से आवश्यक सैनिकों की संख्या नहीं बतलाई थी ?

उत्तर—नहीं।

प्रश्न—सैनिक अधिकारी यह कैसे जानते, कि आपको कितने सैनिकों की आवश्यकता है ?

उत्तर—कितनी संख्या में सैनिक कहीं भेजे जा सकते हैं, इसका विचार करना सैनिक अधिकारियों का काम है। इसके लिए क़ानून बना हुआ है। उन्हें केवल परिस्थिति बतला दी जाती है।

प्रश्न—लेकिन क्या आप उन्हें अपनी सलाह नहीं दे सकते थे कि आपको कितने सैनिकों की आवश्यकता होगी।

उत्तर—हम लोग इस मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकते। फ़ौजी कमाण्डर ही इन बातों का निर्णायक है।



प्रश्न—क्या सेना-विभाग को नगर की परिस्थिति का ज्ञान था? क्या उसकी राय से उतने सैनिक, जितने उसने भेजे थे, यथेष्ट थे?

उत्तर—मैं नहीं कह सकता। मैंने कलक्टर को यह सूचना दे दी थी कि परिस्थिति नाज़ुक है और मैं उसे क़ाबू करने में असमर्थ हूँ। मैंने सेना बुलाने के लिए भी उनसे कह दिया था।

प्रश्न—लेकिन आपकी सूचना तो बहुत अस्पष्ट थी।

उत्तर—जब मैंने कह दिया कि परिस्थिति ख़राब है, मेरी पुलिस उसका मुक़ाबिला नहीं कर सकती, तो इसका अस्पष्ट अर्थ यही था कि जितने अधिक सैनिक भेजे जा सकें उतने भेज दिए जायँ। यह मेरी निजी सम्मति है, मैं सैनिक-नीति में कोई दख़ल नहीं देना चाहता।

प्रश्न—२५ तारीख की सन्ध्या को आपके पास २७० आदमी बाहर से और आ गए थे, परन्तु फिर भी आप परिस्थिति में कोई सुधार नहीं कर सके?

उत्तर—हाँ, नहीं कर सका। उस समय तक परिस्थिति इतनी भीषण हो चुकी थी, कि अतिरिक्त-पुलिस-शक्ति के पहुँच जाने पर भी वह सम्पूर्ण स्थानों के लिए यथेष्ट प्रमाणित नहीं हुई।

मि० रॉजर्स ने कहा कि २५ सशस्त्र कॉन्स्टेबलों का और प्रबन्ध हो जाने से दज़ा क़ाबू में किया जा सकता था।

प्रेज़िडेण्ट—क्या इस दज़े में मिल-मज़दूरों ने कोई विशेष उपद्रव किया है?

मि० रॉजर्स—कोई विशेष उपद्रव नहीं किया।

प्रश्न—क्या आपको यह ख़बर है, कि उपद्रवियों में मिल-मज़दूर विशेष रूप से न सही, तो साधारण रीति से अवश्य शामिल थे?

उत्तर—मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

**डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट मि० सेल का बयान**

आपने अपने लिखित बयान में अधिकारियों पर लगाए गए दोषारोपणों का खण्डन किया।

तवाबज़ादा लियाक़तअली खाँ ने मि० सेल से पूछा कि आपने अपने लिखित बयान में जो यह कहा है कि जाँच-कमीशन के सामने दूसरे लोगों की गवाहियों की तरह हमें क़ानूनी सहायता की सहायता नहीं मिल सकी, इसका क्या मतलब है?

मि० सेल—कमीशन के सामने गवाही देने वाली पार्टियों में से कम से कम एक पार्टी के सहायक बहुत से ख़कील थे। हम लोगों के पास ऐसी कोई सहायता न थी, हम लोगों ने अपने बयानों को अपने आप तैयार किया है।

प्रश्न—क्या आपने २४ ता० को फ़ौज बुलाने के समय फ़ौजी अफ़सर को यह नहीं बतलाया, कि आपको कितनी सेना की आवश्यकता थी।

उत्तर—जहाँ तक मुझे याद है, मैंने शायद फूलबाग़ में जो सैनिक कम्पनी खड़ी थी, उसी को मेस्टन रोड भेजने के लिए कहा था।

प्रश्न—क्या आपने उसे यथेष्ट समझा?

उत्तर—हाँ।

प्रश्न—बाद में शाम के वक्त आपने और अधिक सैनिकों को भेजने के लिए कहा था। क्या उस समय आप और सैनिक अधिकारियों के बीच इस सम्बन्ध में कोई निर्णय हुआ था?

उ०—मुझे ठीक-ठीक याद नहीं है। मुझे इतना ही याद है कि मि० रॉजर्स ने मुझसे अधिक सैनिकों की आवश्यकता बतलाई थी। मैंने मि० रॉजर्स की बात फ़ौज के कर्नल से कह दी थी। कर्नल ने कहा—‘मैं और भी सैनिक कम्पनियाँ भेज सकता हूँ।’ इससे अधिक हम लोगों ने कोई बातचीत नहीं की।

प्र०—क्या आपको फ़ौज बुलाने के समय इस बात का ज्ञान था, कि कितनी सैनिक शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी?

उ०—मि० रॉजर्स ने जब देखा कि शहर के बाहरी मुहल्लों से कुछ लाशों का आना प्रारम्भ हो गया है, तो उन्होंने मेरे पास ख़बर भेजी, कि परिस्थिति भयानक होती जा रही है। मुझे याद है कि फ़ौज के कर्नल ने मुझसे कहा था, कि एक कम्पनी छावनी की बैरकों में रिज़र्व रहेगी। उन्होंने यह मुझसे कब कहा था, यह मुझे याद नहीं है।

प्र०—आपको यह कब मालूम हुआ, कि परिस्थिति सचमुच भयानक हो गई है?

उ०—मुझे कई मौक़ों पर मालूम हुआ। पहले मुझे ५ बजे शाम को, जब कुछ सेना बुलाई गई थी, तब मालूम हुआ। इसके बाद मुझे ६ बजे रात को मालूम हुआ। परन्तु इसके बाद फिर दूसरे दिन ६ बजे तक परिस्थिति सुधरी रही।

प्र०—मतलब यह है, कि २४ ता० को ६ बजे रात से लेकर २५ ता० को ६ बजे सुबह तक आपका ख़्याल रहा, कि आपके पास दज़े को शान्त करने के लिए यथेष्ट शक्ति मौजूद थी।

उ०—हाँ।

प्र०—यह आपको कब मालूम हुआ कि दज़ा शान्त करने के लिए आपके पास यथेष्ट-शक्ति नहीं है?

उ०—मुझे यह २५ ता० की सुबह को किसी समय मालूम हुआ था।

प्र०—क्या आपको यह याद है, कि आपने चीफ़ सेक्रेटरी को ख़बर दी थी, कि ख़ावनऊ से कुछ फ़ौज भेज दी जाय?

उ०—मुझे याद नहीं, कि मैंने यह कहा था या नहीं।

प्र०—इस प्रश्न के द्वारा मैं मालूम करना चाहता हूँ, कि चीफ़-सेक्रेटरी को यह बात मालूम थी या नहीं, कि आपके पास दज़ा शान्त करने के लिए यथेष्ट-शक्ति नहीं है? मैं इस प्रश्न के द्वारा यह भी जानना चाहता हूँ, कि आपने चीफ़-सेक्रेटरी के पास परिस्थिति की भयङ्करता और अधिक शक्ति की आवश्यकता की सूचना भेजी या नहीं?

उ०—मुझे खेद है कि यह बात मैं स्वयं आपको नहीं बतला सकता। इन बातों को याद रखना बहुत मुश्किल है।

## ‘परिस्थिति में सुधार’

प्रश्न—शहर की हालत बराबर जानते रहने का आपके पास कौन सा ज़रिया था?

उत्तर—सुबह-शाम मैं स्वयं चक्कर लगाता था। इसके अतिरिक्त मि० बैरन तथा पुलिस-अफ़सरों से भी टेलीफ़ोन द्वारा ख़बरें मिलती थीं। कुछ नागरिक भी मेरे पास आया करते थे।

प्र०—आपने २६ ता० को चीफ़ सेक्रेटरी से टेलीफ़ोन द्वारा कहा था कि ‘परिस्थिति में काफ़ी सुधार’ हो गया है, जब कि गवाहों के कथनानुसार २६ ता० को सुबह चारों ओर हत्याएँ हो रही थीं और मकान जलाए जा रहे थे। ऐसी परिस्थिति तो काफ़ी सुधरी हुई नहीं कही जा सकती?

उ०—टेलीफ़ोन बिगड़ गया था। चीफ़ सेक्रेटरी के पास तारों से ख़बरें भेजनी पड़ीं।

प्र०—गवाहों के कथनानुसार २४ ता० को ६ बजे रात से लेकर २५ ता० को दोपहर तक परिस्थिति बड़ी भयानक रही। हम लोगों का भी ऐसा ख़्याल है, कि २५ तथा २६ तारीख़ें सब से अधिक भयानक थीं।

प्र०—आपने चीफ़ सेक्रेटरी के पास जो २४ ता० को ख़बर भेजी थी, उसमें अधिक पुलिस की आवश्यकता नहीं बतलाई थी।

इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं दिया गया।

प्र०—जब आप शेर बाबू के यहाँ थे, तब मुसलमानों ने क्या आप से यह शिकायत नहीं की थी कि मस्जिद पर हमला हो रहा है?

उ०—कुछ मुसलमानों और कुछ हिन्दुओं ने अपनी-अपनी शिकायतें पेश की थीं। मैंने उनसे कहा कि उन मस्जिदों और मन्दिरों को कल देख लूँगा।

प्र०—२४ तारीख को जितना समय आपने शहर में व्यतीत किया था, क्या उसका कोई नोट भी आपने लिखा था?

उ०—मैं तीन बजे शहर गया था और चार बजे वापस आया।

प्र०—और रात में?

उ०—६ बजे के बाद।

प्र०—आप २५ तारीख को सुबह शहर गए थे। क्या आप दिन में भी गए थे?

उ०—शायद शाम तक नहीं गया।

प्र०—आपके चार बजे मेस्टन रोड से जाने के वक्त क्या किसी प्रकार का उपद्रव हो रहा था?

उ०—शायद कुछ ईंटे वगैरह चल रही हों।

प्र०—क्या आप मस्जिद की हालत का कुछ पता लेने नहीं जा सकते थे?

उ०—मैंने समझा कोई विशेष बात न होगी। मैंने यह नहीं सुना कि लूट हो रही थी।

प्र०—मेरा ख़्याल है, कि आपने अपने बयान में कहा था कि आप मेस्टन रोड से इसलिए चले गए थे कि आपको १४४ दफ़ा का हुक्म लिखना था।

उ०—हाँ। वहाँ कागज़-क़लम का अभाव था। इसके अतिरिक्त मुझे सन्, १९२७ के समय जारी किए गए हुक्म को भी देखना था।

प्र०—क्या दज़ा शान्त करने के लिए आपने ग़ैर-सरकारी आदमियों की मदद नहीं ली?

उ०—परिस्थिति की भयानकता के कारण मुझे उनसे मदद माँगने का ख़्याल ही नहीं आया, हम लोग स्वयं ही बहुत व्यस्त थे।

प्र०—अधिकारियों पर जो दोष लगाए गए हैं, वे आपको मालूम हो चुके हैं और जनता को जान-माल का जो नुक़सान पहुँचा है, वह भी आपको मालूम हो गया! आप यह भी जानते ही हैं कि आपके पास कितनी शक्ति थी और कितनी का उपयोग आप कर सकते थे, इन बातों को ध्यान में रख कर क्या आप बतला सकते हैं कि जो कुछ आपने किया, उससे अच्छा नहीं किया जा सकता था? या इससे अच्छे की आशा की जा सकती है?

उ०—हम लोगों का मुख्य कार्य सड़कों पर क़ब्ज़ा बनाए रखना और भीड़ों को तितर-बितर कर देना था।

प्र०—वास्तव में आपके सामने कानपुर में सेना या पुलिस-शक्ति की कमी का प्रश्न नहीं था। आप परिस्थिति की भयानकता से अनभिज्ञ थे।

उ०—दोनों ही बातें थीं। परन्तु यदि पास में यथेष्ट शक्ति होती, तो २५ तारीख को मुहल्लों तथा शहर के बाहरी हिस्सों में हमने शान्ति क़ायम कर दी होती।

प्र०—परन्तु आप शान्त क़ायम कैसे कर देते, जब आपको यही नहीं मालूम था कि कहाँ क्या हो रहा है?

उ०—निसन्देह ख़बरों के मिलने में कुछ कमी रही।

प्र०—जितने सैनिक थे उनसे एक हज़ार अधिक सैनिकों के होने पर भी, मैं समझता हूँ, कि आप परिस्थिति को सुधार नहीं सकते थे, यदि आपके पास पहुँचने वाली ख़बरों और परिस्थिति के ज्ञान का यही हाल था।

उ०—मैं समझता हूँ, तज़ गलियों वाले मुहल्ले में शान्ति क़ायम करने की कठिनाइयों का भी कुछ ध्यान रखना चाहिए।



# कलावती देवी की अस्मत् पर हाथ?

**सो० आई० डो० के डो० एस० पी० नन्दकिशोर पर भोषण दोषारोपण !!**

**सरकारी-गवाह कैलाशपति मुखबिर कैसे बनाया गया ?**

**देहली षड्यन्त्र-केस के सामने गवाहों के सनसनीपूर्ण बयान**

**अदालत में अन्तिम मुग़ल-सम्राट "बहादुरशाह ज़िन्दावाद" के गगनमेदी नारे**

**महारानी लक्ष्मीबाई, ताँतिया टोपी और सन् ५७ के विद्रोहकारियों की याद !**

**देशी रियासतों में खोज :: प्रतिवादी वकीलों के पीछे भी खुफिया पुलिस लगा दी गई !!**

तारोख ३री का समाचार है, कि अपनी जिरह में श्री० वात्सायन ने गवाह से पूछा, कि फ़ुट-कॉन्स्टेबिल से उसकी तरफ़ती क्योंकर हुई ? गवाह ने इसका कारण बतलाने से इन्कार किया। अदालत के इसी प्रश्न के पूछने पर गवाह ने उत्तर दिया—मैंने एक बम-केस का पता लगाया था।

प्रश्न—कौन बम-केस ?

उत्तर—मैंने सरकारी गवाह कैलाशपति को गिरफ़्तार किया था।

प्रश्न—कैलाशपति मनुष्य है या बम-केस है ? (हास्य-ध्वनि)

अभियुक्त विद्याभूषण के पूछने पर गवाह ने कहा, कि उक्त दोनों फ़रार-अभियुक्तों के अतिरिक्त, काशीनाथ, भवानीसिंह और भवानीसहाय की भी खोज मैं करता था। ये सभी अभी तक फ़रार हैं। वात्सायन और निगम की खोज मैंने नहीं की है।

गवाह ने आगे कहा, कि मैं लेखराम को अच्छी तरह जानता हूँ। हम दोनों एक ही स्थान के रहने वाले हैं। मि० बैनर्जी के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा कि मैं और लेखराम रोहतक में ४ वर्षों तक साथ थे।

**इन्स्पेक्टर की गवाही**

युक्तप्रान्तीय पुलिस के एक इन्स्पेक्टर त्रिलोकसिंह ने कहा, कि मैंने ब्रिटिश गदवाल के अनेक स्थानों में भवानीसिंह की खोज की है। वहाँ उसके कुछ सम्बन्धी रहते हैं। अभियुक्त का पिता रिटायर्ड सरकारी कर्मचारी है। सरकार की ओर से उसे पेन्शन भी मिलती है। बहुत खोज करने पर भी अभियुक्त का कहीं पता नहीं लगा और उसके शीघ्र गिरफ़्तार होने की कोई आशा भी नहीं है।

मि० आसफ़अली के जिरह करने पर गवाह ने कहा, कि अभियुक्त की गिरफ़्तारी के लिए मुझे कोई वारण्ट नहीं दिया गया है, किन्तु मुझे कहा गया था, कि गोडोडिया स्टोर्स डकैती केस से सम्बन्ध में अभियुक्त के नाम वारण्ट है। मैं अभियुक्त के पिता केप्टेन नाथासिंह को बचपन से ही जानता हूँ। मैं उसी गाँव का रहने वाला हूँ, और गाँव के रिश्ते से अभियुक्त मेरी स्त्री का भाई होता है। मैंने अभियुक्त भवानीसिंह को करीब १५ वर्षों से नहीं देखा है, और उसका जो विवरण मैंने अदालत के सामने किया है, वह मुझे लिख कर दिया गया था। मेरे पास अभियुक्त की फ़ोटो नहीं है। मैंने श्रीनगर और अयूरी नामक गाँवों में तथा लेन्स-

डाउन में अभियुक्त के सम्बन्धियों से उसके बारे में पूछ-ताछ की थी। १७ दिसम्बर के बाद से भवानीसिंह को खोजने का कोई विशेष प्रयत्न मैंने नहीं किया।

मि० आसफ़अली—जब ५ महीने पहले तुमने उसकी खोज की थी, तो इस समय तुम कैसे कह सकते हो, कि उसका पता नहीं लग रहा है ?

गवाह—उन पहाड़ी स्थानों में जहाँ अभियुक्त के आने-जाने की सम्भावना है, मेरे अनेक सम्बन्धी रहते हैं। यदि वह लौट कर उन स्थानों में आया होता, तो मेरे सम्बन्धी मुझे अवश्य सूचना दे देते। गवाह ने आगे कहा कि मुझे नहीं मालूम कि अभियुक्त जीवित है या नहीं। मि० बोस के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा कि अभियुक्त की आयु इस समय २२ वर्ष की होगी।

**देशी रियासतों में अभियुक्तों की खोज**

दिल्ली-पुलिस के जैगम हुसेन ने अपने बयान में कहा, कि मैंने भवानीसहाय की खोज रिवाड़ी, अजमेर, अलवर स्टेट, जयपुर और इन्दौर आदि स्थानों में की है। मेरा विचार है कि अभियुक्त के शीघ्र ही गिरफ़्तार होने की कोई आशा नहीं है।

मि० आसफ़अली के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा, कि मैं अभियुक्त को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता, और उसकी गिरफ़्तारी के लिए मेरे पास कोई वारण्ट नहीं है। मुझे ज़बानी कहा गया है कि भवानीसहाय दिल्ली बम केस नं० १३८ का ३६७वीं धारा के अनुसार अभियुक्त है। मुझे उसकी कोई फ़ोटो नहीं दी गई है। उसको पहचानने वाला कोई आदमी भी मेरे पास नहीं है, किन्तु उसका विवरण लिख कर मुझे दिया गया है।

गवाह का बयान समाप्त होने के पहले ही अदालत दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। अभियुक्तों के 'देशद्रोहियों का नाश हो' की आवाज़ से सारी अदालत गूँज उठी।

\* \* \*

नई दिल्ली का ४थी मई का समाचार है कि आज १० बज कर २० मिनट पर अभियुक्तों ने 'इन्क़िलाब ज़िन्दावाद' के नारे के साथ अदालत में प्रवेश किया। फिर वे ५ मिनट तक राष्ट्रीय गान गाते रहे। १० बज कर २० मिनट से अदालत की कार्यवाही शुरू हुई। श्री० बोस के जिरह करने पर गवाह जैगम हुसेन ने कहा कि मैंने अपने भेदियों के द्वारा रिवाड़ी में भवानीसहाय के सम्बन्ध में पूछताछ कराई थी। मैंने स्वयं पूछताछ नहीं की। मैं अपने भेदियों का नाम बताने के लिए

तैयार नहीं हूँ। अलवर में वहाँ की पुलिस के ज़रिए मुझे गुप्तचर मिले थे। जयपुर में मैंने स्वयं दूकानों और घरों में पूछताछ की थी। मैं वहाँ के किसी दूकानदार या मकान-मालिक का नाम नहीं बता सकता। मैं इन्दौर भी गया था, किन्तु यह मुझे याद नहीं, कि कितने दिनों तक वहाँ ठहरा था। मैंने धर्मशालों में, तथा स्कूल-कॉलेजों में उसकी खोज की। गवाह ने उन व्यक्तियों के नाम बतलाने से इन्कार किया, जिनसे उसने अभियुक्त के सम्बन्ध में पूछताछ की थी।

श्री० विद्याभूषण आज़ाद के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा, कि मैं षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता। अधिकारियों की ओर से मुझे कहा गया था, कि भवानीसहाय एक बम-केस में अभियुक्त है। अलवर में मैं रेलवे-पुलिस की चौकी में ठहरा था, किन्तु उस चौकी के अफ़सर का नाम मुझे याद नहीं है। भवानीसहाय मध्यम क्रुद का अर्थात् ५ फीट, ५ इंच के लगभग की ऊँचाई का मनुष्य है।

**यशपाल**

इसके बाद लाहौर के खुफिया-विभाग के हेड कॉन्स्टेबिल रामसरन दास की गवाही हुई। उसने अपने बयान में कहा कि मैं यशपाल को खोजने के लिए नियुक्त किया गया था। यशपाल काज़्ज़ा ज़िले के अन्तर्गत भमपाल नामक गाँव का रहने वाला है। मैं अभी तक उसकी खोज में हूँ। मैं यशपाल की खोज में अनेक देशी रियासतों में भी गया हूँ। उसका पता लगाना कठिन है। वह लाहौर षड्यन्त्र का भी अभियुक्त है।

मि० आसफ़अली के जिरह करने पर, गवाह ने कहा कि मैं यशपाल को उसके चेहरे से पहचान सकता हूँ। यशपाल के गाँव भमपाल में मेरे कुछ सम्बन्धी रहते हैं। मैंने कई बार यशपाल को देखा है। गवाह ने कहा, कि जहाँ तक मुझे याद है, मैंने दो बार यशपाल को देखा है, एक बार तो ५ वर्ष पहले मैंने उसे देखा था। लाहौर षड्यन्त्र के सम्बन्ध में एक वारण्ट भी उसकी गिरफ़्तारी के लिए मुझे दिया गया था, किन्तु दिल्ली षड्यन्त्र के सम्बन्ध में कोई वारण्ट नहीं दिया गया है। गवाह ने आगे बतलाया, कि अपने भेदियों के द्वारा खबर पाकर ही मैं देशी रियासतों में उसे खोजने गया था। २० दिन पहले मैं उसे अरकी नामक स्थान में खोज रहा था। और गत दो दिनों से मैं उसे दिल्ली में खोज रहा हूँ। गवाह ने कहा, कि यशपाल का एक दूसरा नाम रङ्गपाल भी है। मुझे नहीं मालूम उसके दो ही नाम



हैं या अधिक। मुझे नहीं मालूम यशपाल भारत में है या नहीं?

श्री० बलजीतसिंह के पूछने पर गवाह ने कहा, कि जब मैं यशपाल की खोज में जाता था, तो पिस्तौल नहीं रखता था। मि० वैनर्जी के पूछने पर गवाह ने कहा कि अभियुक्त से अपनी रक्षा करने के लिए मैंने कोई उपाय नहीं किया। गवाह ने अपना वर्तमान पता बतलाने से इन्कार किया।

\* \* \*

सरकारी वकील के जिरह करने पर हबीब हुसेन ने कहा कि मैंने मेरठ, नैनीताल, हल्द्वानी, कोटद्वारा और रुड़की में, सम्पूर्णसिंह टण्डन और भवानीसिंह की खोज की है, किन्तु उनका कोई पता नहीं लगा। निकट-भविष्य में भी उनके गिरफ्तार होने की कोई आशा नहीं है।

मि० आसफ़अली के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि टण्डन का एक दूसरा नाम आसफ़ भी है, किन्तु मुझे यह नहीं मालूम कि भवानीसिंह का भी कोई दूसरा नाम है या नहीं। मुझे उनकी गिरफ्तारी के लिए वारण्ट नहीं दिए गए थे। उन्हें पहचानने वाला कोई आदमी भी मुझे नहीं दिया गया था। मैं केवल अफ़सरों के बतलाए हुए स्थानों में उनकी खोज करता था। मुझे यह पता लगा था कि अभियुक्त हल्द्वानी में है। इस पते के बताने वाले का नाम मैं नहीं कहना चाहता। सिर्फ़ इतना ही बता सकता हूँ, कि वह पुलिस का कोई भेदिया नहीं है। मैं अभियुक्तों के किसी भी मित्र या सम्बन्धी का नाम नहीं बता सकता, जिनके द्वारा मैंने अभियुक्तों के सम्बन्ध में पूछताछ की है। मैंने अभियुक्तों की खोज में उन सभी स्थानों का भ्रमण किया है, जहाँ-जहाँ उनके जाने की सम्भावना है। ऐसा कोई विशेष स्थान नहीं है, जहाँ अभियुक्तों ने स्थिरतापूर्वक वास किया हो; इस कारण, मुझे साधारण तौर से इधर-उधर उनकी खोज करनी पड़ी है। मैंने सम्पूर्णसिंह टण्डन को दिल्ली में देखा था, जहाँ वे रामजस कॉलेज के प्रोफ़ेसर थे। यह बात मुझे उस कॉलेज के लड़कों से मालूम हुई, किन्तु मैंने वहाँ के प्रिन्सिपल से इस सम्बन्ध में कोई पूछताछ नहीं की। मैंने भवानीसिंह के सम्बन्ध में उसके पिता नाथूसिंह से कोई पूछताछ नहीं की है, और मैं नहीं जानता कि अभियुक्त जीवित है, और भारत में है या नहीं।

श्री० बोस के प्रश्नों का उत्तर देते हुए गवाह ने कहा, कि ५ वर्षों से मैं टण्डन के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता। मैंने पहले-पहल उसे रामजस कॉलेज से आते समय देखा था। मुझे याद नहीं, किसने मुझे बताया था कि यही सम्पूर्णसिंह हैं। उसके बतलाने का क्या उद्देश्य था, यह भी मैं नहीं कह सकता। भवानीसिंह को मैं इसलिए जानता हूँ कि वह अक्सर टण्डन से मिलने जाया करता था।

श्री० बलजीतसिंह के पूछने पर गवाह ने कहा कि मुझे यह नहीं मालूम कि, दिल्ली में जो एक मनुष्य गिरफ्तार हुआ था, उसके बयान के अनुसार, मेरठ में अभियुक्तों की खोज की गई थी या नहीं।

अभियुक्त निगम के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा कि टण्डन इतिहास का अध्यापक था, और भवानीसिंह दिल्ली में पढ़ता था, किन्तु मुझे यह नहीं मालूम कि वह किस स्कूल या कॉलेज में पढ़ता था।

अभियुक्त विद्याभूषण के पूछने पर गवाह ने कहा कि किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में अपना सन्देह दूर करना, मेरी खूबी का एक अङ्ग है, इस कारण मैंने स्वयं भवानीसिंह के सम्बन्ध में पता लगाया था। उसकी खोज करने की आज्ञा मिलने से पहले, उसकी गति-विधि का निरीक्षण करने की आज्ञा मुझे नहीं दी गई थी। मैंने हल्द-

वानी में एक यात्री से अभियुक्तों के सम्बन्ध में कुछ पूछताछ की। संयोगवश वह मनुष्य भवानीसिंह के विषय में जानता था।

दिल्ली के खुफ़िया-विभाग के सब-इन्स्पेक्टर मोती-राम ने यशपाल, भवानीसहाय और मुसम्मात प्रकाशो की खोज के सम्बन्ध में अपना बयान दिया। उसने कहा कि मैंने अलीगढ़, मथुरा, खुरजा, बुलन्दशहर, गाज़ियाबाद, हिस्सार, भवानी, तेजारा, अलवर और राजगढ़ आदि स्थानों में उनकी खोज की है। गवाह ने कहा कि इन अभियुक्तों के निकट-भविष्य में गिरफ्तार होने की कोई सम्भावना नहीं है।

मि० आसफ़अली के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि अभियुक्त धन्वन्तरि की गिरफ्तारी पर मुझे कोई पुरस्कार नहीं मिला। जिस समय उनकी गिरफ्तारी हुई, उस समय मैं दिल्ली के बाहर था। मैंने अभियुक्तों को नहीं देखा था, किन्तु मुझे उनके विवरण लिख कर दिए गए थे। भवानीसहाय को पहचानने वाला एक आदमी मेरे साथ दिया गया था। अभियुक्त के किसी मित्र या सम्बन्धी से मैंने कोई पूछताछ नहीं की है। मेरे साथ के एक सब-इन्स्पेक्टर के ज़रिए ही मुझे कुछ बातें मालूम हुई थीं। यशपाल और मुसम्मात प्रकाशो का कोई दूसरा नाम नहीं है। किन्तु भवानीसहाय के रामप्रसाद, रामनाथ और शायद श्रीकृष्ण भी नाम हैं। मैं यह नहीं कह सकता, कि अभियुक्त इस देश में है, और जीवित है या नहीं।

इसी समय अदालत लञ्च के लिए बरखास्त हुई। लञ्च के बाद मोतीराम का बयान फिर शुरू हुआ। मि० बोस के पूछने पर गवाह ने कहा, कि मुझे यह नहीं मालूम कि मुसम्मात प्रकाशो पदार्शनशील है या नहीं।

मि० अन्सारी के पूछने पर गवाह ने कहा कि बिना अफ़सरों की आज्ञा के मैं किसी व्यक्ति की निगरानी नहीं करता हूँ।

खुफ़िया पुलिस के कॉन्स्टेबल अमीरचन्द ने अपने बयान में कहा कि मैंने भवानीसहाय और काशीराम की खोज की है। उनके शीघ्र गिरफ्तार होने की कम सम्भावना है।

मि० आसफ़अली के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि मैं यशपाल और मुसम्मात प्रकाशो को नहीं जानता हूँ, किन्तु भवानीसहाय और काशीराम को १९२९ से जानता हूँ, जबकि काशीराम ने दिल्ली में एक भाषण दिया था। काशीराम का और कोई नाम है या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। भवानीसहाय उस समय मेरा पड़ोसी था। मुझे अभियुक्तों के सम्बन्ध में केवल लिखित विवरण दिए गए थे, उनको फ़ोटो मुझे नहीं दी गई थी। जिस समय मैं भवानीसहाय की खोज करने निकला, उस समय मुझे यह पता नहीं था कि वह मेरा पड़ोसी है। मैं अभियुक्त की खोज में हिस्सार, भवानी, तेजारा, राजगढ़, अलवर, जयपुर और इन्दौर गया। राजगढ़ में भवानीसहाय के चचा से मेरी मुलाकात हुई। उन्होंने मुझे बतलाया कि भवानीसहाय दो महीने पहले राजगढ़ में था, और फिर वह अलवर गया था, जहाँ उसके कुछ सम्बन्धी रहते हैं।

\* \* \*

११वीं मई का समाचार है, कि आज दलीपसिंह ने अपने बयान में कहा कि मैंने सिकन्दराबाद (यू० पी०) में रामचन्द्र शर्मा की खोज की है। किन्तु मि० आसफ़अली के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि सिकन्दराबाद नहीं, सिकन्दराबाद में मैंने उसकी खोज की है। गवाह ने आगे कहा कि मैं अब भी दिल्ली में अभियुक्त को पहचानने वाले एक आदमी की सहायता से, उसकी खोज कर रहा हूँ।

मि० आसफ़अली—गत दो महीनों से उसका कोई पता लगा है?

गवाह—नहीं।

खुफ़िया-विभाग के इन्स्पेक्टर चैतराम ने कहा कि मैं भी शर्मा की खोज में हूँ। गवाह ने बताया कि गत सत्याग्रह आन्दोलन के समय अभियुक्त बुलन्दशहर का 'डिक्टेटर' था।

मि० आसफ़अली के पूछने पर गवाह ने कहा कि शर्मा के 'डिक्टेटर' होने का कोई कागज़ी सबूत मेरे पास नहीं है, किन्तु मुझे पता चला था कि उकसाव (Instigation) ऑर्डिनेन्स के अनुसार उस पर वारण्ट जारी किया गया था। शर्मा पर कभी निगरानी नहीं रखी गई। मैं वॉयसराय के सम्बन्ध के बम-काण्ड के सम्बन्ध में, नलगाड़ा उसकी खोज करने गया था।

खुफ़िया पुलिस के कॉन्स्टेबल रविदत्त ने अपने बयान में कहा, कि मुझे काशीराम को बीकानेर में गिरफ्तार करने का अधिकार दिया गया था। मैंने वहाँ एक कन्या-पाठशाला में उसे खोजा। मैं अपनी लड़की को उस पाठशाला में भर्ती कराने के बहाने वहाँ गया था।

दिल्ली के खुफ़िया-विभाग के हेड कॉन्स्टेबल रिसालसिंह ने कहा, कि मैं हज़ारीलाल की खोज में झाँसी और कानपुर गया था।

मि० बोस के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि अभियुक्त का घर बिहार में है, यह मैं जानता था। मैंने अभियुक्त को कई बार दिल्ली में देखा था। उसकी कोई फ़ोटो मेरे पास नहीं है। उस पर दिल्ली के क्रीन्स गार्डन के गोली-काण्ड के सम्बन्ध में अभियोग है। गोली-काण्ड के बाद से ही वह फ़रार है। मि० आसफ़अली के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा, कि उस गोली-काण्ड के सम्बन्ध में मैंने किसी पुलिस-अफ़सर के सामने कुछ बयान नहीं दिया है। मि० आसफ़अली ने अदालत से कहा, कि गवाह तो कहता है कि उस गोली-काण्ड के सम्बन्ध में उसने कोई बयान नहीं दिया है, परन्तु उसने दिल्ली के इन्स्पेक्टर अब्दुल वाहिद के सामने जो बयान दिया था, उसकी नक़ल मेरे पास है।

\* \* \*

६ मई का समाचार है, कि आज अभियुक्तों ने अदालत में काकोरी-शहीदों के गाने गए। अभियुक्त वात्सायन उवर से पीड़ित था, इसलिए श्री० बलजीतसिंह ने अभियुक्त को बैठने के लिए कुर्सी दिए जाने की प्रार्थना की। अदालत ने प्रार्थना स्वीकार कर ली।

अदालत की कार्यवाही शुरू होने पर, इन्स्पेक्टर अब्दुल वाहिद के सामने दिए गए सरकारी गवाह कॉन्स्टेबल-रिसालसिंह के बयान के सम्बन्ध में बहुत वाद-विवाद हुआ। प्रतिवादी पक्ष के वकील मि० आसफ़अली ने जिरह करते हुए उस बयान का एक वाक्य पढ़ा, और गवाह से पूछा कि यह वाक्य उसने अपने बयान में कहा था या नहीं? गवाह ने कहा कि मुझे याद नहीं कि इन्स्पेक्टर वाहिदअली के सामने मैंने कभी यह बयान दिया है या नहीं। गवाह के यह कहने पर, कि बयान की अनेक बातें गलत हैं, जजों ने यह सलाह की कि इन्स्पेक्टर वाहिदअली को गवाह से जिरह करने के लिए बुलाया जाय या नहीं। अन्त में यह स्थिर किया गया कि वाहिदअली के बुलाने की आवश्यकता नहीं है।

### ट्रिब्यूनल का अधिकार

मि० आसफ़अली ने यह प्रश्न उपस्थित किया कि ट्रिब्यूनल को, इन अभियुक्तों के मामले का फ़ैसला करने का अधिकार नहीं है। ट्रिब्यूनल के अध्यक्ष ने उत्तर में कहा कि, यदि हम लोगों को फ़ैसला करने का अधिकार नहीं है, तो आप हाईकोर्ट जा सकते हैं। मि० आसफ़अली ने कहा कि वर्तमान अदालत सेशनस अदालत है,



और इसलिए नियमानुसार यहाँ जूरी का होना अत्यावश्यक है। दण्ड-विधान की २६८वीं धारा के अनुसार सेशन कोर्ट में जूरी या असेसरो को ही विचार करने का अधिकार है।

अभियुक्तों के वकील ने फिर आगे बतलाया, कि जब वादी यूरोपियन और प्रतिवादी भारतीय होता है, तो ऐसी दशा में, कानून के अनुसार जूरी के द्वारा विचार होता है। वर्तमान मामले में सभी अभियुक्त वाँयसराय की ट्रेन उलटने या मि० पील पर आक्रमण करने के सम्बन्ध में गिरफ्तार किए गए हैं। इस प्रकार यहाँ वादी-दल यूरोपियन और प्रतिवादी-दल भारतीय है। अतएव इस मामले का विचार जूरी के सामने होना चाहिए। जब तक जूरी नहीं बुलाए जायेंगे, तब तक कानून के अनुसार, यह मामला चल नहीं सकता है।

रायबहादुर कुँवर सेन (कमिशनर)—क्या लाहौर षड्यन्त्र केस में यह प्रश्न उपस्थित किया गया था ?

मि० आसफ़अली—नहीं। किन्तु हरकिशन के मामले में मैंने यह प्रश्न उपस्थित किया था, और वहाँ जूरी बुलाए गए थे। हरकिशन के मामले से यह मामला बहुत मिलता-जुलता है, क्योंकि वहाँ सर ज्याम्स डे मॉण्टमॉरेन्सी पर आक्रमण किया गया था, और यहाँ लॉर्ड इर्विन पर आक्रमण करने की चेष्टा की गई थी।

## फरार अभियुक्त

इसके बाद, सरकारी वकील ने यह सिद्ध करना चाहा, कि काशीराम, यशपाल, मुसम्मात प्रकाशो आदि ६ अभियुक्त वास्तव में फरार हैं। प्रमाण में अपने खुफिया पुलिस वालों का बयान पेश किया। आपने अदालत से यह अनुरोध किया कि वर्तमान अभियुक्तों के विरुद्ध जो गवाहियाँ दर्ज की गई हैं, वे १९२१वीं धारा के अनुसार फरार अभियुक्तों के विरुद्ध भी दर्ज कर ली जायँ। सरकारी वकील ने आगे कहा कि, फरार अभियुक्तों के सम्बन्ध में सरकारी गवाहों के बयान को असत्य प्रमाणित करने का सब से सहल उपाय यह है, कि उन अभियुक्तों को अदालत के सामने पेश कर, यह सिद्ध कर दिया जाय कि वे फरार नहीं हैं !!

मि० आसफ़अली ने उत्तर में कहा कि किसी भी बयान से यह सिद्ध नहीं होता है, कि ये फरार मनुष्य अभियुक्त हैं। केवल चालान से ही उनका अभियुक्त होना सिद्ध नहीं होता है। ऐसा कोई प्रमाण हमारे सामने नहीं है, जिससे यह सिद्ध हो कि इस मामले में काशीराम, भवानीसहाय आदि व्यक्तियों की ज़रूरत है। केवल उच्च कर्मचारियों की आज्ञा से ही उनकी आवश्यकता सिद्ध नहीं होती है। वे आज्ञाएँ भी अदालत के सामने पेश नहीं की गई हैं। फरार व्यक्तियों के फोटो भी नहीं पेश की गई हैं, इसलिए केवल ज़बानी बयान का कोई मूल्य नहीं है।

पुलिस के बयान का समर्थन करने के लिए कोई स्वतन्त्र गवाह नहीं पेश किया गया है। फरार व्यक्तियों को पहचानने वाले जो व्यक्ति गवाहों के साथ भेजे गए थे, वे भी पेश नहीं किए गए हैं। सारांश में खुफिया पुलिस के बयान को पुष्ट करने के लिए कोई भी गैर-सरकारी व्यक्ति अदालत के सामने पेश नहीं किया गया है। जिससे मालूम हो कि गवाह सचमुच फरार व्यक्तियों की खोज में थे। यह षड्यन्त्र का मामला है। अभियुक्तों के ऊपर भयङ्कर अभियोग लगाए गए हैं जो अगर प्रमाणित हो जायँ, तो अभियुक्तों को काले पानी तक की सज़ा हो सकती है। इसलिए किसी भी बयान का प्रमाण माँगना मेरे लिए अनिवार्य है।

मैं यह नहीं कहता, कि सरकार को इन व्यक्तियों से कोई विद्वेष है। किन्तु पुलिस तो 'कैसर की खी' की तरह सशङ्क रहा करती है।

## मुखबिर भूठी गवाही दे सकते हैं

मुखबिर अपनी जान बचाने के लिए और मामले को भयङ्कर सिद्ध करने के लिए अनगिनत झूठ बोल सकते हैं; और खुफिया वाले तो दूसरे के विरुद्ध कथानियाँ गढ़ कर ही जीते हैं !

क्या ऐसे ही मनुष्यों पर विश्वास करने के लिए आप मुझे कहते हैं ? कृपा कर किसी ऐसे सज्जन को लाइए जो यह सिद्ध करे कि काशीराम आदि ६ व्यक्ति वास्तव में फरार हैं। पुलिस के बयानों से साफ़ मालूम पड़ता है, कि पुलिस वाले या तो किसी अनिर्दिष्ट वस्तु की खोज में थे या वे आनन्द के लिए यात्रा करते थे (सभी हँसते हैं) केवल कुछ खुफिया वालों के भ्रमण के लिए ही, जो या तो अपने घर जाते होंगे या आनन्द के लिए दूसरे स्थानों में भ्रमण करते होंगे, इतने रूप की बर्बादी की गई है !!

गई। लञ्च के बाद २½ बजे से फिर अदालत की कार्यवाही शुरू हुई।

मि० आसफ़अली ने खुफिया पुलिस वालों के बयान के सम्बन्ध में अपनी बहस जारी रखते हुए कहा, कि उन लोगों ने फरार व्यक्तियों को खोजने का कष्ट नहीं उठाया है। प्रोफ़ेसर टण्डन के विषय में किसी ने भी रामजस कॉलेज के प्रिन्सिपल से यह नहीं दर्यापस्त किया, कि वे छुट्टी में गए हैं, या उन्होंने नौकरी छोड़ दी है। मुसम्मात प्रकाशोदेवी का जो विवरण भिन्न-भिन्न गवाहों ने दिया है, वह भी विरोधात्मक है।

आपने आगे कहा कि फरार व्यक्तियों के विरुद्ध दिल्ली षड्यन्त्र केस में कोई वारण्ट नहीं निकाला गया, है। लाहौर केस का वारण्टइ सके लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह कुछ ठीक नहीं है कि लाहौर केस के फरार दिल्ली केस में भी फरार हैं !



## “खाऊँ किधर की चोट, बचाऊँ किधर की चोट !!”

इन गवाहों ने जो बयान पेश किए हैं, उनका कोई मूल्य नहीं है। ये कानून की रक्षा करने वाले (खुफिया पुलिस) फरार-व्यक्तियों की खोज में स्वयं ही बुरी तरह भोंपे हैं। ‘मध्यम क्रद, लाल साड़ी, किसी अङ्ग में तिल का चिह्न है—’ अभियुक्तों के सम्बन्ध में इस प्रकार के विवरणों का कोई मूल्य नहीं। इस प्रकार के जो विवरण गवाहों को दिए गए थे, वे बहुत ही अपर्याप्त थे और कितने ही स्थानों पर विरोधात्मक भी थे।

फरार व्यक्तियों के अभियुक्त होने की कोई घोषणा नहीं की गई है। और वे वास्तव में फरार हैं या नहीं ? यह भी सिद्ध नहीं किया गया है। कोई व्यक्ति, जो घर से कहीं बाहर गया हो, बिना सरकारी जाँच और विज्ञप्ति के फरार अभियुक्त नहीं कहा जा सकता। ऐसा कोई भी व्यक्ति अदालत के सामने पेश नहीं किया गया है, जो यह सिद्ध करे कि उसने किसी भी अभियुक्त को फरार होते देखा है।

इसके बाद लञ्च के लिए अदालत बरखास्त कर दी

इन सभी कारणों से, फरार व्यक्तियों पर से मामला उठा लेना ही उचित होगा। यदि ऐसा नहीं किया गया, तो उन सभी प्रमाणों को अदालत के सामने पेश करना होगा जो अब तक पेश नहीं किए जा सके हैं।

मि० एस० एन० बोस (प्रतिवादी दल के वकील) ने अपने बहस के सिलसिले में कहा कि सरकारी गवाहों के बयान से साफ़ मालूम पड़ता है कि हज़ारीलाल और मुसम्मात प्रकाशो को खोजने की कोई चेष्टा नहीं की गई है।

अभियुक्त वात्सायन ने कहा, कि फरार अभियुक्तों के अस्तित्व को प्रमाणित करने की कोई चेष्टा नहीं की गई है। गवाहों को अभियुक्तों के कुल-शील का भी कुछ पता नहीं है !

## सरकारी वकील की बातें

सरकारी वकील ने मि० आसफ़अली के जूरी सम्बन्धी प्रश्न पर कहा, कि इस मामले में कोई भी वादी यूरोपियन नहीं है। यह ठीक है कि वाँयसराय की ट्रेन को उलटने का प्रयत्न किया गया था, किन्तु लॉर्ड इर्विन



को उससे चोट नहीं पहुँची थी और वे अदालत में वादी के स्वरूप में लाए भी नहीं जा सकते हैं। मि० पील को भी चोट नहीं पहुँची थी, इस कारण वे वादी नहीं हैं। यदि अभ्याग्यवश उन्हें चोट आई होती, तो आज इस मामले का कुछ दूसरा ही रूप होता।

इस मामले से वास्तव में किसी यूरोपियन का सम्बन्ध नहीं है, इसलिए यहाँ जूरी की आवश्यकता नहीं है।

इस विषय का फ़ैसला दूसरे दिन के लिए रिजर्व रखा गया।

## अदालत का फ़ैसला

७वीं मई का समाचार है, कि आज ट्रिब्यूनल ने यह फ़ैसला सुना दिया, कि वे १ व्यक्ति जो फ़रार बतलाए जाते हैं, वास्तव में फ़रार हैं और २१२वीं धारा के अनुसार उनके विरुद्ध गवाहियाँ दर्ज की जा सकती हैं। जूरी के सम्बन्ध में, जो प्रार्थना की गई थी वह भी अस्वीकृत कर दी गई।

## मि० पील का बयान

इसके बाद एफ़्रिया पुलिस के स्पेशल सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० पील की गवाही हुई। आपने अपने बयान के सिलसिले में कहा, कि मुखबिर कैलाशपति के कहने पर मैंने पुलिस के सीनियर सुपरिण्टेण्डेण्ट से एक जैन युवक की तलाशी लेने को कहा, जो दूरीबा में दूकानदारी करता था। यह तलाशी, एसिड, रिवाँल्वर तथा कुछ अन्य पदार्थों के सम्बन्ध में ली गई थी। यूनिवर्सल ड्रग स्टोर्स की भी तलाशी लेने की आज्ञा मैंने दी थी। मैंने विशेष-शरसिंह को नलगढ़ा की डेयरी फ़ार्म की तलाशी लेने की आज्ञा दी, जहाँ एक मोटर-साइकिल के कल-पुर्जे रखे जाने का सन्देह था। ११वीं नवम्बर को मैंने इन्स्पेक्टर चैनशम को ब्रह्मानन्द की गिरफ़्तारी के लिए भेजा। ब्रह्मानन्द का लाइसेन्स देखने से पता चला, कि सन्, १९३० के फ़रवरी से अक्टूबर तक उसने ६०० गोलियाँ ख़रीदी हैं।

गवाह ने आगे कहा, कि २०वीं नवम्बर को दिव्ही षड्यन्त्र केस रजिस्टर्ड हुआ था। मैंने १ली नवम्बर से अनुसन्धान करना शुरू किया। ११वीं दिसम्बर को मैं झण्डेवालाँ के एक मकान की तलाशी लेने गया। वहाँ ४ चूड़ियाँ तथा कुछ अन्य चीज़ें मिलीं।

मि० आसफ़अली ने सरकारी वकील से पूछा, कि वे उन चीज़ों को अदालत के सामने पेश करने के लिए तैयार हैं या नहीं? सरकारी वकील ने कहा कि वे चीज़ों परीक्षा के लिए केमिकल एक्ज़ामिनर के पास भेज दी गई हैं।

ट्रिब्यूनल ने मि० आसफ़अली को मि० पील से जिरह करने की आज्ञा दे दी।

मि० आसफ़अली ने जिरह में गवाह से पूछा—कैलाशपति के गिरफ़्तार होने के पहले, वॉयसराय की ट्रेन उड़ाए जाने के सम्बन्ध में आपको कुछ मालूम था या नहीं?

उत्तर—था।

प्रश्न—इस बात का पता आपको कब लगा?

उत्तर—वास्तव में, इन्द्रपाल की गिरफ़्तारी के बाद इसका पता लगा था।

प्रश्न—इसके पहले निश्चित रूप से कुछ मालूम नहीं था?

उत्तर—नहीं, अभियुक्तों को गिरफ़्तार करने के लिए कोई पक्का प्रमाण उस समय तक नहीं मिला था।

इसके बाद गवाह ने बतलाया, कि मेरे पास नित्य गुमनाम चिट्ठियाँ आया करती थीं, जिनमें झूठी ख़बरें, तथा बनावटी नाम लिखे होते थे। मैं उन पर विश्वास नहीं करता था। इसके बाद गवाह ने कहा कि हमारा

स्टाफ़ अन्तिका रयों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान रखता है। इस पर मि० आसफ़अली ने इस सम्बन्ध में गवाह की परीक्षा लेने के इरादे से जिरह करना शुरू किया:—

प्रश्न—क्रान्तिकारियों के सङ्गठन का कब तक का आपको ज्ञान है?

उत्तर—मुझे पहिली बार १९२८ की शरद-ऋतु में इस सम्बन्ध में काम करना पड़ा था।

प्रश्न—इस मामले को हाथ में लेने के पहले आपको दो वर्ष का अनुभव है?

उत्तर—हाँ, किन्तु युक्त प्रान्त के खुफ़िया विभाग में भी मुझे कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ था?

प्रश्न—१९२८ के पहले आपने क्या विशेष ज्ञान प्राप्त किया था?

उत्तर—मैंने, १९१४ के लाहौर केस और काकोरी आदि षड्यन्त्र के मामलों के फ़ैसले पढ़े थे।

प्रश्न करने पर गवाह ने कहा, कि मैं नाथू भाइयों के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानता हूँ। वकील ने गवाह को याद दिलाया कि सन् १९०६ में वे पूना से काले पानी भेजे गए थे। सरकारी वकील ने इन प्रश्नों पर एतराज़ किया। मि० आसफ़अली ने कहा मैं गवाह के क्रान्तिदल के सङ्गठन सम्बन्धी ज्ञान की परीक्षा ले रहा हूँ!

अध्यक्ष—मुझे इसमें औचित्य नहीं जान पड़ता।

मि० आसफ़अली—मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ, कि मि० पील का इस सम्बन्ध में ज्ञान बहुत ही थोड़ा है, और यह सम्भव है कि उनके सहकारियों ने उन्हें गलत ख़बरें दी हों।

ट्रिब्यूनल ने यह फ़ैसला किया, कि इस सम्बन्ध में जिरह नहीं हो सकती है, और गवाह के विशेष ज्ञान की परीक्षा नहीं ली जा सकती।

इसके बाद गवाह ने बतलाया, कि कुछ अभियुक्तों का सम्बन्ध बम्बई के लेमिङ्गटन रोड शूटिंग केस से भी है।

प्रश्न—किन-किन अभियुक्तों का उससे सम्बन्ध है?

उत्तर—हमें निश्चित रूप से पता चला है, कि अभियुक्त वैशम्पायन का सम्बन्ध उस मामले से है।

बम्बई पुलिस ने उस केस के सम्बन्ध में मुझे कोई सूचना नहीं दी है, किन्तु जान पड़ता है कि उसके सभी अभियुक्त छोड़ दिए गए हैं; और वैशम्पायन पर अभियोग उपस्थित नहीं किया गया। मैंने धन्वन्तरि और सुखदेवराज का चालान नहीं देखा है। मैंने पुलिस के सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास लिखा था, कि ३०७वीं धारा के अनुसार जो अभियोग उन पर है वह हटा लिया जाय, जिसमें धन्वन्तरि को षड्यन्त्र केस का अभियुक्त बनाया जा सके। इस मामले में सुखदेवराज की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न—क्या दिल्ली षड्यन्त्र केस से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है?

उत्तर—वह लाहौर केस का अभियुक्त है।

प्रश्न—मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं है। मैं जानना चाहता हूँ, कि इस मामले में उसकी आवश्यकता क्यों नहीं है?

इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया गया।

प्रश्न—क्या यह सच है कि आपके ऊपर आक्रमण करने के लिए षड्यन्त्र रचा गया था?

उत्तर—अनुसन्धान करते समय मुझे इस बात का पता चला है।

प्रश्न—क्या आपको पूरा विश्वास है, कि इस सम्बन्ध में षड्यन्त्र रचा गया था?

उत्तर—मुझे केवल कैलाशपति से यह मालूम हुआ था।

प्रश्न—क्या उसकी बातें विश्वसनीय हैं?

सरकारी वकील—यह प्रश्न उचित नहीं है।

मि० आसफ़अली ने कहा कि यह प्रश्न सर्वथा

उचित है, क्योंकि इससे गवाह का व्यक्तिगत सम्बन्ध है। ट्रिब्यूनल ने इस प्रश्न को उचित ठहराया।

इसके बाद मि० आसफ़अली और सरकारी वकील में गर्मागर्म बहस शुरू हो गई। मि० आसफ़अली ने कहा—मैं नहीं जानता था, कि सरकारी वकील, मि० पील को गर्म आलू की तरह यहाँ टपका देंगे।

सरकारी वकील—मैं ऐसे शब्दों का घोर विरोध करता हूँ।

मि० आसफ़अली—इन शब्दों के विरोध करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सर तेज बहादुर सप्रू जैसे व्यक्तियों ने हाईकोर्ट के सामने ऐसे शब्दों का व्यवहार किया है।

श्री० बलजीतसिंह ने अदालत से प्रार्थना की कि मामला स्थगित कर दिया जाय। किन्तु यह प्रार्थना अस्वीकृत कर दी गई।

## अनुचित तलाशी

श्री० बलजीतसिंह ने ट्रिब्यूनल के सामने यह शिकायत पेश की, कि हरद्वारीलाल के चचा बालकृष्णलाल की अनुचित तलाशी ली गई है। उन्होंने कहा, कि बालकृष्णलाल की धोती खोल कर तलाशी ली गई थी।

एक पत्र-प्रतिनिधि ने भी यह शिकायत की, कि सरजण्ट बक्सटन ने उसकी अनुचित तलाशी ली थी। सरजण्ट को यह शक हो गया था, कि मेरे पायजामे में अस्त्र छिपे हुए हैं।

अभियुक्तों ने भी इस प्रकार की तलाशियों का घोर विरोध किया। उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि जब तक इस प्रकार की अनुचित तलाशियों का लेना बन्द नहीं किया जायगा, तब तक हम अदालत में उपस्थित नहीं होंगे।

अदालत ने इस मामले की जाँच करने का वादा किया। मि० आसफ़अली ने अभियुक्तों को विश्वास दिलाया, कि उनकी शिकायतें दूर कर दी जायँगी।

## प्रधान मुखबिर का सनसनीपूर्ण बयान

११वीं मई को देहली षड्यन्त्र केस के प्रधान मुखबिर कैलाशपति अस्थाना का वह बयान पढ़ा गया, जोकि उसने सिटी मैजिस्ट्रेट के सामने दिया था। यह इस प्रकार है:—

१९२३ में, जब मैं इलाहाबाद के एक स्कूल में पढ़ता था, शलीन्द्रनाथ से मेरी भेंट हुई। उसने क्रान्तिकारी साहित्य की कुछ पुस्तकें, तथा हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का एक पीला पर्चा मुझे दिया। इसके बाद मैं उस एसोसिएशन का सदस्य हो गया।

सन्, १९२७ में कानपूर में श्री० विजयकुमार सिन्हा षड्यन्त्रकारी से मेरी भेंट हुई। इसके बाद मैं सान्याल (काकोरी के अभियुक्त) को मुक्त करने के एक षड्यन्त्र के सम्बन्ध में उन्नाव गया और वहाँ एक सुसलमान का मकान किराए पर ले लिया। वहीं मनोहरलाल से मेरी भेंट हुई।

## पोस्ट ऑफ़िस का रुपया ले भागा

१९२८ के जनवरी या फ़रवरी के महीने में मैं इलाहाबाद से गोरखपुर गया। मार्च महीने में मैंने गोरखपुर के डाक विभाग में नौकरी कर ली। वहीं राजगुरु और एम० पी० अवस्थी से मेरी भेंट हुई। कुछ दिनों के बाद मेरी बदली बरहलगंज के सब-पोस्ट ऑफ़िस में हो गई। २६-६-२८ को मैं वहाँ से २,३०० रुपए लेकर चम्पत हुआ, और लार रोड स्टेशन पर ही अपनी साइकिल छोड़, ट्रेन से रवाना हुआ। कानपूर पहुँच कर पाण्डे और हलदर को मैंने वे रुपए दे दिए। २६-६-२८ को मैं शिव-वर्मा के यहाँ रहा, और वहीं सुखदेव, आज्ञाद और डॉक्टर गयाप्रसाद से मेरी जान-पहचान हुई। इसके



बाद मैं लाहौर के लिए रवाना हुआ। हरदोई में प्रताप (महावीरसिंह) भी आ मिले। लाहौर पहुँच कर मैं पहले सरदार भगतसिंह से मिला, और सुखदेव, यशपाल, मनोहरलाल आदि से भी मिला। सुखदेव ने एडवर्ड होस्टल में एक कमरा किराए पर ले लेने के लिए मुझसे कहा। मैंने अपना नाम बदल कर राजबलिप्रसाद रक्खा, और इसी नाम से मकान किराए पर लिया।

सन्, १९२८ के अगस्त में सुखदेव, दल की केन्द्रीय सभा की एक मीटिंग में शामिल होने के लिए दिल्ली गया। वहाँ से लौट कर उसने कहा कि एसोसिएशन का नाम बदल कर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' रक्खा गया है, और वह (सुखदेव) तथा भगतसिंह पञ्जाब के; बी० के० सिंह और शिव-वर्मा युक्त-प्रान्त के, फणीन्द्रनाथ घोष बिहार और उड़ीसा के और कुन्दनलाल राजपूताने के सङ्गठनकर्ता नियुक्त किए गए हैं। उसने यह भी बतलाया कि आज़ाद सेना-विभाग के प्रधान नियुक्त किए गए हैं।

सन्, १९२८ के सितम्बर मास के अन्त में मैंने होस्टल छोड़ दिया और ग्वालमण्डी के एक मकान में रहने लगा, जिसे प्रताप ने किराए पर लिया था।

अक्टूबर के आरम्भ में मैं अमृतसर चला गया और मुगल बाज़ार में एक मकान किराए पर लेकर रहने लगा। एक-डेढ़ महीने के बाद मैंने दूसरा मकान लिया, और सन्, १९२९ के फ़रवरी महीने तक वहाँ रहा।

## नेशनल बैङ्क में डकैती

नवम्बर, १९२८ के मध्य में मैं लाहौर चला आया। इस समय हमारा उद्देश्य था पञ्जाब नेशनल बैङ्क में डाका-डालना। मैं पहले तो मज़ा के एक मकान में ठहरा, पीछे ग्वालमण्डी चला आया और किशोरीलाल के मकान पर रहने लगा। इसके बाद मैं, महावीरसिंह, जयगोपाल, राजगुरु, कुन्दनलाल, किशोरीलाल, आज़ाद, सरदार भगतसिंह, सुखदेव, हंसराज बोहरा और बी० के० सिंह से मिला। किन्तु बैङ्क पर डाका डालने में सफलता नहीं मिली। सॉण्डर्स की हत्या के करीब दो दिन पहले ही मैं अमृतसर चला गया।

फ़रवरी, १९२९ के आरम्भ में मैं दिल्ली चला आया। यहाँ पहुँच कर मैंने अपना असबाब ऑफिस में छोड़ दिया और हाडिन्ज लाइब्रेरी में बी० के० सिंह और जयदेव से मिला। जयदेव मुझे रामसरूप धर्मशाले में ले गया। वहाँ जयदेव और काशीराम के साथ मैं करीब एक महीने तक रहा। वहाँ काशीराम को मेरा परिचय दिया गया, कि मैं क्रान्तिकारी संस्था का सदस्य हूँ। विमलप्रसाद जैन, नन्दकिशोर निगम, भवानीसहाय और भवानीसिंह से भी मेरा उसी समय सम्पर्क हुआ। मैंने इन लोगों को क्रान्तिकारी विचारों की ओर आकर्षित कर लिया।

## सॉण्डर्स की हत्या

कुछ समय बाद ग्वालियर के गोपालकृष्ण पौराणिक से मेरी जान-पहचान हुई। मैंने उन्हें अपना नाम दया-कृष्ण श्रीवास्तव, बी० ए० बतलाया। मैं भटनावार के आदर्श विद्यालय का हेडमास्टर बनने के लिए तैयार हो गया। २१वीं मार्च, १९२९ से मैं उक्त स्कूल में काम करने लगा। २६ महीने वहाँ काम करने के बाद मैं दिल्ली चला आया। मैं बी० पी० जैन के यहाँ गया और फिर उनके साथ सिसाना गया। बी० पी० जैन मुझे सिसाना के समीप एक गाँव में, एक मन्दिर के पुजारी के साथ छोड़ कर, दिल्ली लौट गया। दो दिन बाद काशीराम मुझसे वहाँ मिला। तब मैं दिल्ली लौट आया। कुछ दिनों के बाद मैं, काशीराम और भवानीसहाय के साथ ग्वालियर गया। मैं और भवानीसहाय तो ग्वालियर उतर गए,

किन्तु काशीराम भाँसी चला गया। ग्वालियर में हम लोग अपना नाम बदल कर डक़रिन-सराय में रहने लगे। दो दिन के बाद हम लोग लक्ष्मीनारायण के धर्मशाला में चले गए। वहाँ काशीराम भी हम लोगों से आ मिला। इसके बाद हम लोग आर्यसमाज, लश्कर चले गए। वहाँ भगवानदास भी हम लोगों से आ मिला। एक या दो दिन के बाद काशीराम और भवानी-सहाय हरदोई चले गए और भगवानदास मुझे लेकर एक मकान में चले आए, जो गजानन्द तथा सदाशिव पोद्दार ने क्रान्तिकारी दल के लिए किराए पर ले रक्खा था। वहाँ वैशम्पायन, आज़ाद और सदाशिव भी रहते थे। यहाँ सभी लोग डी० वी० तैलङ्ग की सहायता से Picric Acid और Fulminate of Mercury बनाया करते थे। वैशम्पायन Apparatus और एसिड इत्यादि लाया था। ३ कनस्तरों में तैयार किए हुए बम रक्खे थे। इनमें से एक परीक्षा के लिए पटका गया था। ठले हुले हुए लोहे का एक बम भी यहाँ रक्खा गया था। वैशम्पायन ही यह बम लाया था। यहाँ आज़ाद ने सॉण्डर्स और चननसिंह की हत्या के सम्बन्ध का थ्योरे-वार वृत्तान्त मुझे बतलाया। उसने यह भी कहा, कि इस हत्या के लिए, वह (आज़ाद) राजगुरु, सरदार भगत-सिंह और जयगोपाल उत्तरदायी हैं।

## मि० हार्टन की हत्या का उद्योग !

इसके बाद मैं आर्थिक प्रबन्ध करने के लिए दिल्ली चला आया, और यहाँ करीब हफ़्ते भर ठहरा। बी० पी० जैन ने भगीरथ से मेरा परिचय कराया, जो उस समय लक्ष्मनदास के धर्मशाले में रहता था। इसके बाद मैं ग्वालियर लौट गया और मि० हार्टन और खैरात-नबी को मारने का उद्योग करने लगा, किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण सफलता नहीं मिली।

सितम्बर, १९२९ में एम० पी० अवस्थी एक दूक़ लाया, जिसमें एक ठले हुए लोहे का बम भी था। मैंने बम तथा भगवानदास ने एक साफ़ा लिया।

## बम और रिवॉल्वर

सितम्बर, १९२९ के दूसरे सप्ताह में मैं ग्वालियर से दिल्ली लौट आया। मेरा उद्देश्य यहाँ अपने दल का सङ्गठन करना था। भगवानदास और सदाशिव भी हमारे आने के बाद ही 'एम' से मिलने के लिए बम्बई चले गए। दोनों कनस्तर बम, ठले हुए लोहे का बम, दूक़ आदि चीज़ें भी वे अपने साथ लेते गए। मुझे ग्वालियर में ही एक ३२० बोर की रिवॉल्वर दी गई थी। एक ऑटोमेटिक पिस्तौल तथा एक या दो अन्य पिस्तौलें भगवानदास और सदाशिव को भी दी गई थीं।

## भगवानदास और सदाशिव की गिरफ़्तारी

दिल्ली लौटने के तीसरे दिन मुझे मालूम हुआ, कि भगवानदास और सदाशिव भुसावल में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। उस समय भवानीसिंह सिरकी बाज़ार के एक मकान में रहता था। मैंने ग्वालियर से लाया हुआ बम बी० पी० जैन को दिखलाया। उसने वह बम मिस्त्रियों को दिखलाया।

## भगवतीचरण और यशपाल

सितम्बर महीने में भवानीदयाल के ज़रिए, पटने के हज़ारीलाल और विश्वम्भरदयाल से मेरी जान-पहचान हुई। अक्टूबर, १९२९ में काशीराम लाहौर से और निगम कलकत्ते से लौट आए। काशीराम लक्ष्मनदास की धर्मशाले में तथा निगम और भवानीसिंह हिन्दू-कॉलेज के होस्टल में ठहरे। भवानीसिंह के छोड़े हुए मकान में भवानीसहाय रहने लगे। मैं निगम के साथ होस्टल में ठहरा और उसे अपने दल का सदस्य बना लिया। कुदसिया गार्डन में भगवतीचरण से मेरी भेंट

हुई, और पीछे यशपाल से भी मेरी जान-पहचान हुई। भगवतीचरण मुझे नया बाज़ार में अपने मकान पर ले गया, जहाँ वह यशपाल के साथ ठहरा हुआ था। भगवतीचरण ने अपना नाम हरीश और यशपाल ने जगदीश रक्खा था। मैंने निगम से उनकी जान-पहचान कराई। यशपाल और गिरधारीलाल एक ही साथ भोजन करते थे, और दोनों में बहुत मित्रता थी। नवम्बर में जब वैशम्पायन लाहौर जा रहा था, उसी समय मैंने निगम, भवानीसिंह, यशपाल और भगवतीचरण से उसका परिचय कराया।

इसके बाद मैं भवानीसिंह के साथ कानपुर गया। मैं दिल्ली और राजपूताने का सङ्गठनकर्ता बनाया गया, और बी० बी० तिवारी संयुक्तप्रान्त के सङ्गठनकर्ता बनाए गए। यह भी निश्चित किया गया, कि डाके डाल कर धन इकट्ठा किया जाय। इसके बाद मैं फिर दिल्ली लौट आया।

## वाँयसराय-ट्रेन-दुर्घटना

नवम्बर, १९२९ के दूसरे सप्ताह में, आज़ाद और वैशम्पायन दिल्ली आए। मैंने आज़ाद को भगवतीचरण और यशपाल का परिचय दिया। मैंने भगवतीचरण के पास २० बम पाए। यह पता मिल जाने पर मैं वाँयसराय की ट्रेन उड़ाने के सम्बन्ध में आज़ाद से परामर्श करने के लिए फिर कानपुर गया।

दिसम्बर, १९२९ के तीसरे सप्ताह में मैंने बी० पी० जैन को अर्जुनलाल सेठी के यहाँ दल के लिए कुछ रुपए लाने के लिए अजमेर भेजा। बी० पी० जैन लौट आए और केशवचन्द्र गुप्त के द्वारा अपना रिवॉल्वर उन्होंने अर्जुनलाल के पास भेज दिया, जिससे वह रुपए इकट्ठा कर सकें।

२२-१२-२९ को मैं नया बाज़ार के मकान में भगवतीचरण, यशपाल, आज़ाद, लेखराम आदि से मिला। उसी दिन मैं कुदसिया गार्डन में फिर आज़ाद, भगवतीचरण, यशपाल आदि से मिला। यहाँ आज़ाद ने यह घोषणा की, कि भगवतीचरण और यशपाल ने वाँयसराय की ट्रेन उड़ा देने का पूरा प्रबन्ध कर लिया है।

आज़ाद और मैंने सिरकी बाज़ार के मकान में रात बिताई। दूसरे दिन हम लोग न्यू होस्टल में भवानीसिंह के कमरे में चले गए। वैशम्पायन ने निगम के साथ होस्टल ही में रात बिताई थी।

## विप्लव-शिक्षा का केन्द्र

२९वीं दिसम्बर को वैशम्पायन लाहौर चला गया। २९वीं तारीख को मैं, आज़ाद और बी० पी० जैन के साथ नलगादा चला गया, और वहाँ रामचन्द्र शर्मा तथा ब्रह्मानन्द वकील के साथ डेयरी फ़ॉर्म में ठहरा। हम लोगों ने नलगादा को ही विप्लव-शिक्षा का केन्द्र बनाना निश्चित किया, क्योंकि रामचन्द्र शर्मा हमारे दल के साथ सहानुभूति रखते थे। यह भी निश्चित किया गया कि रामचन्द्र शर्मा के लाइसेन्स से एक राइफल ख़रीदी जाय। १-१-३० को हम लोग दिल्ली लौट आए, और भवानीसिंह के कमरे में हम लोगों ने रात बिताई। किन्तु दूसरे दिन सवेरे हम निगम के पास चले आए।

२-१-३० को यशपाल, निगम के यहाँ हम लोगों से मिला, और उसने वाँयसराय की ट्रेन सम्बन्धी घटना का ज़िक्र किया। ४-२-३० को भगवतीचरण, आज़ाद और यशपाल कुदसिया गार्डन में इकट्ठे हुए। मैं भी वहाँ था। वहाँ यह निश्चित हुआ, कि मैं यशपाल की वह मोटर-साइकिल, जिस पर सवार होकर वह वाँयसराय की ट्रेन उड़ाने के लिए गया था, छिपा आऊँ; और भगवतीचरण कॉङ्ग्रेस के अहिंसात्मक आन्दोलन सम्बन्धी प्रस्ताव के उत्तर में एक पर्चा लिखें, और वह



पर्चा स्वाधीनता दिवस के अवसर पर अर्थात् २६-१-३० को वितरण किया जाय।

बी० पी० जैन अजमेर के अर्जुनलाल सेठी के यहाँ से रिवॉल्वर लेकर लौट आए। एक सप्ताह के बाद मैं और बी० पी० जैन एक दिन के लिए अजमेर गए। मैंने पहले ही मदनगोपाल को अपने आने के सम्बन्ध में तार दे दिया था।

## मोटर-साइकिल

यशपाल ने निगम के कमरे में अपनी मोटर-साइकिल रक्की थी। भवानीसिंह, भवानीसहाय, बी० पी० जैन तथा मैंने यह निश्चित किया कि साइकिल के कल-पुर्जे खोल डाले जायँ, और उसका प्रधान भाग बी० पी० जैन के द्वारा रामचन्द्र शर्मा के पास भेज दिया जाय। कुछ पुर्जे नष्ट कर दिए जायँ और शेष निगम को, बेंचने के लिए दे दिया जाय। इस निश्चय के अनुसार बी० पी० जैन साइकिल की इंजिन और मेगनेटो रामचन्द्र शर्मा के यहाँ रख आए, जो उस समय 'असली घी स्टोर्स' में रहते थे। अन्य कल-पुर्जे निगम के पास रहे। यह साइकिल यशपाल ने ३२०) रुपए में दिल्ली के वाल्टर लॉक्स एण्ड को० के यहाँ से १९२५ में खरीदी थी। १९३० के जनवरी के मध्य में भगवतीचरण ने ख्यालीराम से मेरा परिचय कराया। मुझे बताया गया कि ख्यालीराम भी दल के सदस्य हैं।

रामचन्द्र शर्मा ने आज़ाद के लिए हुए १५०) रुपए से इलाही बरकश को दूकान से एक ३०० नं० का सेवेज़ राइफल खरीदा।

जनवरी, १९३० के तीसरे सप्ताह में, कानपुर के निगम का तार पाकर, मैं वहाँ गया और Philosophy of the Bomb नामक पर्चे अपने साथ लेता आया। दिल्ली पहुँच कर मैंने अपना असबाब प्रेमदत्त के यहाँ छोड़ दिया और सिरकी बाज़ार में भवानीसहाय के मकान पर गया। दूसरे ही दिन मैंने भवानीसहाय को वे पर्चे दे दिए।

२४-१-३० को निगम के कमरे में, भवानीसिंह और निगम के साथ पर्चे के वितरण के सम्बन्ध में मैंने बहस की। भवानीसिंह, विश्वम्भरदयाल, भगीरथ, भवानीसहाय, ख्यालीराम गुप्त, बी० पी० जैन आदि २५-१-३० को पर्चे वितरण करने के पक्ष में थे।

मैंने हज़ारीलाल को मोटर चलाना सीखने के लिए अम्बाला भेज दिया।

## मदनगोपाल

२६-१-३० को मैं अजमेर गया और मदनगोपाल के यहाँ १५ दिनों तक ठहरा रहा। वहाँ मैंने अपना नाम बदल कर कामताप्रसाद रख लिया था। मदनगोपाल को मैंने अपने दल का सदस्य बना लिया। फरवरी, १९३० के दूसरे सप्ताह में मैं दिल्ली लौट आया, और दूसरे ही सप्ताह अपने दल की एक सभा में उपस्थित होने के लिए कानपुर चला गया। सभा में यह निश्चित किया गया, कि लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्तों को मुक्त करने का प्रयत्न किया जाय। यह भी निश्चित किया गया, कि यशपाल पन्जाब का सङ्गठनकर्ता बनाया जाय और महाराष्ट्र तथा बङ्गाल के प्रतिनिधि हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एशोसिएशन की जनरल कौन्सिल में सम्मिलित किए जायँ। भगवतीचरण ने लाहौर षड्यन्त्र केस के कैदियों को बचाने के मनसूबे को लिख डाला। मैं दूसरे ही दिन दिल्ली लौट आया। १९३० के फरवरी मास के अन्त में मैंने होस्टल छोड़ दिया और सिरकी बाज़ार में भवानीसहाय के मकान पर अप्रैल १९३० के अन्त तक रहा।

मार्च में मदनगोपाल अजमेर से दिल्ली आया, और एक-दो दिन रह कर, एक हवाई पिस्तौल लेकर वह चला

गया। पिस्तौल उसने पीछे लौटा दी थी। इसी महीने के मध्य में मैं, आज़ाद, भवानीसहाय, बी० पी० जैन और भवानीसिंह के साथ नलगढ़ा गया और रामचन्द्र शर्मा के डेयरी फॉर्म में ठहरा। हम लोगों ने अपने-अपने नाम बदल लिए थे। वहीं रामचन्द्र शर्मा की राइफल से हम निशाना मारने का अभ्यास करने लगे। इसके बाद मैं दिल्ली लौट आया और छैलबिहारी से मिला। पीछे उसे अपने दल का सदस्य बना लिया। मार्च महीने के अन्त में मैं अजमेर गया और वहाँ से मदनगोपाल के साथ, दल का एक केन्द्र स्थापित करने के इरादे से जयपुर गया। एक-दो दिन के बाद मैं दिल्ली लौट आया।

हज़ारीलाल अम्बाले से मोटर का काम सीख कर आ गए। अप्रैल के दूसरे सप्ताह में आज़ाद, छैलबिहारी, हज़ारीलाल, विश्वम्भरदयाल और भवानीसिंह गोली चलाने का अभ्यास करने के लिए गढ़वाल चले गए। एक सप्ताह के बाद मैं अजमेर जाकर मदनगोपाल और उसके मित्र रुद्रदत्त से मिला और रुद्रदत्त को अपने दल का सदस्य बना लिया। इसके बाद मैं दिल्ली लौट आया। इसी समय मैं कुदसिया गार्डन में आज़ाद और भगवतीचरण से मिला और इस बात को सलाह की, कि मज़दूर कैदियों को मुक्त करने के लिए, तनख्वाह बाँटने के दिन रेलवे क्लियरिङ्ग एकाउण्ट-ऑफिस पर डाका डाला जाय। किन्तु यह षड्यन्त्र सफल नहीं हो सका।

आज़ाद से मुझे यह मालूम हुआ, कि वॉयसराय की ट्रेन उड़ाने के सम्बन्ध में ख्यालीराम ने भगवतीचरण

लगभग दो वर्षों में होने वाली इन सारी घटनाओं को सिलसिलेवार याद रखने के लिए—जिसमें प्रत्येक दिन की घटना का उल्लेख तारीख और समय के साथ किया गया है—पाठकों को सरकारी गवाह कैलाशपति की स्मरण-शक्ति की तारीफ़ करनी पड़ेगी। —सं० 'भविष्य'

को एसिड आदि से सहायता पहुँचाई थी। मई के आरम्भ में आज़ाद, यशपाल तथा अन्य कई लोग गोली चलाने का अभ्यास करने के लिए नलगढ़ा चले गए।

## कैदियों को मुक्त करने का प्रयास

मैं कानपुर गया और बी० बी० तिवारी से एक बम-सेल माँग लाया। कुछ दिनों बाद लाहौर षड्यन्त्र केस के कैदियों को, छुड़ाने के बाद उनके रहने का प्रबन्ध करने के लिए मैं भवानीसहाय के साथ जयपुर गया। वहाँ से दिल्ली लौट आया।

मैं ख्यालीराम की दूकान से एक ड्रङ्क लाया। खोलने पर देखा कि उसमें ४ बम तथा कुछ अन्य चीज़ें थीं। भगवतीचरण कैदियों को मुक्त करने के सम्बन्ध में लाहौर चले गए। मैं आज़ाद के ज़रिए रमेशभूषण से मारवाड़ी धर्मशाला में मिला और मैंने उसका पता लिख लिया। मैंने हरद्वारीलाल से आज़ाद के लिए एक कोट और एक कमीज़ बनवा लेने के लिए कहा। उसने मोहन ब्रदर्स से इन चीज़ों को तैयार करा लिया। २०-५-३० को कैदियों को मुक्त करने के सम्बन्ध में, आज़ाद मदनगोपाल के साथ लाहौर गया।

ख्यालीराम गुप्त ने रामलाल से मेरा परिचय कराया और यह भी बतलाया, कि वह हमारे दल का सदस्य है। उसने पिकरिक एसिड बनाने की तरीक़ीब जानने की इच्छा प्रकट की।

कुछ समय बाद ख्यालीराम के ज़रिए कुदसिया गार्डन में आसफ़ से मेरा परिचय हुआ। ख्यालीराम ने

मुझे यह बतलाया कि आसफ़ भी हमारे दल का सदस्य है। आसफ़ ने मुझे बतलाया कि बम फट जाने की वजह से भगवतीचरण की मृत्यु हो गई है और वैशम्पायन ज़ख्मी हो गया है। उसने यह भी कहा कि आज़ाद तथा कुछ अन्य लोग लाहौर षड्यन्त्र केस के कैदियों को छुड़ाने के लिए गए हैं, और उसे रुपए इकट्ठा करने के लिए दिल्ली भेजा गया है। तीन या चार दिन के बाद आसफ़ लाहौर चला गया।

## यूनिवर्सल डग स्टोर्स

मैं हज़ारीलाल के ज़रिए यूनिवर्सल डग स्टोर्स के कम्पाउण्डर बालकृष्ण तथा प्रोप्राइटर बाबूराम से मिला। हज़ारीलाल उस समय बालकृष्ण के साथ रहता था। बालकृष्ण ने मुझे कान-दर्द की दवा दी। वे लोग हमारी संस्था से सहानुभूति रखते थे। बाबूराम ने बम बनाने के लिए हमें एसिड देना स्वीकार किया। उसने मई से अगस्त तक हमें नाइट्रिक एसिड, सल्फ़रिक एसिड आदि सामान दिए और उसे १४०) या १५०) रुपए जून में तथा ६००) अगस्त में दिए गए।

मैंने गिरिवरसिंह से भवानीसहाय को अपने प्रेस में भर्ती कर लेने के लिए कहा, क्योंकि इससे हमारी संस्था को बहुत लाभ पहुँचता। मैं पहले ही से जानता था कि गिरिवरसिंह हमारे दल का सदस्य है। भवानीसहाय भी गिरिवरसिंह के साथ एक ही प्रेस में काम करने लगा।

जून के आरम्भ में मैं निगम के मकान पर वैशम्पायन से मिला और उसके साथ कुदसिया गार्डन में गया। आसफ़ और धन्वन्तरि (प्रेम) भी वहाँ मिले।

आज़ाद ने लाहौर से लौट कर सरदार भगतसिंह और दत्त को जेल-मुक्त करने में किस प्रकार असफलता मिली, इसका वृत्तान्त कह सुनाया। उसने यह भी कहा कि भावलपुर की बम-दुर्घटना के बाद यशपाल ने मदनगोपाल को कुलू और छैलबिहारी को शिमला भेज दिया है, जहाँ वे दोनों अपना नाम बदल कर नौकरी कर रहे हैं।

## बम-फैक्टरी

निगम के मकान पर एक बैठक हुई। उसमें मैं उपस्थित था। वहाँ यह निश्चय किया गया कि एक फ़ैक्टरी खोली जाय, जिसमें दिखाने के लिए तो साबुन बनाए जायँगे, किन्तु वास्तव में वहाँ पिकरिक एसिड तथा इसी प्रकार के अन्य पदार्थ बनाए जायँगे। बी० पी० जैन को उसका मैनेजर नियुक्त किया गया। यह भी निश्चित किया गया कि आज़ाद कानपुर में बम बनाने की एक फ़ैक्टरी खोले। इस मीटिंग में बी० पी० जैन, निगम, काशीराम, आज़ाद और वैशम्पायन उपस्थित थे।

जून के तीसरे सप्ताह में मैं, भगीरथ के ज़रिए हरकेश से मिला। हरकेश को हमारी संस्था के उद्देश्यों से सहानुभूति थी, और वह सदस्य भी बनना चाहता था। मैं आज़ाद और धन्वन्तरि से कुदसिया गार्डन में मिला और वहाँ यह निश्चय किया गया कि १-७-३० को रेलवे क्लियरिङ्ग एकाउण्ट्स ऑफिस पर डाका डाला जाय। इसी निश्चय के अनुसार १-७-३० को आज़ाद, लेखराम, धन्वन्तरि, काशीराम, विद्याभूषण और वैशम्पायन, जो इस मामले में भाग लेने वाले थे, न्यूहोस्टल में भवानीसिंह के कमरे में इकट्ठे हुए। किन्तु उस दिन पं० मोतीलाल नेहरू की गिरफ़्तारी के कारण शहर में हड़ताल मनाई गई, इस कारण हमें सफलता नहीं मिल सकी।

## गडोडिया स्टोर्स डकैती

६-७-३० को आज़ाद, लेखराम, धन्वन्तरि, काशीराम, विद्याभूषण न्यूहोस्टल में भवानीसिंह के कमरे में उपस्थित हुए और वहीं उन्होंने गडोडिया स्टोर्स पर



डाका डालने का निश्चय किया। इस निश्चय के अनुसार आज़ाद, लेखराम, काशीराम, धन्वन्तरि, विद्याभूषण और विश्वम्भरदयाल ने डाका डाका और १३,०००) रुपया लूटा।

८-७-३० को मदनगोपाल को आने के लिए तार भेजा गया। उसी दिन वह दिल्ली आ पहुँचा। कुछ दिनों के बाद वह विश्वम्भरदयाल को साथ लेकर अजमेर चला गया। वह अपने साथ एक पिस्तौल भी लेता गया, जो मैंने कामताप्रसाद के नाम से इलाहीबख्श की दूकान से खरीदा था। मैंने ख्यालीराम को बम आदि बनाने के लिए अपरेटस खरीदने के लिए १००) रुपए दिए।

१०वीं जुलाई को आज़ाद, धन्वन्तरि और मैं एडवर्ड्स पार्क में इकट्ठा हुए और गडोडिया डकैती के रुपयों का व्यय किस प्रकार किया जाय, इस पर बहस हुई। अन्त में यह निश्चित हुआ कि मुझे २,५००), बी० पी० तिवारी को ७,५००) और धन्वन्तरि को ३,०००) रुपए सङ्गठन-कार्य तथा बम की फ़ैक्टरी आदि खोलने के लिए दिया जाय।

बी० पी० जैन और यशपाल ने ऋणदेवाला रोड पर एक मकान किराए पर लिया। प्रकाशो और गिरिवरसिंह (गङ्गाराम) भी फ़ैक्टरी में रहने के लिए आए। फ़ैक्टरी का नाम 'दी हिमालयन ट्रायलेट्स' रखा गया था। यशपाल ने तार देकर एक वैज्ञानिक को भी बुला लिया। हरद्वारीलाल ने फ़ैक्टरी के काम के लिए काठ के कुछ सामान दिए। उसे यह अच्छी तरह मालूम था कि बम आदि के बनाने के लिए ही इन चीज़ों की आवश्यकता है। फ़ैक्टरी में पिकरिक एसिड और गन-कॉटन तैयार किए जाते थे। इसके लिए यशपाल, वैज्ञानिक और मैं एसिड लाया करता था। बी० पी० जैन, गिरिवरसिंह और मुसम्मात प्रकाशो इस काम में हमें सहायता दिया करते थे। ख्यालीराम ने कुछ और अपरेटस खरीदे। मैं गिरिवरसिंह की सहायता से बाबूराम के यहाँ से एसिड आदि लाया करता था।

ख्यालीराम के सलाह देने पर रामलाल ने संस्था के लाभ के ख्याल से खुफ़िया-विभाग में नौकरी कर ली। मैं अपनी संस्था की एक शाखा खोलने के इरादे से भगीरथ के साथ जयपुर गया, और मैंने मदनगोपाल के ज़रिए उसके वहाँ रहने का प्रबन्ध कर दिया।

## विष बनाने का कार्य

अगस्त के प्रथम सप्ताह में पिकरिक एसिड बनाने का कार्य फिर शुरू किया गया। वैज्ञानिक, यशपाल, मुसम्मात प्रकाशो, गिरिवरसिंह और बी० पी० जैन इसमें भाग लेते थे। ३० पाउण्ड के लगभग पिकरिक एसिड फ़ैक्टरी में तैयार की गई थी। मिट्रोग्लिसरिन और पिक्रो-क्लोरीन भी वहाँ तैयार किए जाते थे। बी० पी० जैन विष तैयार करने के लिए क्रोटन सीड्स भी ले आए थे।

इसी समय मैंने मदनगोपाल को दिल्ली आने के लिए तार दिया, किन्तु उसने तार दिया कि मैं आने में असमर्थ हूँ। तब मैंने रुद्रदत्त के हाथ एक रिवाल्वर, गोलिएँ, कुछ पुस्तकें तथा एक बम उसके पास भेज दिए। आज़ाद को मैंने एक तार दिया कि ३-८-३० को होने वाली सभा स्थगित कर दी जाय।

मैंने इलाहीबख्श की दूकान से एक और हवाई पिस्तौल खरीदी।

## विप्लव की तैयारी

६ठी या ७वीं अगस्त को मैं और धन्वन्तरि संस्था की मीटिंग में उपस्थित होने के लिए कानपुर गए। यह निश्चय किया गया था कि यशपाल को उसके कुकर्मों के लिए गोली मार दी जाय और उसके स्थान पर धन्वन्तरि को नियुक्त किया जाय। यह भी निश्चय किया गया कि अब विप्लव का कार्य शुरू कर देना चाहिए।

कानपुर में रहते समय मैंने आज़ाद विद्याभूषण और वैशम्पायन को बलभद्र के यहाँ रहते देखा। वहीं वे हथियार आदि भी थे, जो गडोडिया डकैती के रुपए से आज़ाद ने खरीदे थे।

मैं दिल्ली लौट गया और वहाँ से मैंने यशपाल को कानपुर भेजा, किन्तु दूसरे ही दिन वह जिन्दा लौट आया।

११ वीं मई का समाचार है कि आज १० बज कर ५० मिनट पर अभियुक्तों ने क्रान्तिकारी नारे लगाते हुए अदालत के कमरे में प्रवेश किया। 'अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जिन्दाबाद' 'महारानी लक्ष्मीबाई जिन्दाबाद', 'ताँतिया टोपी जिन्दाबाद' आदि नारों से सारी अदालत गूँज उठी। अभियुक्तों ने सन् ५७ के विप्लवी नेताओं के प्रति आदरभाव प्रदर्शित किया, और दो राष्ट्रीय गान भी उन्होंने गाए। आज अभियुक्तों के लिए देबिल-कुर्सी का प्रबन्ध किया गया था, जिसमें उन्हें अपने मामले में भाग लेने में सुविधा हो।

## खुफ़िया पुलिस की निगरानी

मि० फ़रीदुलहक़ अन्सारी ने अदालत से इस बात की शिकायत की, कि अभियुक्तों के सम्बन्धियों तथा उनके वकीलों को खुफ़िया पुलिस वाले बहुत तज़ करते हैं। अभियुक्तों के मामले की पैरवी के लिए जो कमिटी क्रायम की गई है, उसके सदस्यों तथा सेक्रेटरी पर भी कड़ी निगरानी रखी जाती है। यहाँ तक कि जिस दूकानदार से अभियुक्तों के लिए जलपान खरीदा गया था, वह भी खुफ़िया वालों की निगरानी से नहीं बच सका है। अभियुक्तों के वकील ने खुफ़िया वालों से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की।

## मि० पील की जिरह

मि० आसफ़अली के प्रश्न करने पर मि० पील ने कहा कि लेमिज़न रोड शूटिंग केस में वैशम्पायन नाम के दो अभियुक्त थे, बी० आर० वैशम्पायन और दूसरे जी० आर० वैशम्पायन। केवल जी० आर० वैशम्पायन का मामला वहाँ चला, किन्तु वह छोड़ दिया गया। गवाह ने कहा कि मैं समझता हूँ कि वास्तव में बी० आर० वैशम्पायन के विरुद्ध, जो इस मामले का अभियुक्त है—अभियोग उपस्थित करने का विचार किया गया था। किन्तु मुझे यह नहीं मालूम कि उसके विरुद्ध अभियोग हटा लिया गया या उपस्थित ही नहीं किया गया।

प्रश्न—क्या आपको निश्चय है कि इस मामले के अभियुक्त वैशम्पायन का नाम बी० आर० वैशम्पायन है?

उत्तर—हाँ, हम लोग उसे बी० आर० वैशम्पायन ही कहते हैं।

## मि० अब्दुल अज़ीज़ की हत्या

गवाह ने मि० अब्दुल अज़ीज़ की हत्या के सम्बन्ध में कहा कि जहाँ तक मैं जानता हूँ, पंजाब के पुलिस सुपरिण्टेण्डेंट मि० अब्दुल अज़ीज़ की हत्या के सम्बन्ध में किसी पर मामला नहीं चला है। जहाँ तक मुझे याद है, उस समय की रिपोर्टों से पता चला था कि कुछ ऐसे गवाह भी हैं, जिन्होंने मि० अब्दुल अज़ीज़ के हत्यारे को घटना के बाद भागते देखा था। यह हत्या अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में हुई थी।

इसके बाद गवाह ने क्रान्तिकारियों के पिकरिक एसिड आदि बनाने के सम्बन्ध में अपना बयान दिया। उसने कहा, कि मैं नहीं जानता हूँ कि साबुन बनाने के लिए पिकरिक एसिड की आवश्यकता होती है या नहीं? साबुन के कारवार के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता। मैं यह भी नहीं जानता, कि किसी व्यापारिक कार्य में पिकरिक एसिड का व्यवहार बिना जा सकता है या नहीं? कानपुर की बम-फ़ैक्टरी में मैं नहीं गया था।

प्रश्न—क्या अपनी जाँच में आपको इसका सन्तोष-जनक पता लगा है कि गडोडिया स्वदेशी स्टोर्स में डकैती होते समय कैलाशपति घटनास्थल पर मौजूद नहीं था?

सरकारी वकील ने इस प्रश्न को अनुचित ठहराया। उन्होंने कहा कि गवाह को इस विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है।

अदालत ने भी इस प्रश्न को अनुचित ठहराया। इसके बाद गवाह ने कहा कि मुख़बिर और अभियुक्तों के अलावा, मेरे इस मामले का चार्ज लेने के पहले दिल्ली की खुफ़िया पुलिस ने, भगवतदयाल एम० ए०, प्रभास बैनर्जी, रघुवीरसिंह, भोलानाथ और अमीरसिंह को गडोडिया स्टोर्स डकैती के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया था। हमीद खाँ मेरी आज्ञा से गिरफ़्तार किया गया था। मेरा ख्याल है कि मुत्सदीलाल भी मेरी ही आज्ञा से गिरफ़्तार किया गया था। ये ७ अभियुक्त चलान बनने के पहले ही छोड़ दिए गए थे। हमीद खाँ और मुत्सदीलाल कैलाशपति के बताने पर गिरफ़्तार किए गए थे।

प्रश्न—बी० बी० तिवारी, एम० पी० अवस्थी, के० सी० गुप्त, राजेलाल और भगवानदास के नाम भी कैलाशपति ने बतलाए हैं; इस मामले में वे क्यों नहीं अभियुक्त बनाए गए?

गवाह ने उत्तर में कहा कि मैं इस मामले को दिल्ली की घटनाओं तक ही परिमित रखना चाहता हूँ। भगवानदास भुसावल केस में लम्बी कैद की सज़ा भुगत रहा है।

## प्रान्तीय सङ्गठनकर्ता

प्रश्न—कैलाशपति ने कहा है कि बी० बी० तिवारी संयुक्त-प्रान्त के सङ्गठनकर्ता थे। आपने उन्हें गिरफ़्तार क्यों नहीं किया; वे क्यों छोड़ दिए गए?

उत्तर—कैलाशपति के बयान में इस बात का पूरा प्रमाण नहीं है, कि बी० बी० तिवारी का दिल्ली की घटनाओं से सम्बन्ध है। उससे केवल यही पता चलता है कि वाँयसराय की ट्रेन उलटने के सम्बन्ध में जो मीटिंग हुई थी, बी० बी० तिवारी वहाँ उपस्थित थे।

प्रश्न—राजेलाल क्यों नहीं गिरफ़्तार किए गए?

उत्तर—उनकी गिरफ़्तारी के लिए कोई प्रमाण नहीं मिला।

## प्रोफ़ेसर निगम

प्रश्न—क्या यह सच है कि पहले आपने प्रोफ़ेसर निगम को इस मामले में अभियुक्त नहीं बनाने का विचार किया था?

उत्तर—उनकी गिरफ़्तारी के लिए उचित प्रमाण मिलने पर मैंने उन्हें अभियुक्त बनाने का विचार किया था।

प्रश्न—किस क़ानून के अनुसार आपने तथा आपके सातहत्तों ने कैलाशपति से प्रश्न किए थे?

उत्तर—क्रिमिनल प्रोसीजर कोड के १४वें अध्याय के अनुसार।

## प्रतिवादी पक्ष के वकील की माँगें

मि० आसफ़अली ने अदालत के सामने निम्न-लिखित माँगें पेश कीं :—

(१) खुफ़िया पुलिस द्वारा लिए गए कैलाशपति के बयान के नोट।

(२) मि० पील के द्वारा सम्पादित इन नोटों की नक़ल; और

(३) सिटी मैजिस्ट्रेट के सामने दिए गए कैलाशपति का बयान।

अध्यक्ष—असली नोट कहाँ हैं? क्या वह पुलिस की डायरी का एक भाग है?

कोर्ट-इन्स्पेक्टर—वे जाँच करने वाले अफ़सरों के पास हैं।



सरकारी वकील ने कहा कि सभी चीजें उचित समय पर दी जाएंगी।

गवाह ने आगे कहा कि तलाशियों के समय जो किताबें मिली हैं, मैंने पढ़ीं नहीं हैं। उनमें से कुछ किताबें सरकार द्वारा जप्त हैं। मैंने हेरलड लस्की की 'कम्यूनिज्म' नामक पुस्तक नहीं पढ़ी है।

प्रश्न—आपको सी० आई० ई० की पदवी कब मिली थी ?

उत्तर—१९२३ में

## चूड़ियाँ

इसके बाद अदालत के सामने वे चूड़ियाँ पेश की गईं, जो तलाशी लेते समय मिली थीं।

प्रश्न—इन चूड़ियों के विषय में ख़ास बात क्या है ?

उत्तर—इससे यह पता चलता है कि घर में कोई स्त्री भी रहती थी।

प्रश्न—यह भी सम्भव है, कि कोई लड़का इन्हें कहीं से उठा लाया हो ?

उत्तर—हाँ, यह भी हो सकता है।

गवाह ने ऐसा कोई विचार नहीं प्रकट किया, जिससे विदित हो कि ये चूड़ियाँ किसी ऐसी स्त्री की हैं, जिसका इस मामले से सम्बन्ध है।

श्री० एस० एन० बोस के जिरह करने पर गवाह ने कहा कि सम्भवतः ३०वीं या ३१वीं अक्टूबर को सिविल लाइन की पुलिस की हिरासत में मैं कैलाशपति से मिला था।

प्रश्न—क्या आपने उससे पूछा था कि उस हिरासत में वह कैसे आया ?

उत्तर—नहीं।

गवाह ने कहा कि पहली बार मैंने आध घण्टे तक उससे बातें कीं। मैंने कोई प्रश्न नहीं पूछा।

प्रश्न—किस विषय पर बातचीत हुई थी ?

उत्तर—मेरे मातहतों के पूछताछ करने के पहले कैलाशपति मुझसे मिलना चाहता था। वह इस बात का प्रमाण चाहता था, कि मेरे मातहत के अक्रसर किसी जवाबदेह-अक्रसर की आज्ञा से यह पूछताछ रहे हैं या नहीं ? जाँच समाप्त होने तक कैलाशपति पुलिस की हिरासत में था।

गवाह ने कहा कि मैं केवल झण्डेवालों की तलाशी के समय उपस्थित था। वहाँ अदालत में पेश की हुई इन चूड़ियों के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं थी।

इसके बाद अदालत लन्च के लिए बर्खास्त कर दी गई।

लन्च के बाद फिर मि० पील की जिरह शुरू हुई। मि० बोस के प्रश्न करने पर गवाह ने कहा कि मि० निगम मेरे इस मामले का चार्ज लेने के बाद गिरफ्तार किए गए थे। ख्यालीराम और वैशम्पायन भी मेरे चार्ज लेने के बाद ही गिरफ्तार किए गए हैं। पोतदार, मेरे कहने पर सॉली में गिरफ्तार किए गए हैं। कुछ अभियुक्त ४थी नवम्बर को गिरफ्तार किए गए हैं। मेरे चार्ज लेने के समय इन अभियुक्तों के रिमाण्ड की अवधि ख़तम हो चुकी थी। मुझे उनके रिमाण्ड और चलान आदि के सम्बन्ध में कुछ नहीं मालूम है। मैं नहीं जानता, कि मेरे चार्ज लेने के पहले स्थानीय पुलिस ने क्या-क्या किया था। जहाँ तक मुझे याद है, मि० ईसर और मियाँ जगदीशसिंह ने मामले की मुलतवी स्वीकार की थी। मैंने मियाँ जगदीशसिंह के पास कोई अपूर्ण चलान नहीं भेजा था। धन्वन्तरि के चलान को छोड़ कर, अदालत का वर्तमान चलान पहला ही चलान है। मामले की मुलतवी के लिए मैं कभी अदालत में नहीं

गया था। उस मामले के लिए कोर्ट-इन्स्पेक्टर सरदार भागसिंह जिम्मेदार हैं। सरदार भागसिंह मामले को मुलतवी कराने के सम्बन्ध में मुझसे सलाह लिया करते थे। उस समय, धन्वन्तरि का मामला मि० ईसर के सामने, तथा अन्य अभियुक्तों के मामले मियाँ जगदीशसिंह के सामने पेश थे।

## मुखबिर की प्रेमिका

गवाह ने आगे कहा कि कैलाशपति के साथ मुझ-भ्रात कलावती नाम की एक स्त्री भी गिरफ्तार की गई थी। उसके पति का नाम राजबलिप्रसाद था। मैं नहीं जानता, वह कितने दिनों तक हिरासत में रखी गई थी।

प्रश्न—वह कौन थी ?

उत्तर—वह कैलाशपति की प्रेमिका थी। ( हास्य-ध्वनि ) गवाह ने कहा कि वह मुझसे मिली थी।

## कैलाशपति किस प्रकार मुखबिर हुआ

प्रश्न—वह किस लिए आपको देखने आई थी ?

उत्तर—दिल्ली पुलिस के अपने प्रति किए गए दुर्व्यवहारों की शिकायत करने के लिए।

प्रश्न—उसने आपसे क्या शिकायत की थी ?

## बलात्कार करने का अभियोग

उत्तर—उसने कहा कि उसके साथ बलात्कार किया गया था।

प्रश्न—क्या उसने किसी अक्रसर का नाम भी बतलाया था ?

अध्यक्ष—यह प्रश्न किस प्रकार उचित हो सकता है मि० बोस ?

मि० बोस—यह दिखाने के लिए, कि कैलाशपति किस प्रकार सरकारी गवाह बना।

मि० पील—उसने इस सम्बन्ध में खुफिया विभाग के डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट लाला नन्दकिशोर की शिकायत की थी।

मि० बोस—यह शिकायत तो बहुत भीषण है।

गवाह—यह शिकायत उसके साथ बलात्कार करने के सम्बन्ध में है।

गवाह ने आगे कहा कि कैलाशपति ने उसके सम्बन्ध में मुझसे कुछ नहीं कहा था। वह कैलाशपति के साथ, एक ही मकान में गिरफ्तार की गई थी।

प्रश्न—उसकी रिहाई के लिए कौन जिम्मेदार है ?

उत्तर—मैं उसकी रिहाई के लिए जिम्मेदार नहीं हूँ। मैं यह भी नहीं जानता कि किस अक्रसर ने उसे रिहा किया था। सम्भवतः डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट लाला नन्दकिशोर ने ही उसे रिहा किया था। गवाह ने आगे कहा कि जिस समय कैलाशपति पुलिस की हिरासत में था, उस समय अनेक प्रकार के लोग उससे मिलने जाया करते थे। इनमें अधिकांश पुलिस के अक्रसर और उसके सम्बन्धी होते थे। कलावती ने भी एक या दो बार उससे भेंट की थी।

## मुखबिर किले में किस प्रकार रहता था

इसके बाद गवाह ने बतलाया कि जनवरी के प्रथम सप्ताह में, मुखबिर कैलाशपति किले में भेज दिया गया।

वहाँ पुलिस कॉन्स्टेबलों की उस पर कड़ी निगरानी रहती थी। उसको वहाँ हटाने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर थी। २५वीं अप्रैल तक वह वहाँ रखा गया। इस बीच में बहुधा खुफिया पुलिस वाले उससे मिला करते थे।

## इस समय मुखबिर कहाँ रखा गया है ?

गवाह ने आगे कहा कि कैलाशपति इस समय यूरो-पियन वार्ड में रखा गया है। गवाह ने कहा कि २५वीं अप्रैल के बाद मैं उससे कई बार मिला हूँ। पीछे गवाह ने अपनी भूल सुधार कर कहा, कि २५वीं अप्रैल के बाद मैं उससे एकदम नहीं मिला हूँ, खुफिया पुलिस का कोई भी अक्रसर उससे नहीं मिला है।

इसके बाद गवाह ने बतलाया कि मुखबिर बाल-कृष्ण नवम्बर के पहले सप्ताह में तथा मुखबिर डी० वी० तैलङ्ग अन्तिम सप्ताह में गिरफ्तार किए गए थे। मुखबिर मदनगोपाल नवम्बर के मध्य में गिरफ्तार किया गया था।

## फोटो की किताब

गवाह ने आगे बतलाया कि खुफिया पुलिस के पास दिल्ली और लाहौर केस के फ़रार अभियुक्तों की फ़ोटो और विवरणों की एक किताब है। यह किताब नवम्बर १९३० के अन्त में निकाली गई थी। मैंने उसे दिसम्बर में देखा था।

प्रश्न—क्या उस पुस्तक की एक प्रति आप यहाँ पेश करने के लिए तैयार हैं ?

उत्तर—नहीं।

प्रश्न—यदि अदालत ऐसा करने की आज्ञा दे तो आप पेश करेंगे ?

उत्तर—यदि दिल्ली की खुफिया पुलिस मुझे किताब की एक प्रति देगी, तो मैं पेश कर सकता हूँ।

मि० बोस ने अदालत से उक्त पुस्तक की एक प्रति पेश को जाने की आज्ञा देने की प्रार्थना की।

प्रश्न—क्या वर्तमान अभियुक्तों में से भी किसी की फ़ोटो उसमें है ?

उत्तर—केवल वी० जी० वैशम्पायन की फ़ोटो उसमें है।

प्रश्न—क्या निगम की फ़ोटो भी उसमें है ?

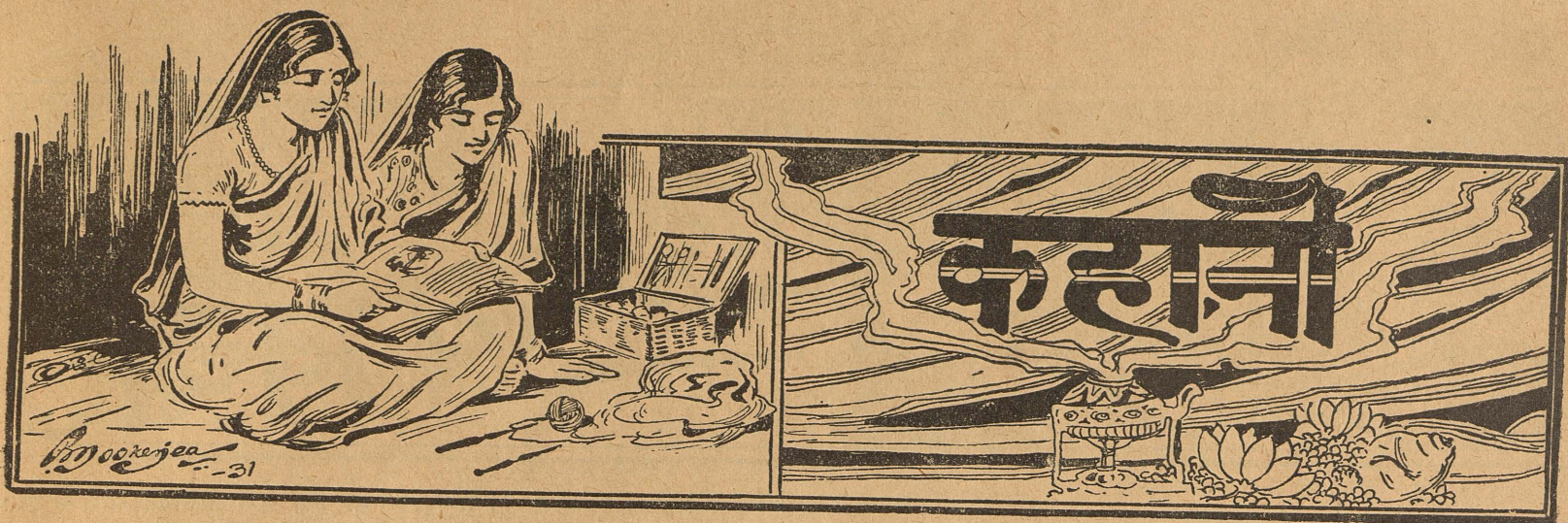
गवाह ने पहले तो उत्तर दिया कि मुझे याद नहीं है, फिर पीछे कहा कि निगम की फ़ोटो उसमें नहीं है।

( क्रमशः )

—मिदनापुर का ७वीं मई का समाचार है, कि मि० पेडु के हत्या-काण्ड के १४ अभियुक्त आज सदर सब-डिविजनल अक्रसर के सामने पेश किए गए। कोर्ट-इन्स्पेक्टर ने अदालत के सामने कहा, कि ऐसे प्रमाण मौजूद हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि यह हत्या-काण्ड विप्लवी-दल के षड्यन्त्र का फल है, और अभियुक्तों में से ७ व्यक्ति क्रान्तिकारी संस्था के सदस्य हैं। अदालत के सामने यह भी कहा गया कि ऐसे गवाह भी पेश किए जा सकते हैं, जिन्होंने अपनी आँखों से विमलदास गुप्त को मि० पेडु की हत्या करते देखा है। विमलदास गुप्त फ़रार है, किन्तु ज्योतिजीवन घोष हत्या के दिन तथा उसके पहले दिन विमलदास के साथ देखा गया था। निम्न-लिखित व्यक्तियों का क्रान्तिकारी-दल का सदस्य होना बतलाया जाता है :—चीरोदकुमार दत्त, प्रफुल्लकुमार त्रिपाठी, ब्रजकुमार चक्रवर्ती, अमरचन्द्र चटोपाध्याय, परिमल राय, फणिभूषण कुन्दु और शचीन्द्रनाथ मैती।

कुछ अभियुक्तों को १०,००० रुपये की जमानत पर छोड़े जाने की आज्ञा दी गई है।





[ पाण्डेय बेचन शर्मा, "उग्र" ]

## व्यापारी

( काव्य-कहानी )

मैं छोटा-सा था व्यापारी,  
हलका अपना खेवा था,  
मैं माटी लेकर निकला था !  
मिसिरी थी ना मेवा था ।

❀

और, वहाँ बाज़ार लगा था !  
और वहाँ बाज़ार लगा था  
मन-मोहन का मेला था,  
रतन, जवाहर, हीरा, मोती,  
पूरा रेला-पेला था !

गुल-बुलबुल-बहार विकते थे,  
रङ्ग बँधा अलबेला था ।  
मैं माटी लेकर निकला था  
सब में एक—अकेला—था !

❀

क्रय-विक्रय विस्मय-मय विनिमय !  
चमक-दमक की चाह सभी को  
मेरा सौदा मैला था,  
नज़र नहीं उस पर टिकती थी  
गो, चरणों में फैला था !

टूट-टूट कर रूप-रङ्ग पर—  
मोहकता के अङ्ग-अङ्ग पर—  
हाव-भाव का ज़ोर-शोर था  
घर-घर, दर-दर, नर-नर, सर-सर !

❀

मुझ पर नहीं निगाह किसी की.....  
आह ! पड़े जब एक-एक कर  
जाते, नज़र अनेक—  
अपनी-अपनी रुचि की गठरी  
बाँधे, सहित विवेक !

धनिक-वणिक यह गए, श्रमिक  
वह, उधर चले विद्वान् ;  
नृप यह गए ! कुँवर वह जाते,  
बाँध रहे सामान !!  
असफलता से मैं घबराया.....

❀

भर आया लहरीला-मानस  
—“हे मेरे भगवान !”  
ढीले हुए तार आँसू के,  
चलते, गोले-गान  
कहने लगे कहानी अपनी,

जिसमें थी असफलता घोर  
बड़ी वेदना-मय-नगण्यता  
उस बिखरी-माटी की ओर ।  
मैं माटी लेकर निकला था !

❀

वह आए भगवान !  
जब पूरव का हुआ उजाला  
पश्चिम के घर फैल,  
अन्धकार से आँख-मिचौनी  
लगा खेलने—मैल !  
तब, उस ओर, दिव्य-दल आया ।



[ पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ]

विधि-हरि-हर विख्यात  
—अपनी-अपनी शक्ति सँवारे—  
आए, करते बात—  
“भक्त के बस में हैं हम लोग !  
नहीं है मुक्त अमरता आह !!”

❀

मैं वि-भक्त-सा रहा घूरता  
भक्त-मण्डली हुई अधीर,  
पद-अनुरक्त दौड़ते आए  
सख्त-सुस्त कहने गम्भीर—  
“ए माटी वाले ! किर-किर क्यों  
यहाँ व्यर्थ फैलाता है ?

क्यों आँखों में धूल भोंकने  
इस बज़ार में आता है ?  
रहते हैं भगवान यहाँ, सुन !  
कर देवोंगे तेरा नाश—  
वह सहस्र-कर, वह सहस्र-पद,  
वह सहस्र-मन-बुद्धि-प्रकाश !”

❀

स-भय हुई मेरी निर्भयता...  
गले लिपट कर लगी उदासी  
करने हाहाकार—अपार,  
मानो चिपक गया छाती से  
वह, मैला, माटी का भार !  
“भाग...भाग !” मैं लगा सोचने—  
“जीवन हुआ अ-भाग—अ-भाग !  
राग-राग के राग अलापे  
फल में सुना—विराग-विराग !”

❀

भाग...भाग ! मैं लगा सोचने...  
“जग से भाग, भाग जग-मग से,  
डगमग-पग से ? क्या परवाह !  
चल रे—छोड़ ! मोह माटी का  
इसकी कहाँ किसी को चाह ?  
इसे पड़ी रहने दे योंही,  
जब यह जीवन पावेगी ;  
पुलक, पिघल, घुल-मिल कर  
खुद ही महा-मही हो जावेगी...”

❀

तब तुम—एकाएक ! पधारे...  
विकल-भाव से, कल-स्वभाव से  
तुम कुछ ढूँढ़ चले उस ओर  
जिधर, जगमगाती-मणियाँ थीं  
सन्ध्या को बतलातीं—भोर !  
देख रहा था मैं, दुत्कारे गए,  
पड़ी फटकार बहुत !  
था अचरज में, चाह रहे तुम  
क्या ऐसा—अलभ्य, अज्ञुत !  
तब तक तुम मेरे दिग आए.....

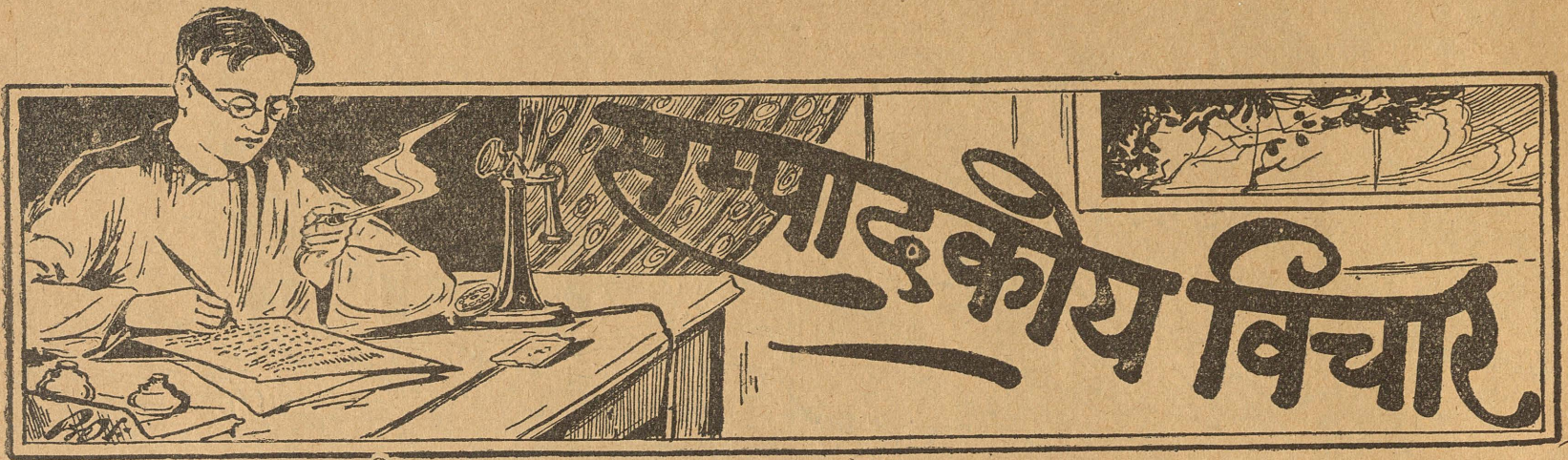
❀

मैंने देखा, थे तुम सुन्दर !  
केश तुम्हारे सुन्दर-तर  
बिखरे-सँवरे थिरक रहे थे  
लहरा कर, भू-मस्तक पर !  
जीवनमय थे नैन-निराले  
प्राण-स्पर्श-कर, मधुमय बोल !  
क्या जानें क्यों समझ गया मैं  
—“तुम लोगे यह माटी मोल !”

❀

( शेष मैटर १७वें पृष्ठ पर देखिए )





१४ मई, सन् १९३१

## स्वदेशी आन्दोलन

( शेषांश )

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अत्याचारों की तुलना संसार के इतिहास में मिलना असम्भव है। प्रसिद्ध लेखक बोल्ट्स एक स्थान पर लिखता है—

“... upon their inability to perform such agreements as have been forced upon them by the Company's agents... have had their goods seized and sold on the spot to make good the deficiency; and winders of raw silk, ... have been treated also with such injustice, that instances have been known of their cutting off their thumbs to prevent their being forced to wind silk.”\*

अर्थात्—“.....कम्पनी के गुमारते उन पर ( जुलाहों पर ) ज़बरदस्ती भारी काम करने का इकरार-नामा मढ़ देते हैं और जब वे इकरारनामे के मुताबिक काम पूरा नहीं कर पाते तो उस कमी को पूरा करने के लिए उनका माल-असबाब उसी जगह नीलाम कर दिया जाता है; कच्चा रेशम लपेटने वालों पर इतना भयङ्कर अत्याचार हुआ है, कि इस प्रकार के उदाहरण देखे गए हैं, कि उन्होंने स्वयं अपने हाथ से अपने अँगूठे काट डाले, जिससे रेशम लपेटने के लिए उन्हें कोई मजबूर न कर सके।”

कौन ऐसा निर्दय मनुष्य होगा, जिसकी आँखों में इस रोमाञ्चकारी कहानी को पढ़ कर खून के आँसू न उतर आवें? अर्थ-लोभ का यह भीषण ताण्डव देख कर महमूद और नादिर ख़ाँ को अत्याचारी कहने में मनुष्य की वाणी लज्जित हो जाती है। इन्हीं अत्याचारों पर टीका करते हुए इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध वक्ता एडमण्ड बर्क ने वहाँ की पार्लियामेंट के सामने कहा था—

Commerce, which enriches every other country in the world, was bringing Bengal to total ruin. ... These traders appeared everywhere; they sold at their own prices, and forced the people to sell to them at their own prices also. It appeared more like an army going to pillage the people, under pretence of

\* Ibid.

commerce, than anything else. In vain the people claimed the protection of their own Country Courts. This English army of traders, in their march, ravaged worse than a Tartarian conquerer. ... Thus this miserable country was torn to pieces by the horrible rapaciousness of a double army.”\*

अर्थात्—“व्यापार, जो संसार के और सब देशों को धनवान बनाता है, बङ्गाल को सर्वनाश की ओर ले जा रहा था। .....ये व्यापारी हर एक जगह पहुँचते थे, अपना माल अपने ही दामों पर बेचते थे, और दूसरे लोगों का माल भी उन्हें मजबूर करके अपने ही दामों ख़रीदते थे। बिल्कुल ऐसा मालूम होता था, मानों व्यापार के बहाने कोई फ़ौज लोगों को लूटने जा रही है। वहाँ की प्रजा देशी अदालतों से न्याय की प्रार्थना करती थी; किन्तु व्यर्थ। कम्पनी के व्यापारियों की यह सेना अपनी कूच में तातारी आक्रमणकारियों से भी बढ़ कर लूट-मार मचाती थी। .....इस प्रकार यह अभाग्य देश दो सेनाओं के बीच भयङ्कर अपहरण का शिकार बन कर टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा था।”

इधर बङ्गाल को विदेशी व्यापारी इस प्रकार नोच-नोच कर खा रहे थे, उधर यूरोप में दूसरा ही गुल खिला हुआ था! सन् १७६८ ई० में जेम्स वॉट नामक अङ्गरेज़ ने स्टीम एंजिन का आविष्कार किया। इससे यूरोप के उद्योग-धन्धों में क्रान्ति हो गई। भारत की लूट का जो रूपया इङ्गलैण्ड पहुँचा था, उसकी सहायता से बड़े-बड़े कारख़ाने खोले गए। थोड़े परिश्रम और अल्प व्यय में ही प्रचुर परिमाण में माल तैयार होने लगा। इसके पहले विदेशियों ने कभी स्वप्न में भी न सोचा था, कि वे किसी ज़माने में अपने देश का बना हुआ माल भारत में लाकर बेच सकेंगे। अब तक वे भारतवर्ष की बनी हुई चीज़ें, खास कर कपड़ा, यूरोप के बाज़ारों में पहुँचाने वाले एजेण्ट मात्र थे। किन्तु अब दृष्टि-कोण बदल गया। शिल्पीय क्रान्ति ( Industrial Revolution ) के बाद, सन् १८१३ ई० में पहली बार यह तय हुआ, कि भारतवर्ष के उद्योग-धन्धों का समूल नाश किया जाय। भारतवर्ष से केवल कच्चा माल ख़रीदा जाय और इङ्गलैण्ड के बने हुए माल ज़बरदस्ती भारतवासियों के गले मढ़े जायँ। इस सिद्धान्त को कार्यरूप में परिवर्तित करने के लिए कम्पनी ने सात नियम बनाए—

( १ ) इङ्गलैण्ड में बना हुआ माल नाममात्र महसूल पर या बिना महसूल भारत में आने दिया जाय।

( २ ) इङ्गलैण्ड में भारत के बने हुए माल पर इतना भारी कर लगाया जाय, कि वह विलायती माल के मुक़ाबले में मँहगा पड़े और वहाँ उसकी बिक्री बन्द हो जाय।

( ३ ) भारतवर्ष में चुड़ी के नियमों और चुड़ी की दर में ऐसा उलट-फेर किया जाय, जिससे भारतवर्ष का कच्चा माल इङ्गलैण्ड के व्यापारियों को सस्ते दामों में मिल सके और भारतवर्ष में तैयार होने वाला इतना

\* Burke in his Impeachment of Warren Hastings.

मँहगा पड़े, कि भारतवर्ष में भी विलायती माल के मुक़ाबले में उसका बिकना बन्द हो जाय।

( ४ ) अङ्गरेज़-व्यापारियों को हर तरह की सहायता और सुविधा दी जाय।

( ५ ) भारतीय कारीगरों पर दबाव डाल कर ज़बर-दस्ती उनकी कारीगरी के रहस्यों का पता लगाया जाय और वे रहस्य इङ्गलैण्ड के कारीगरों को बताए जायँ। प्रदर्शिनियों के द्वारा भारतवासियों की आवश्यकताओं का पता लगाया जाय।

( ६ ) माल ढोने के लिए भारतवर्ष में रेलें जारी की जायँ।

( ७ ) भारतवर्ष के बाज़ारों को स्थायी रूप से अपने क़ब्ज़े में रखने के लिए भारतवर्ष में साम्राज्य का विस्तार किया जाय और भारतवासियों को सदा के लिए गुलाम बना कर रक्खा जाय।

इन नियमों को सफल बनाने के लिए कैसी-कैसी भयङ्कर चालें चली गईं और भारतीय प्रजा के हित की दुहाई देकर किस प्रकार उनके उद्योग-धन्धों का सर्वनाश किया गया, यह किसी वृहत पुस्तक का विषय हो सकता है, हम यहाँ इसके परिणामों तक ही अपनी दृष्टि परिमित रखेंगे।

सन्, १८१३ ई० के बाद से भारत से विदेश जाने वाले कपड़े का परिमाण घटने लगा। और थोड़े ही दिनों के बाद भारतवर्ष में विलायती कपड़े का आना भी प्रारम्भ हो गया। अब इङ्गलैण्ड से भारतवर्ष में सूत, बुना हुआ सूती कपड़ा, रेशमी कपड़ा, ऊनी माल, मैशीनरी और लोहे की चीज़ें आती थीं और उनके बदले में भारतवर्ष से कच्ची रुई, नील, नाज, चमड़ा, जूट, अफ़्रीम, बीज और चाय आदि कच्चा माल ढोया जाता था। इस व्यापार का सब से घातक स्वरूप यह था, कि भारतवर्ष में सब से अधिक मूल्य का सूती कपड़ा आता था, जिसका अधिकांश भारतवर्ष की ग़रीब प्रजा ख़रीदती थी और भारतवर्ष से सब से अधिक मूल्य का नाज विदेशों में जाता था। कहने की आवश्यकता नहीं, कि घरेलू उद्योग-धन्धों के नष्ट हो जाने के कारण भारत की दरिद्र प्रजा के पास ज़मीन का लगान चुकाने और वख़ ख़रीदने के लिए अपने मुँह का अन्न बेच देने के अतिरिक्त और कोई उपाय न था! हिन्दुस्तान प्लेग, महामारी, हैज़ और अकाल का घर बन गया। इधर हमारे शासक हमारे मुँह की रोटी छीन लेने के लिए कितने व्याकुल थे, इसका पता इसीसे लग सकता है, कि सन् १८७६-७७ ई० में भारतवर्ष में बहुत बड़ा अकाल पड़ा था, अन्न के लिए त्राहि-त्राहि मच गई थी, हजारों आदमी मर रहे थे; किन्तु उस साल इतना अधिक अन्न विलायत भेजा गया, जितना उसके पहले अङ्गरेज़ी शासन के आरम्भ से लेकर उस समय तक कभी नहीं भेजा गया था।

| साल  | विलायत जाने वाले अन्न का मूल्य पाउण्डों में! |
|------|----------------------------------------------|
| १८७५ | ५४,८८,१६६                                    |
| १८७६ | ६४,२१,१३७                                    |
| १८७७ | ७६,८८,१८६                                    |

इङ्गलैण्ड के व्यापारियों का इतने से भी सन्तोष नहीं



हुआ ! उन्होंने सोचा, भारतवर्ष से कच्चा माल इंग्लैण्ड तक लाने और फिर इंग्लैण्ड से बना हुआ माल भारतवर्ष ले जाने में बहुत-सा खर्च होता है, क्यों न हम भारतवर्ष में ही चल कर अपने कारखाने खोलें ? फटपट उन्होंने भारतवर्ष के उपजाऊ मैदानों में नील, अफीम, चाय, कॉफ़ी आदि की खेती आरम्भ कर दी। बङ्गाल के किसानों पर निलहे गोरे जो अत्याचार करते थे, उसे देख कर अभी हाल तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी का ज़माना याद आ जाता है। आज की अवस्था यह है, कि हमें अपने ही घर में सिर पटकने के लिए कहीं स्थान नहीं। देश के अधिकांश उद्योग-धन्धे विदेशी पूँजीपतियों के हाथ में हैं !!

भारतवर्ष की आत्मा इस घातक शोषण नीति से पूर्णतया परिचित हो गई है। भारतवासी भली-भाँति समझ गए हैं, कि हमारे बाज़ारों में विदेशी माल की खपत ही हमारा परतन्त्रता का केन्द्र-स्तम्भ है। इस भयङ्कर अवस्था की ओर हमारे राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान बहुत-पहले ही आकर्षित हुआ था; किन्तु हम पर लॉर्ड कर्ज़न की कृपा जब तक न हुई, तब तक हमारी मोह-निद्रा भली-भाँति भङ्ग न हुई। बङ्ग-भङ्ग के बाद जिस स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था, उसमें हमें पूर्ण सफलता न मिली। गुलाम राष्ट्रों में, जैसा प्रायः हुआ करता है, स्वार्थ और विश्वासघात की भावनाओं ने हमें आगे बढ़ने से रोक दिया। किन्तु हजार कठिनाइयों के होते हुए भी हमें जो आंशिक सफलता मिली, वह लॉर्ड कर्ज़न का अभिमान चूर्ण करके बङ्गाल को पुनः एक करने में समर्थ हो सकी थी।

असहयोग-आन्दोलन के आरम्भ-काल से अब तक विदेशी बहिष्कार और स्वदेशी प्रचार के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीय प्रगति कितना आगे बढ़ गई है और इससे स्वराज्य प्राप्त करने का हमारा मार्ग कितना सुगम हो गया है, इसका इतिहास अभी तक अपूर्ण है, इसके सम्बन्ध में अन्तिम सम्मति निर्धारित करने का समय अभी तक उपस्थित नहीं हुआ है। किन्तु कुछ दिन हुए भारतीय राष्ट्रीय महासभा की विदेशी वस्त्र-बहिष्कार समिति ने संख्याओं के आधार पर जो एक छोटी सी, किन्तु खोजपूर्ण पुस्तिका प्रकाशित की थी, उससे तीन बातें पूर्णतः स्पष्ट हो जाती हैं—(१) भारतवासी संसार की सबसे गरीब प्रजा हैं, (२) संसार के सभी धनी राष्ट्र भारतवर्ष के हाथों अपना माल बेच कर उसकी रहो-सही सम्पत्ति भी लूट रहे हैं और (३) भारतवासी यदि चाहें तो इस आर्थिक लूट से छुटकारा पा सकते हैं।

पुस्तिका बताती है कि भारतीय राष्ट्र नगरों से दूर—बहुत दूर—ग्रामों में निवास करता है।

|                      |     |     |              |
|----------------------|-----|-----|--------------|
| सम्पूर्ण जन-संख्या   | ... | ... | ३१,८६,००,००० |
| नगरों की जन-संख्या   | ... | ... | ३,२४,००,०००  |
| ग्रामों की जन-संख्या | ... | ... | २८,६४,००,००० |

अर्थात् सम्पूर्ण जन-संख्या का ८६.८ या ८० प्रतिशत ग्रामीण है !!

इन २८ करोड़, ६४ लाख ग्रामीण भारतवासियों की आर्थिक दशा क्या है? एक भारतवासी की प्रतिदिन की आय क्या है और अन्य देश का एक नागरिक प्रति-दिन कितना कमाता है?

प्रति व्यक्ति के प्रतिदिन की आय का औसत :—

|                              | रु० | आ०  | पा० |
|------------------------------|-----|-----|-----|
| युनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका | ३   | ०   | ०   |
| ऑस्ट्रेलिया                  | ... | ... | ... |
| ग्रेट ब्रिटेन                | ... | ... | ... |
| कनाडा                        | ... | ... | ... |
| भारतवर्ष                     | ... | ... | ... |

ध्यान रहे, कि इस १ आ० ७ पा० के दैनिक औसत में ३ करोड़, २४ लाख नगरनिवासियों की अपेक्षाकृत

बड़ी आय भी शामिल है। यदि नगरनिवासियों की आमदनी निकाल कर हिसाब लगाया जाय तो प्रत्येक भारतीय ग्रामीण की दैनिक औसत आय १ आ० ७ पा० से अवरय ही बहुत कम निकलेगी !!!

जिस देश के प्रति व्यक्ति की दैनिक औसत आय १ आ० ७ पा० है, उसका ६६ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष केवल कपड़े और सूत के मूल्य-स्वरूप विदेश में चला जाता है। विदेशी वस्त्र का एक बड़ा भाग २८ करोड़ ६४ लाख ग्रामवासियों द्वारा व्यवहृत होता है। पिछले दस वर्षों में भारतवर्ष की बुधा-पीड़ित प्रजा ने इंग्लैण्ड, जापान तथा अन्य देशों को ६६३ करोड़ रुपया दिया है, जिसका हिसाब इस प्रकार है :—

| सन्     | भारतवर्ष में आए हुए<br>विदेशी कपड़े और सूत का<br>मूल्य रुपयों में |     |            |
|---------|-------------------------------------------------------------------|-----|------------|
| १९१८-१९ | ...                                                               | ... | ५७, ४१,००० |
| १९१९-२० | ...                                                               | ... | ५६, १२,००० |
| १९२०-२१ | ...                                                               | ... | ६७, ८६,००० |
| १९२१-२२ | ...                                                               | ... | ६४, ६७,००० |
| १९२२-२३ | ...                                                               | ... | ६७, ७७,००० |
| १९२३-२४ | ...                                                               | ... | ६४, ७०,००० |
| १९२४-२५ | ...                                                               | ... | ७६, ०६,००० |
| १९२५-२६ | ...                                                               | ... | ६२, २०,००० |
| १९२६-२७ | ...                                                               | ... | ६१, ६८,००० |
| १९२७-२८ | ...                                                               | ... | ६१, ६२,००० |

सन् १८६६ ई० से सन् १९२८ ई० तक विगत २६ वर्षों में भारतवर्ष में उत्पन्न होने वाले और विदेशों से आए हुए कपड़े का हिसाब लगा कर देखा गया है, कि भारतवर्ष के प्रत्येक व्यक्ति का कपड़े का सालाना औसत खर्च १२.८६ गज़ है। विगत केवल दस वर्षों का हिसाब लगाने से यह खर्च १३.०८ गज़ के लगभग आता है, किन्तु १९१६-२० में, जब कपड़ा मँहगा हो गया था, यह खर्च केवल ८.८ गज़ ही रह गया था।

भारतवर्ष में खर्च होने वाले कुल कपड़े का लगभग एक तृतीयांश विदेश से आता है, अर्थात् यदि प्रत्येक भारतवासी के कपड़े का सालाना खर्च का औसत १३ गज़ मान लिया जाय, तो प्रति व्यक्ति के लिए ४.३ गज़ कपड़ा विदेश से आता है और शेष ८.७ गज़ इसी देश में मिलों और हाथ के करघों से पैदा होता है। इस प्रकार विदेशी वस्त्र के पूर्ण बहिष्कार का प्रश्न केवल प्रति व्यक्ति ४.३ गज़ कपड़ा और भारतवर्ष में पैदा करने का प्रश्न मात्र रह जाता है। कुल भारतवर्ष के लिए  $४\frac{३}{४} \times ३१,८६,००० =$  लगभग १,३८,००,००,००० गज़ कपड़ा और बनना चाहिए।

विशेषज्ञों ने हिसाब लगा कर देखा है, कि एक आदमी प्रति घण्टा ३५० गज़ की साधारण चाल से ८ घण्टे में इतना काफ़ी सूत कात सकता है, जिससे १ गज़ हो सके। यदि एक आदमी साल में ३०० दिन, प्रति दिन ८ घण्टे के हिसाब से काम करे तो ३०० गज़ कपड़ा पैदा कर सकता है। इस प्रकार १,३८,००,००,००० गज़ कपड़ा और पैदा करने के लिए  $१,३८,००,००,००० \div ३०० = ४६,००,०००$  कातने वालों की आवश्यकता है।

अर्थात् भारतीय जन-संख्या के प्रति २०० में से तीन मनुज यदि इस प्रकार चरखा कातना आरम्भ कर दें, तो विदेशी वस्त्र-बहिष्कार की समस्या हल हो जाती है। आवश्यकता केवल इस बात की है, कि हम सच्ची लगन से काम करने को तैयार हो जायँ।

अब ज़रा भारतवर्ष के बेकारों की संख्या भी देखिए। ऐसा अनुमान लगाया गया है, कि जितने ग्रामीण लोग साल में प्रायः तीन महीना बेकार रहते हैं उनकी संख्या ११ करोड़ के लगभग है। उनमें से केवल १८४ लाख

आदमी अर्थात् प्रत्येक ६ बेकार मनुष्यों में से केवल एक अपनी बेकारी के समय का सदुपयोग कर सूत कातना आरम्भ कर दे, तो विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का प्रश्न हल हो जाय। प्रति दिन ८ घण्टे कातने से उन्हें कम से कम एक आना अवश्य मिल सकता है। जिस अभागे देश के करोड़ों प्राणियों की दैनिक आय १ आ० ७ पा० से बहुत कम है, उसके बेकार मनुष्यों के लिए प्रति दिन १ आने की आमदनी का उपाय ईश्वरीय आशीर्वाद नहीं तो और क्या है?

बहिष्कार-समिति ने जिस खोज और परिश्रम के साथ इन संख्याओं को प्रकाशित कर विदेशी वस्त्र-बहिष्कार के महत्वपूर्ण प्रश्न को हमारे सामने इतने सरल रूप में रख दिया है, इसके लिए वह बधाई की पात्र है। किन्तु क्या हम अपने परिश्रमी भाइयों को बधाई देकर ही सन्तुष्ट हो जायँगे? इतने सुलभ उपाय के रहते हुए भी यदि हम विदेशी वस्त्र का पूर्ण बहिष्कार करने में सफल न हों तो इससे यही समझना चाहिए, कि हमने अपने परावलम्बन का वास्तविक स्वरूप अभी तक नहीं समझा है। किस प्रकार दरिद्र भारत दिन-दिन दरिद्रतर होता जा रहा है, 'जीवेयम् शरदः शतम्' का मन्त्र जपने वाले भारतवासियों की औसत आयु २३ वर्ष ही क्यों रह गई है, ग्रीष्म की कड़ी धूप और सावन की मूसलधार वर्षा में अनवरत परिश्रम करके भी भारतीय कृषकों को सूखी रोटी नसीब क्यों नहीं होती, हमारे शिक्षित युवकों में यौवन-सुलभ उत्साह और कार्य-त्प-रता का अभाव क्यों होता है, हिन्दू-मुसलमानों में कलह और विद्वेष कौन उत्पन्न कराता है, हमारे सामा-जिक सुधार के मार्ग में रोड़े क्यों अटकते जाते हैं, हमारी सम्यक्ता जीर्ण-शीर्ण और विशृङ्खल क्यों हो रही है, भारत का जातीय जीवन द्रुतवेग से यमराज के द्वार की ओर क्यों दौड़ा जा रहा है—आदि प्रश्नों के मूल कारण पर हमने अभी तक विचार नहीं किया है। भारतवर्ष की आर्थिक लूट को अनन्त काल तक जारी रखने के लिए ही हमें उपरोक्त उपायों से कमज़ोर बनाया जा रहा है। शासित जाति की दुर्बलता ही विदेशी शासन का बल है और उसका दैन्य विदेशी शासकों का ऐश्वर्य ! प्रत्येक व्यक्ति, जो कौच पर लेट कर बिजली के पट्टे के नीचे स्वर्ग-सुख का आनन्द अनुभव करता है, उसे समझ लेना चाहिए, कि उसके मज़दूरी गद्दे के लिए किसी परिश्रम-शील मज़दूर के मुँह का कौर छिन गया है, उसका नेवी-कट(Navy Cut)सिगरेट भारतीय बच्चों की मृत्यु-संख्या में हृदय-विदारक उन्नति करने के बाद उसके अधरों तक पहुँच सका है। प्रत्येक सूई और पिन, जो हम विदेश से मोल लेते हैं, हमें एक पग जातीय मृत्यु के नज़दोक पहुँचा देती है। सबसे बड़े दुर्भाग्य की बात तो यह है, कि हमारे पाप का प्रायश्चित्त हमारे ही पतन तक समाप्त नहीं होता—इसका घातक प्रभाव भारतवर्ष के समुद्र-मार्ग के आस-पास के देशों की स्वतन्त्रता पर भी पड़ता है। मिश्र, टर्की, अरब, पर्शिया, अफ़गानिस्तान आदि देशों की स्वतन्त्रता अपहरण करने के लिए ब्रिटिश-सरकार जो इतनी उत्सुक रहती है, इसका रहस्य भारत-वर्ष से इंग्लैण्ड के आवागमन का मार्ग सुरक्षित रखने के उलझे हुए प्रश्नों में ही पाया जा सकता है।

अब विदेशी वस्त्र पहनने वाले हमारे भाई और बहिन हृदय पर हाथ रख कर अपने अन्तःकरण से पूछ देखें कि अपने तैंतौस करोड़ भाइयों को नरक की यन्त्रणा देकर, भारत के पड़ोसी राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का खतरे में डाल कर, शासक जाति के आत्मिक पतन का साधन उपस्थित कर और स्वयं अपना ही सन्तति को मृत्यु के मुख में फँक कर भी विदेशी वस्त्र पहनना चाहते हैं या नहीं ?



## व्यापार-सम्बन्ध के लिए ब्रिटेन की व्याकुलता

**वि**गत राष्ट्रीय आन्दोलन के समय ब्रिटेन में ब्रिटिश माल के बहिष्कार के सम्बन्ध में इतनी चञ्चल न थी, जितनी कि इधर विराम-सन्धि के बाद से सुनने में आ रही है। ब्रिटेन का विश्वास था, कि शायद ऑर्डिनेन्सों से बहिष्कार आन्दोलन दब जाय। फिर सोचा गया, कि शायद सन्धि कर लेने से परिस्थिति सुधर जाय; परन्तु इतने पर भी जब व्यापारिक स्थिति वैसी की वैसी ही बनी रही, तब ब्रिटेन एक बार ही घबड़ा उठा है। आजकल कॉमन्स तथा लॉर्ड सभाओं में 'भारत की परिस्थिति' पर प्रायः नित्य ही मनोरञ्जक बहसें हो रही हैं, व्यापारिक केन्द्रों के डेपुटेशन बनते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार की सभाएँ करके ब्रिटेन की बेकारी की समस्या पर भाषण दिए जाते हैं। कोई धमकी देता है, कोई सहायुभूति दिखलाता है और कोई भावी शासन-विधान में भारत के साथ व्यापार करने का बराबरी का अधिकार चाहता है! मतलब यह, कि सभी दल और सभी मत के लोग, किसी न किसी प्रकार, भारत के साथ व्यापार बनाए रखना चाहते हैं। भारत बार-बार कहता है, कि हममें तुम्हारे माल खरीदने की सामर्थ्य नहीं है, हम गरीब हैं, हमारी आमदनी बहुत घट गई है, परन्तु ब्रिटेन कहता है, कुछ भी हो, तुम्हें हमारा माल खरीदना ही पड़ेगा!

महात्मा गांधी कह चुके हैं, कि हम किसी दुश्मनी से बहिष्कार नहीं करते, हम तो केवल अपनी आर्थिक दशा का सुधार कर रहे हैं। परन्तु कमाण्डर केन वर्दी ने उस दिन कहा कि, "इन लोगों से कोई कह दे, कि हम गोलमेज़ में इसी शर्त पर शरीक होंगे, कि ब्रिटेन की भारत के साथ की व्यापारिक स्वाधीनता बनी रहेगी और फ़ौलादी ढाँचे का कुछ न कुछ अंश कायम रहेगा।" गोलमेज़ में न शरीक होने की धमकी बिल्कुल बेकार है। भारत ने न कभी गोलमेज़-सम्मेलन करने की ब्रिटेन से प्रार्थना ही की थी, न आज वह गोलमेज़ में जाने के लिए उत्सुक ही है। ब्रिटेन ने ही गोलमेज़ परिषद का आयोजन किया और ब्रिटेन ने ही इस देश से उसमें शामिल होने के लिए हजार बार मित्रों की। गोलमेज़ हो या न हो, कोई शामिल हो या न हो, नौजवान-भारत को इसकी ज़रा भी परवाह नहीं है। यदि सच पूछा जाय, तो तरुण-भारत गोलमेज़ परिषद में भाग लेना चाहता ही नहीं—उसे अपनी शक्ति पर विश्वास हो गया है और उसी के बल पर वह अपने को स्वाधीन करने पर तुल गया है।

रह गई व्यापार की स्वाधीनता की बात; इस विषय में ब्रिटेन को समझ लेना चाहिए कि भारत ब्रिटेन की व्यापारिक स्वाधीनता को अपने स्वराज्य-लाभ की शर्त नहीं बना सकता। जिस भारत ने ब्रिटेन से सम्बन्ध-विच्छेद तक का अधिकार अपने ही अधीन रख छोड़ा है, वह ब्रिटेन की व्यापारिक गुलामी को स्वराज्य की शर्त भला कैसे बना सकता है? स्वार्थान्ध ब्रिटेन इसे नहीं समझता। स्वयं उसके उपनिवेश तक जब इन मामलों में स्वतन्त्र हैं, तो भारत-सरीखे गरीब देश से कैसे यह आशा की जा सकती है, कि वह मैन्चेस्टर और लङ्काशायर से कपड़ा कता-बुना कर पहनेगा? निस्सन्देह भारत ने ब्रिटेन की आदत को ख़राब कर दिया है, इसलिए वह आज इस नई परिस्थिति में बहुत बड़े कष्ट का अनुभव कर रहा है; परन्तु अब सिधा इसके, कि ब्रिटेन अपने रहन-सहन को बदल कर कम खर्च में ज़िन्दगी बसर करना सीखे, और दूसरा उपाय उसके लिए शेष नहीं है? अब तक रेशम,

तज़्जेब और मख़मल पहनने वाला भारत भी तो यही कर रहा है !!

## लॉर्ड रोडिज़ की बौखलाहट

**लॉ**र्ड सभा में बोलते हुए लॉर्ड रोडिज़ ने कहा है, कि सर्वसाधारण में फैले हुए भ्रम के निवारणार्थ यह स्पष्ट कर देने की आवश्यकता है, कि गोलमेज़ के अगले अधिवेशन में स्वीकृत संरक्षणों (Safeguards) में किसी प्रकार की कमी न की जा सकेगी। अपने कहा, कि कम से कम लिबरल दल वालों का मत इस सम्बन्ध में बिल्कुल स्पष्ट है और वह साफ़ कह देना चाहता है, कि संरक्षण भारत-हित के लिए अनिवार्य हैं। संरक्षणों की प्रयोग-विधि में चाहे जो मतभेद हो; परन्तु स्वीकृत संरक्षणों के मूल-तत्त्व नहीं हटाए जा सकते।

आगामी गोलमेज़ परिषद में यही तो तय होना है, कि संरक्षण भारत के हित के लिए आवश्यक हैं या नहीं? जो बात इतने स्पष्ट रूप में भारत के लिए हित की है, उसके समझाने के लिए इतने उतावलेपन की क्या आवश्यकता है? गोलमेज़ में लॉर्ड रोडिज़-सरीखे भारत-हितैषियों को अपनी बात प्रमाणित करने के लिए काफ़ी अवसर मिलेगा, अस्तु।

जब ब्रिटेन के प्रधान-मन्त्री ने गोलमेज़ को स्थगित करते समय अपनी अन्तिम घोषणा निकाली थी और उसमें उन्होंने कहा था, कि जो संरक्षण भारत के हित के लिए अनिवार्य समझे जायेंगे, केवल वे ही शासन-विधान में रखे जायेंगे, उस समय या उसके पूर्व ही लॉर्ड रोडिज़ तथा उनके मतावलम्बियों को आपस में निर्णय करके अपना भ्रम-निवारण कर लेना चाहिए था।

अब तक ऐसी कोई भी घोषणा ब्रिटेन की तरफ़ से नहीं हुई, जिसका अर्थ आगे चल ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने कुछ दूसरा ही बतला कर मूल अर्थ को नष्ट न कर दिया हो। गोलमेज़ परिषद वाली घोषणा में भी यदि ऐसा ही हो, तो हमें आश्चर्य न होगा। यदि शासनाखंड मज़दूर-दल भी लॉर्ड रोडिज़ के अर्थ का समर्थन कर दे, तो ब्रिटेन की नीति स्पष्ट हो सकती है; परन्तु अभी तक तो उसने ऐसा नहीं किया। सम्भवतः वह गोलमेज़ परिषद के पहले ऐसा नहीं करना चाहता। जब से भारत में अज़रेज़ी राज्य कायम हुआ है, तब से सिविलियनों की भारत के प्रति नमकहरामी करने की एक निश्चित-नीति-सी हो गई है। भारत में जिस प्रकार साम्प्रदायिक 'नेता' अपने देशवासियों की आँखों में धूल भोंक कर अपना उल्लू सीधा करते हैं, ठीक उसी प्रकार भारत के पैसों से पुरत-दर-पुरत पलते रहने वाले सिविलियन भी इङ्ग्लैण्ड में जाकर वहाँ के भोले देशवासियों को भारत की वास्तविक परिस्थिति से अनभिज्ञ रखने की चेष्टा करते पाए गए हैं। एक समय भारत की स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए वर्क के समान घुलने का उपक्रम करने वाले भारत के भूतपूर्व वॉयसराय लॉर्ड रोडिज़ आज यदि इस प्रकार नमक-हरामी का परिचय दे रहे हैं—तो भारतवासियों को उसमें आश्चर्य न करना चाहिए।

## लङ्काशायर का भारत-प्रेम

**वि**लायत के 'सण्डे टाइम्स' पत्र में 'स्क्रेटर' ने लङ्काशायर की दीनावस्था का वर्णन करते हुए, एक जगह भारत के श्रमजीवियों के प्रति भी दया दिखलाई है। उसका कहना है, भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भारतीय पूँजीपतियों ने केवल अपने स्वार्थ-साधन के लिए भाग लिया था। ब्रिटिश माल के बहिष्कार की आड़ में वे अपने अधिक से अधिक लाभ का उपाय सोच रहे थे। परन्तु ये पूँजीपति अपने श्रमजीवियों के

साथ बहुत ही निकृष्ट श्रेणी का व्यवहार करते हैं। उनके मिलों की हालत जैसी घृणित है, वह तो है ही; वे अपने मज़दूरों से पाई-पाई का लाभ खींच लेने में नहीं चूकते। भारत को स्वतन्त्रता देने का अर्थ यही होगा, कि भारत का गरीब श्रमजीवी दल मुट्ठी भर पूँजीपतियों की गुलामी में बराबर पिसते रहने के लिए छोड़ दिया जायगा!

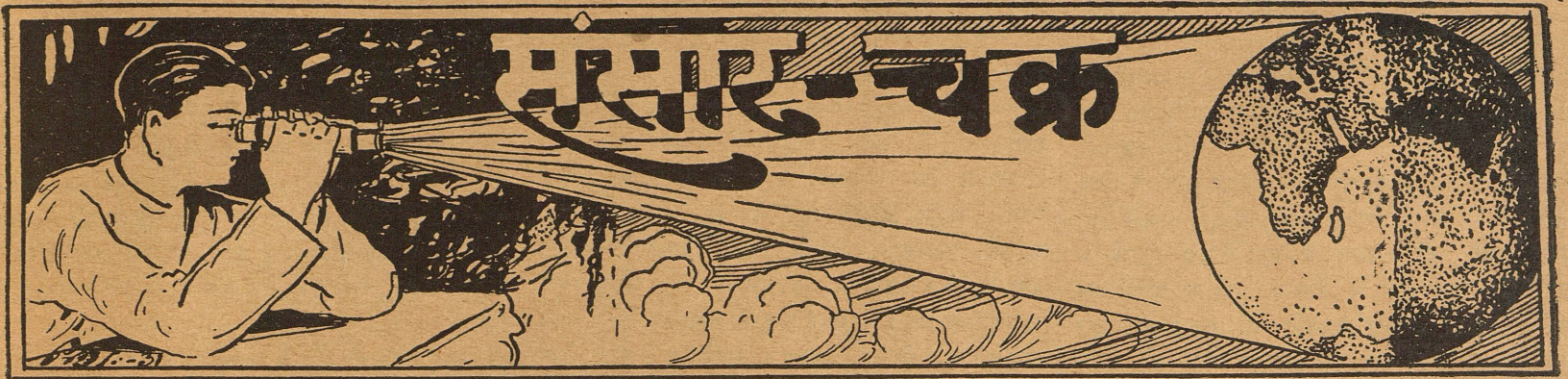
भारत के बहिष्कार आन्दोलन के पहले कभी लङ्काशायर का ऐसा श्रमजीवी-प्रेम हमारे सुनने में नहीं आया था। सम्भव है अपनी हीन दशा से दूसरों की हीन दशा का भी ध्यान हो आया हो। यद्यपि सुनते आए हैं, कि ब्रिटिश जाति में कल्पना-शक्ति बहुत कम होती है। परन्तु इस उदाहरण से मालूम होता है, कि इस देश के बहिष्कार ने उनकी अब तक की सुपुस कल्पना-शक्ति को एक बार ही जाग्रत कर दिया है। इसीलिए वही लङ्काशायर, जिसने कभी इस देश के उद्योग-धन्धों को तरह-तरह के निन्दनीय उपायों द्वारा नष्ट करके असंख्य भारतीयों की जीविका का अपहरण किया था, आज भारत के श्रमजीवियों की भारतीय पूँजीपतियों से रक्षा करने की बात कर रहा है!

विदेश के इन नए भारत-प्रेमियों को मालूम हो जाना चाहिए, कि इस देश के असंख्य श्रमजीवियों की रक्षा इस देश के पूँजीपतियों से न करके, पहले लङ्काशायर से ही करनी है! उससे रक्षा कर लेने पर इस देश के पूँजीपतियों से रक्षा कर लेना बहुत सरल होगा। तब तक देश के पूँजीपतियों से कम से कम कुछ लोगों को मज़दूरी तो मिलती ही जायगी। इस देश के श्रमजीवियों को अपने देश की स्वतन्त्रता से कोई डर नहीं है। लङ्काशायर को चाहिए कि भारतीय श्रमजीवियों की चिन्ता छोड़ कर अपने यहाँ के ढाई लाख बेकारों की समस्या हल करने का उपाय सोचे, हमारा खुदा हाफ़िज़ है!

## कॉमन्स सभा में कानपुर का दङ्गा

**अ**भी उस दिन कॉमन्स सभा में कानपुर के दङ्गे के सम्बन्ध में एक सदस्य के प्रश्न का उत्तर देते हुए भारत-मन्त्री श्री० वेजडबेन ने बतलाया कि "इस दङ्गे में कुछ औरतें और बच्चे, जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों थे, मारे गए हैं और लगभग चार सौ के ऊपर गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, परन्तु यह नहीं मालूम हो सका है, कि इनमें से किसी पर हत्या करने का दोष लगाया गया है या नहीं।" देखने में यह एक अत्यन्त सीधा-सादा उत्तर है, परन्तु अन्दर से उतना ही कुटिलतापूर्ण भी है। केवल 'कुछ औरतें और बच्चे मारे गए' और 'चार सौ के ऊपर गिरफ़्तारियाँ हुईं'! आपने यह बताने का कष्ट नहीं उठाया कि चार-चार रात और दिन बराबर लूट-मार, हत्या-काण्ड और अग्नि-काण्ड जारी रहा, पुलिस बैठी ताश खेल्ती रही और फ़ौज खड़ी-खड़ी सविनय अवज्ञा का मौन प्रदर्शन करती रही! आपने यह भी नहीं बतलाया, कि उस नगर के निवासियों का विश्वास वहाँ के अधिकारियों पर से इतना ज़्यादा हट गया था, कि उन्होंने अधिकारियों के तमाम विश्वास दिलाते रहने पर भी चौदह रोज़ तक अपने बाज़ार नहीं खोले; परन्तु कॉङ्ग्रेस के दो-चार नेताओं के जाते ही, जिनके पास विश्वास दिलाने के लिए न कोई फ़ौज थी, न पुलिस थी, कुछ घण्टों के अन्दर बाज़ार खोल दिए गए। निस्सन्देह आप इन सब बातों को बता कर इस देश की उच्छृङ्खल नौकर-शाही के पापाचारों का रहस्योद्घाटन नहीं कराना चाहते—ब्रिटिश शासन-नीति का यह सनातन नियम है।





## १९०५ की रूसी क्रान्ति

[ श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर ]



सार के इतिहास के पन्ने क्रान्तियों से भरे पड़े हैं। यदि आप उन क्रान्तियों का अध्ययन करें और उनके कारणों का पता लगावें तो आपको मालूम होगा कि उनके होने का एक ही कारण है, और वह है सर्व-साधारण का आर्थिक सङ्कट। थोड़े से पूँजीपतियों का सर्व-साधारण की गाढ़ी कमाई से फायदा उठाना और सुख भोग करना तथा शासक-वर्ग का इन्हीं पूँजीपतियों का साथ देना। गत उन्नीसवीं सदी में ऐसी कितनी ही क्रान्तियाँ हुई हैं। साथ ही बीसवीं सदी में जो भीषण क्रान्ति हुई है, जिसने ४८ घण्टे के अन्दर ही रूस का तख्ता उलट दिया और एक नए युग का श्रीगणेश किया, उसका कारण भी उपर्युक्त ही था। सन् १९१७ की रूस की क्रान्ति एक ऐसी क्रान्ति थी, जिसने रूस की ज़ारशाही

### व्यापारी (काव्य कहानी)

(१३वें पृष्ठ का शेषार्थ)

मेरी माटी के प्रिय-गाहक  
बोले—“मैं वह शिल्पकार हूँ  
जो ऐसी माटी लेकर,  
सम्यक-जीवन इसमें देकर,  
मूर्ति सजाता नव, सुन्दर !

मैं रचता नर, नर-पति, पशु-पति,  
श्री, श्री-पति, सब एक समान  
मेरी माया के पुतले हैं—  
धनिक, वणिक, अ-पठित, विद्वान  
तुम यह माटी मुझे सौंप दो !”

अञ्जलि भर-भर, सिहर-सिहर कर,  
जब मैं उनके अञ्जल में—  
सुरभित-पट के, धूलि सजाने  
लगा—अश्रु के काजल में,  
तब ; वह ऐसे लगे देखने  
उभर-उभर कर मेरी ओर—  
मानो, मैं सर्वस्व सौंपता था  
उनको—आनन्द-विभोर !

मेरी माटी के प्रिय-गाहक !

मेरा भार उतार, मलिन-तर  
मेरे तन को उज्ज्वल कर,  
दे सुवर्ण-सच्चा मन-मन-भर  
रज को रजत-विनिन्दक कर—

उन्नत कर मम मस्तक-वर—  
अन्तर्धान हुए सखर !

\*

\*

\*

का तो अन्त किया ही, साथ ही संसार के अन्य निरङ्कुश शासकों की भी कुम्भकर्णी निद्रा को तोड़ दिया। बल्कि एक तरह से तो इस क्रान्ति ने सारे संसार के पूँजी-पतियों को सजग कर दिया।

रूस में इससे पहले, सन् १९०५ में भी एक क्रान्ति हुई थी, जिसका सरगना मोशिए लेनिन था। वह क्रान्ति भी आर्थिक सङ्कटों के कारण ही हुई थी और महामा लेनिन के शब्दों में वह १९१७ वाली बड़ी क्रान्ति की भूमिका-मात्र थी। अस्तु, उन क्रान्तियों का हाल जानने से पहिले रूस के आर्थिक इतिहास के सम्बन्ध में थोड़ी सी जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

इन क्रान्तियों से पहले रूस में धनवानों और ज़मींदारों की तृती बोलती थी। वे देश की सम्पत्ति, व्यापार और भूमि के स्थायी स्वामी बन बैठे थे। मज़दूर और किसान सवेरे से शाम तक मेहनत करके एड़ी-चोटी का पसीना एक करते थे ; परन्तु उन्हें भर पेट भोजन और तन भर कपड़ा भी नसीब नहीं होता था ; वरन् उलटे उन्हें उन धनिकों और ज़मींदारों के नित नए अत्याचारों का शिकार होना पड़ता था। उपजाऊ भूमि में से, जहाँ साधारण किसान के पास औसतन आठ या नौ एकड़ ज़मीन थी वहाँ आम तौर पर प्रत्येक ज़मींदार ८०,००० एकड़ ज़मीन का मालिक था। मोशिए लेनिन ने अपनी एक कृषि-सम्बन्धी प्रसिद्ध पुस्तक में बताया है कि रूस में ऐसे ज़मींदारों की संख्या ७०० थी और उनके पास सब मिला कर सारे रूस की उपजाऊ भूमि का तीन चौथाई हिस्सा था। इन ७०० ज़मींदारों के पास ६,००,००० किसानों से तिगुनी भूमि थी। ये ज़मींदार स्वयं तो बहुत थोड़ी अर्थात् एक पञ्चमांश ज़मीन जोतते-बोते थे और अधिकतर भूमि दूसरे किसानों को लगान पर दे दिया करते थे। १९वीं सदी के अन्त में काली भूमि के ज़मींदार अपनी भूमि का आधा हिस्सा और दूसरे प्रदेशों के ज़मींदार अपनी भूमि का ३० से ४० प्रति शत भाग किसानों को मालगुज़ारी पर दे दिया करते थे। किसानों को बहुत लगान देना पड़ता था। बहुधा किसानों को, अपने उपाजित अन्न का आधा भाग ज़मींदारों को दे देना पड़ता था। कहीं-कहीं किसानों को ज़मींदारों का वेगार भी करना पड़ता था। इसके सिवा उन्हें अपने हल से ज़मींदारों की भूमि भी जोत देनी पड़ती थी। ये ज़मींदार खेती के लिए आधुनिक वैज्ञानिक साधनों से काम नहीं लेते थे, क्योंकि उनका लक्ष्य होता था—किसानों से लगान वसूल करना।

किसानों की स्थिति बड़ी ही खराब हो रही थी। इनमें जो थोड़े से धनी थे, उनके पास भी अपनी खेती सुधारने के लिए साधन न थे। फलतः दिन प्रति दिन किसानों की आर्थिक हालत गिरती जाती थी। उनकी इस गिरती हुई आर्थिक स्थिति का अन्दाज़ा निम्न-लिखित अङ्कों से लगाया जा सकता है :—

यूरोपीय रूस के ५० प्रान्तों के किसानों के घोड़ों\* की संख्या, सन् १८८८ से लेकर सन् १८९८ तक के दस वर्षों में, बहुत घट गई थी। सन् १८८८ में इन किसानों के पास १,६०,००,००० घोड़े थे। परन्तु सन् १८९८ में केवल १,७०,००,००० घोड़े रह गए। यानी इन दस वर्षों में २० लाख घोड़े घट गए थे। इसी भाँति बैल आदि की संख्या भी आलोच्य वर्षों में ३,४०,००,००० से २,४०,००,००० हो गई थी, यानी दस वर्षों में १ करोड़ बैल आदि पशु घट गए थे। इन्हीं वर्षों में केन्द्रीय रूस के कई प्रान्तों की दशा और भी बदतर हो गई थी। वहाँ के ज़मींदार किसानों पर विशेष अत्याचार करते थे।

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम तीस वर्षों में रूस में पूँजीपतियों ने बड़ी उन्नति की। तमाम देश में कल-कारखानों का जाल बिछ गया। किसी-किसी कारखाने में १०,००० तक मज़दूर काम करते थे। इन वर्षों में यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा रूस ने अधिक उन्नति की। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में कच्चे लोहे की पैदावार में तमाम संसार में, रूस का चौथा स्थान था। रूस में जितना कच्चा लोहा पैदा होता था उतना ऑस्ट्रिया-हङ्गेरी, बेल्जियम और फ्रान्स मिल कर भी पैदा नहीं कर सकते थे। लोहे और कोयले की पैदावार में रूस ने संसार में सब से अधिक उन्नति की थी। तेल की पैदावार में केवल अमेरिका ही रूस का मुकाबला कर सकता था। सन् १८९० में अमेरिका रूस से अधिक तेल पैदा कर सकता था। परन्तु दस वर्षों में रूस ने इतनी उन्नति की कि सन् १८९९ में रूस अमेरिका से भी बाज़ी मार ले गया। इसके सिवा तेल भी वह अमेरिका से उत्तम पैदा करने लगा। रूई के उद्योग-धन्धे में बीसवीं सदी के प्रारम्भ में, रूस केवल अमेरिका तथा इङ्ग्लैण्ड से पीछे तथा अन्य सभी तमाम देशों से आगे था। इस तरह एक तरफ़ तो रूस में, बड़े पैमाने के उद्योग-धन्धों की उन्नति हो रही थी और दूसरी तरफ़ छोटे पैमाने के उद्योग-धन्धों का नाश हो रहा था। उपर्युक्त उन्नति को सब से बड़ी सहायता रेल से मिली थी। प्रति वर्ष रूस में रेल का विस्तार बढ़ रहा था। सन् १८९० में वहाँ रेलवे लाइन १,२४० मील लम्बी थी। पर सन् १९०० में उसका विस्तार बढ़ कर २७,८१० मील तक पहुँच गया। रेल की जितनी उन्नति हो रही थी उतनी ही उन्नति उससे सम्बन्ध रखने वाले उद्योग-धन्धों की भी हो रही थी। मज़दूरी के सस्तेपन ने भी इस उन्नति में बड़ी सहायता की। इसके कारण पूँजीपतियों को अधिक लाभ होता था। पश्चिमी यूरोप के देशों की अपेक्षा रूस में मज़दूरी की दर कहीं सस्ती थी। जब विदेशी पूँजीपतियों ने देखा कि रूस में पूँजी से अधिक लाभ उठाया जा सकता है तो उन्होंने भी वहाँ अपनी पूँजी लगाना आरम्भ कर दिया। फलतः बीसवीं सदी के प्रारम्भ में रूस में ६० करोड़ रूबल विदेशी पूँजी

\* रूस में जोतने का काम बहुधा घोड़ों से लिया जाता है। इसके सिवा हमारे देश की तरह बैल भी व्यवहार में लाए जाते थे। ये ही दो प्रकार के पशु रूसी किसानों की खेती के प्रधान अवलम्ब हैं।

—सं० ‘अविष्य’



लगी हुई थी। यह पूँजी मुख्यतः फ्रान्स और जर्मनी की थी। विदेशी पूँजी के बल पर ही कोयले का धन्धा चल रहा था और एलेक्जेंडर कारखाने की भाँति बहुत से कारखाने इसी विदेशी पूँजी पर निर्भर रहते थे। इन कारखानों में लाखों मजदूर काम करते थे। जिस तेजी से उन्नीसवीं सदी के अन्त में रूस ने उद्योग-धन्धे में उन्नति की, उसी तेजी से बीसवीं सदी के पहिले दस वर्षों में उसने उसकी अवनति भी कर डाली। इस अवनति का बड़ा जबरदस्त कारण रूस की कृषि-अवनति थी। रूस की पैदावार बहुत कम हो गई। बीसवीं सदी के प्रारम्भ में किसान विशेषतः दरिद्र थे। ज़मींदार उन पर अधिक अत्याचार कर रहे थे। पहले की अपेक्षा भूमि कम जोती-बोई जाती थी। किसानों के पास पहले की अपेक्षा बहुत कम जानवर थे। उनकी दीन-हीन दशा रूस के उद्योग-धन्धों में उन्नति नहीं होने देती थी।

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में रूस के मजदूरों में घोर असन्तोष फैल रहा था। वे अपनी स्थिति से पूर्णतया असन्तुष्ट थे और उसका सुधार करना चाहते थे। उन्होंने घोर आन्दोलन करना आरम्भ किया। इस आन्दोलन ने शासकों को चिन्तित कर दिया। वे उसे दबाना चाहते थे, पर समर्थ नहीं हुए। अतएव उन्होंने एक नई तरकीब सोची। आन्दोलन को शान्तिमय तथा वैध बनाए रखने का प्रयत्न किया। मजदूर अपना असन्तोष प्रकट करने के लिए भले ही आन्दोलन करते रहें, परन्तु वह शान्तिमय तथा वैध हो। रूस के खुफिया-पुलिस के प्रधान ने, जिसका नाम सबटव था, कानूनी सङ्घों की स्थापना की। ये सङ्घ उसीके नामानुसार 'सबटव सङ्घ' के नाम से प्रसिद्ध थे। इन अर्ध सरकारी सङ्घों का काम देश के मजदूरों को अपने में शामिल किए रहना और उनके आन्दोलन का स्वयं सञ्चालन कर उसे शान्तिमय बनाए रखना था। देश भर में इन सङ्घों की शाखाएँ थीं। इनके अपने क्लब थे, जिनमें मजदूर निःशुल्क शामिल हो सकते थे। खुफिया-पुलिस इनकी रक्षा करती थी और खर्च के लिए धन देती थी। इन क्लबों में मजदूरों के लाभ के लिए ध्यायान दिए जाते थे। मजदूरों को वहाँ बहुत से मनोरञ्जन के सामान भी मिलते थे। चूँकि जो मजदूर इन 'सबटव-सङ्घों' के सभासद थे, वे हड़तालों में भाग लेते थे, अतएव इन सङ्घों को भी हड़तालों में भाग लेना पड़ता था। सबटव की योजना थी, कि उसके सङ्गठन के नेता मजदूरों को शान्तिमय बनाए रहें और मजदूरों के प्रति रियायत करने के लिए मालिकों पर ज़ोर डालें। ये रियायतें कुछ महत्व भले ही न रखती हों, पर वे ऐसी अवश्य हों, जिनसे मजदूर प्रसन्न रह सकें। सन् १९०२ की १९वीं फ़रवरी को मास्को के सबटव-सङ्घ ने मजदूरों के एक प्रदर्शन का सङ्गठन किया। इस प्रदर्शन में दस हजार से अधिक मजदूर शामिल हुए थे। मजदूरों को फाँसने के लिए सरकार ने जो यह जाल बिछाया था, उसका अन्त क्रान्ति ही ने किया।

दक्षिण में खुफिया-पुलिस को और भी कम सफलता मिली; क्योंकि वहाँ जो मजदूर सबटव-सङ्घ में शामिल हुए थे, वे हड़ताल-आन्दोलन में उन सारे सङ्घों को घसीट लाए। सन् १९०३ के हड़ताल-आन्दोलन में मजदूरों ने सबटव-सङ्घों पर पूरा अधिकार कर लिया। फलतः दक्षिण में ये सङ्घ अपने कार्य में इतने असफल रहे, कि शावेविच नाम के एक सबटव-एजेण्ट को देश-निकाले की सज़ा दी। और उसी समय से सबटव स्वयं सरकार की नज़रों से गिर गया।

पुलिस द्वारा मजदूर-आन्दोलन को रोकने का सब से बड़ा केन्द्र पिटर्सबर्ग था। यहाँ का पादवी गपन खुफिया-पुलिस का एजेण्ट था। खुफिया-पुलिस गपन की सहायता करती थी। वह मनमानी सभाएँ कर सकता था।

सङ्गठन का खर्च चलाने के लिए पुलिस उसे रुपए देती थी। गपन को अपने निजी खर्च के लिए भी पुलिस से रुपए मिलते थे। गपन के सङ्घ ने अपना कार्य सन् १९०३ से प्रारम्भ किया। उसका जात अनेक ज़िलों में फैल गया। वीबर्ग, वसीलियच, नेवस्की, कलमस्क, नर्व, मास्को, कलपिनव, सेसट्रो आदि ज़िलों में उसकी शाखाएँ थीं। सन् १९०४ के दिसम्बर में ४ मजदूर बरखास्त किए गए। ये गपन-सङ्घ के सभासद थे। अतएव सङ्घ की ओर से एक डेपुटेशन डाइरेक्टर के पास भेजा गया। इस डेपुटेशन ने डाइरेक्टर से प्रार्थना की, कि बरखास्त किए हुए मजदूर पुनः बहाल कर दिए जाएँ। परन्तु डेपुटेशन की प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई। गपन ने डाइरेक्टर तथा पुलिस के प्रधान से बार-बार प्रार्थना की, पर उसका कुछ भी परिणाम न हुआ। इसलिए लाचार होकर गपन-सङ्घ के मजदूरों ने हड़ताल करने का विचार किया।

पहिली जनवरी को सङ्घ ने पुटीलन के कारखाने में हड़ताल करने का निश्चय किया। निकाले हुए मजदूर यहीं काम करते थे। तीसरी जनवरी को हड़ताल हो गई। मजदूरों की मुख्य मांगें ये थीं :— (१) प्रतिदिन आठ घण्टे से अधिक काम न करना, (२) पुरुषों के वेतन में ६६ फ़ी सदी तथा औरतों के वेतन में १०० फ़ी सदी तरक्की और (३) कारखानों में स्वास्थ्य वर्धक प्रबन्ध। देखते-देखते इस हड़ताल ने विशाल रूप धारण कर लिया। बात की बात में अनेक और कारखानों में हड़तालें हो गईं। यहाँ तक कि पिटर्सबर्ग के तमाम मजदूरों ने, जिनकी संख्या १ लाख ५० हजार थी, हड़ताल कर दी। इन हड़ताल करने वालों में प्रेस के कर्मचारी तक शामिल थे, इसलिए इस हड़ताल के कारण पिटर्सबर्ग से अखबार तक न निकल सकते थे।

गपन के प्रस्ताव के अनुसार मजदूरों ने ज़ार के भवन तक जुलूस ले जाने का निश्चय किया। गपन ने एक ओजस्वी भाषण द्वारा मजदूरों को उत्साहित करते हुए उन्हें खूब ही सब्ज़ बाण दिखलाया। उसने यहाँ तक कह डाला कि यदि ज़ार हमारी प्रार्थना न सुनेंगे, तो हम लोग ज़ार से कोई सरोकार न रखेंगे।

१९वीं जनवरी को मजदूरों का जुलूस नर्व से रवाना हुआ। गपन उसका सञ्चालक था। जुलूस में लाल झण्डा एक भी न था। गिरजाघरों के झण्डे और सब से आगे थी ज़ार की तस्वीर। जुलूस धीरे-धीरे अपने मार्ग में बढ़ रहा था। सरकार की तरफ से भी काफ़ी प्रबन्ध था। २१वीं जनवरी की रात को ज़ार ने १९वीं जनवरी के लिए ग्राण्ड ड्यूक व्लाडीमिर को डिक्टेटर नियुक्त कर उसे निरङ्कुश अधिकार दे दिया। जनता को शान्त रखने का उसे आदेश दे दिया गया था। वह जनता के विरुद्ध अपनी तमाम सेना का प्रयोग कर सकता था। पिटर्सबर्ग में इतनी सेना इकट्ठी की गई थी कि तमाम शहर में सेना ही सेना दिखाई पड़ती थी।

जब जुलूस कुछ दूर जा चुका, तो उसे सामने सेना खड़ी हुई दिखाई दी। किसी ने जुलूस को नहीं रोका और जुलूस बढ़ता गया। परन्तु जब वह सेना के नज़दीक पहुँचा तो एकाएक घुड़सवारों ने उस पर हमला कर दिया। जब घुड़सवार जनता को पीटते हुए जुलूस के उस पार पहुँच गए, तब इस पार जनता पर गोलियाँ चलाई गईं। इसके बाद फिर घुड़सवारों ने हमला किया। भागते हुए के सिर धड़ से अलग कर दिए गए। जो घायल थे वे मौत के घाट उतार दिए गए। गपन ने येन-केन-प्रकारेण अपनी रक्षा की। यह कत्ले-आम कुछ समय तक जारी रहा। रचलसेलबर्ग में भी मजदूरों पर गोली चलाई गई। मजदूर छाती खोल कर

खड़े हो गए और कहने लगे—“हम लोग जान दे देंगे, पर एक इञ्च भी पीछे नहीं हटेंगे।”

अब ज़ारा ट्रॉट्ज़की पुल का भी हाल सुन लीजिए। जब जुलूस सेना के बिल्कुल पास पहुँच गया, तब सेनापति ने हुक्म दिया—‘फायर!’ उसके मुँह से आज्ञा निकलते ही घुड़सवारों ने कार्य आरम्भ कर दिया। मजदूर औरतें, बच्चे तथा बूढ़े ज़मीन पर पड़े दिखाई देने लगे।

वासीलिवस्की द्वीप में मजदूरों ने दूसरा ही ढङ्ग अक्रियार किया। उन्होंने सरकारी स्थानों को तोड़-फोड़ डाला और घुड़सवारों पर ईंटें, पत्थर तथा गोलियाँ चलाईं।

१९वीं जनवरी के हत्याकाण्ड के विरोध में समस्त रूस के मजदूरों ने हड़ताल कर दी। अनेक स्थानों पर मजदूरों और पुलिस तथा सेना में सङ्घर्ष हुआ।

अब तक रूस के किसानों तथा मजदूरों का ज़ार पर बहुत-कुछ विश्वास था। वे ज़ार को निर्दोष समझते थे और समझते थे कि इन सारे अत्याचारों के उत्तरदायी ज़ार के अफ़सर ही हैं। उनका यह भी विश्वास था कि ज़ार को उनके कष्टों का पता नहीं है, अन्यथा वे अवश्य ही उनके कष्ट दूर कर देते। परन्तु १९वीं जनवरी की घटना ने उनकी आँखें खोल दीं। उनकी अज्ञानता, विश्वास तथा आशा पर पानी फिर गया। ज़ार पर से सदा के लिए उनका विश्वास उठ गया। और उन्होंने अपने पाँव पर खड़ा होना सीख लिया। १९वीं जनवरी के पश्चात् रूस की जनता ने ज़ारशाही का अन्त करने का निश्चय कर लिया। रोज़ा लक्ज़म्बर्ग ने ठीक ही कहा था कि १ जनवरी वाले मजदूरों के प्रदर्शन के चारों तरफ़ कार्ल मार्क्स की आत्मा मँडरा रही थी, यद्यपि उसके आगे-आगे गिरजाघर के झण्डे तथा ज़ार की तस्वीर थी।

मजदूरों के आन्दोलन ने १ जनवरी के पश्चात् विशाल रूप धारण कर लिया। जनवरी से लेकर अक्टूबर तक के महीने आन्दोलन के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। इन महीनों में प्रत्येक दिवस तथा प्रत्येक सप्ताह आन्दोलन बढ़ रहा था। प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में मजदूर शामिल होते रहे। यहाँ तक कि सन् १९०५ के मध्य तक रूस के तमाम मजदूर आन्दोलन में भाग लेने लगे। इस आन्दोलन के दो रूप थे। पहिला रूप राजनैतिक था और ज़ारशाही का अन्त करना चाहता था तथा दूसरा रूप आर्थिक था और मिल-मालिकों को ठिकाने लगाना चाहता था। मजदूरों की सब से बड़ी राजनैतिक माँग यह थी कि विधान-विधायिनी सभा शीघ्र बुलाई जावे। प्रतिदिन आठ घण्टे से अधिक काम न लेने की उनकी सब से बड़ी आर्थिक माँग थी।

रूस के अनेक ज़िलों—विशेषतः पोलैण्ड में—मजदूरों ने ज़ारशाही के विरुद्ध हथियार उठा लिए। गर्मियों में इवानवोसनेसेंस्क में हड़ताल हुई। ५०,००० मजदूर इस हड़ताल में शरीक हुए थे। हड़ताल एक सप्ताह तक जारी रही। शहर में मजदूरों को सभा करने की आज्ञा न थी। अतएव उन्होंने टटका नदी के किनारे अपनी सभा की। पूँजीपति उनके साथ कुछ रियायत करने को तैयार थे। परन्तु मजदूरों की मुख्य माँगों को वे अनसुनी कर रहे थे। इधर मजदूरों को दानों के लाले पड़ने लगे और उनके बाल-बच्चे भूखों मरने लगे, अतः मजदूर अपने कामों पर वापस चले गए। परन्तु उन्होंने पूँजीपतियों से साफ़ कह दिया कि यद्यपि हम वापस आ रहे हैं। परन्तु हम अपने को पराजित नहीं समझते।

इस बढ़ते हुए आन्दोलन से सहम कर तथा उसे शान्त करने के लिए ज़ार ने कुछ रियायतें कीं। परन्तु



ये रियायतें नितान्त निस्सार थीं, इसलिए मज़दूरों ने उनकी पूरी अवहेलना की। ज़ार ने 'सिनेटर शिदलो-वस्की कमीशन' नियुक्त किया। इसका काम था, मज़दूरों की नाराज़गी के कारणों को मालूम करना। ज़ार ने एक और 'बलिज़िन कमीशन' नियुक्त किया। इस कमीशन का कार्य था स्टेट ड्यूमा बुलाने के लिए एक योजना तैयार करना। इस ड्यूमा को केवल बहस करने का अधिकार था, क़ानून बनाने का नहीं।

मज़दूर इन रियायतों से बिल्कुल सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने उनकी फिर अवहेलना की। अब मज़दूरों ने अपने आन्दोलन को किसानों में फैलाना आरम्भ किया। दो महीने के अन्दर ही केन्द्रीय रूस, पोलैण्ड, पश्चिमीय सूबों, बाल्टिक तथा काकासस के किसानों में आन्दोलन फैल गया। अमीर-गरीब—सभी किसान-आन्दोलन में भाग लेने लगे। ३१ जुलाई को मास्को में 'अखिल रूसी-किसान-सङ्घ' की प्रथम गुस कॉङ्ग्रेस हुई। किसानों के आन्दोलन के भी, मज़दूर-आन्दोलन की भाँति दो रूप थे—(१) आर्थिक और (२) राजनैतिक। किसान आन्दोलन के अग्रगण्य वे किसान थे, जो किसी समय सेना में काम कर चुके थे। जिन किसानों ने रूस की सेना में भरती होकर, रूस-जापान युद्ध में भाग लिया था, वे पराजित होकर अपने-अपने घर लौट आए थे। वे ही इस आन्दोलन में सब से अधिक दिक्कतें ले रहे थे।

सन् १९०५ की गर्मियों में काले सागर में एक रूसी बेड़ा पड़ा था। इसी बेड़े के 'पोटेस्किन' नाम के एक 'क्रूज़र' ने आर्थिक सङ्कटों के कारण १४ जून को विद्रोह कर दिया। क्रूज़र के खेने वालों ने अपने अफ़सरों को पकड़ लिया, अपनी राजनैतिक माँगें पेश कीं और ओडेसा के हड़तालियों के साथ अपनी सहानुभूति दिखलाई। 'पोटेस्किन' का एक मल्लाह एक अफ़सर द्वारा मार डाला गया। उसको गाड़ने के लिए वे लोग किनारे आए। अपना कार्य समाप्त कर वे पुनः समुद्र में चले गए। इस विद्रोह को दबाने के लिए सरकार ने एक बेड़ा भेजा। १७ जून को क्रूज़र की इस बेड़े से भेंट हुई। 'पोटेस्किन' बेड़े तक खेता चला गया और दूसरे जहाज़ों के मल्लाहों से विद्रोह में शामिल होने के लिए कहा। उस बेड़े के एक बड़े जहाज़ ने 'पोटेस्किन' का साथ दिया। पर वह अधिक काल तक विद्रोह पर टिक न सका और बहुत शीघ्र विद्रोह को हटा लिया। कुछ दिनों बाद 'पोटेस्किन' ने भी आत्म-समर्पण कर दिया। कुछ लोग गिरफ़्तार कर लिए गए और कुछ भाग गए और उनका पता न चला।

उपर्युक्त घटना अपने ढङ्ग की पहिली घटना थी। यद्यपि यह विद्रोह असफल रहा, तथापि यह बड़ा ही महत्वपूर्ण था।

सन् १९०५ की सब से महत्वपूर्ण घटना अक्टूबर की हड़ताल थी। इस हड़ताल का श्रीगणेश मास्को से हुआ था, जहाँ के मज़दूर हड़ताल करने में सब से आगे थे। सितम्बर के अन्त में मास्को के प्रेस-कर्मचारियों ने हड़ताल कर दी। प्रतिदिन हड़ताल फैलने लगी और कर्मचारियों के नए-नए समुदाय हड़ताल में आने लगे। ब्रेस्टर रेलवे में हड़ताल हुई। २० सितम्बर को स्टेट रेलवे के कर्मचारियों की कॉङ्ग्रेस पिटर्सबर्ग में हुई। रूस की सरकार इस कॉङ्ग्रेस से बहुत भयभीत थी और उसके कार्यों को पसन्द नहीं करती थी। उसने कॉङ्ग्रेस के डेलीगेटों को गिरफ़्तार कर लिया। जब मास्को में इस गिरफ़्तारी की खबर पहुँची, तो रेलवे के तमाम मज़दूरों ने हड़ताल कर दी और विद्रोह की तैयारी करने लगे।

( अगले अङ्क में समाप्त )

## लीग ऑफ़ नेशन्स और कोरिया का स्वातन्त्र्य आन्दोलन

[ श्री० देवकीनन्दन विभव, एम० ए० ]

**सा** आज़्यवाद संसार में अनेक पापों और अशान्तियों का कारण है। जब तक संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ साम्राज्य-विस्तार की आकांक्षा अपने हृदय-तल में छिपाए रहेंगी, तब तक उच्च से उच्च सिद्धान्त और विकासपूर्ण तर्कवाद सार्वभौमिक शान्ति और समृद्धि स्थापित करने में असफल ही होते रहेंगे। 'आत्म-निर्णय' ( Self-determination ) का सिद्धान्त अकाव्य उच्च और महान है, सभी सभ्य राष्ट्रों ने इसे स्वीकार किया है। परन्तु यह सिद्धान्त केवल सबल राष्ट्रों के लिए है, निर्बलों के लिए नहीं। संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियों के सामने जब इसी सिद्धान्त का दलित राष्ट्रों के सम्बन्ध में प्रयोग करने का प्रश्न आता है, तब वे अपने विचित्र तर्कवाद से इसे कुचल डालते हैं। और, तारीफ़ यह है कि संसार की दृष्टि में तब भी वे भलेमानुष और सभ्य ही बने रहते हैं।

यूरोप की शक्तियों की मदान्धता का हाल पाठक बहुत पढ़ चुके हैं। अब ज़रा एक एशियायी महाशक्ति की लीला भी पढ़िए। जापान आजकल एशिया की एक महान-शक्ति है। उसने एशिया का माथा ऊँचा किया है। एशिया के देश उससे भावी प्राच्य और पाश्चात्य सङ्घर्ष में नेतृत्व ग्रहण करने की आशा करते हैं। एशिया की बिखरी हुई छोटी-छोटी शक्तियों को ही सङ्गठित करके जापान, अमेरिका और यूरोप की शक्तियों से प्रतिधोतिता में अपने अस्तित्व को स्थिर और विस्तीर्ण बना सकता है। एशिया के बाज़ारों से ही जापान ने इतनी उन्नति प्राप्त की है और भविष्य में वे ही उसकी आशाएँ हैं। परन्तु यह सब कुछ होने पर भी जापान की शक्तियों का उपयोग एशिया के हित में नहीं हो रहा है। जापान ने शिक्षा, कला-कौशल और व्यापार आदि में तो पाश्चात्य देशों का अनुसरण किया ही है, इसके अतिरिक्त वह उनकी अन्य कुटिल नीतियों और दृष्टियों के पङ्क में भी उन्हीं की तरह फँसता जाता है। इङ्ग्लैण्ड, जर्मनी और फ़्रान्स आदि की तरह साम्राज्य-विस्तार की लालसा उसमें भीतर ही भीतर खूब धधक रही है। जिस तरह यूरोप की शक्तियाँ नए-नए देशों और उपनिवेशों में अपने साम्राज्य का विस्तार करने लगी हैं, उसी तरह जापान अपने अड़ोस-पड़ोस के देशों को, जो उसके भाई-बन्धु हैं, शिकार बनाने में व्यस्त है। जिनके आधार पर उसने अपनी इतनी उन्नति और विकास किया है। यूरोप की शक्तियाँ चीन में जिस नीचतापूर्ण नीति का अवलम्बन करती रही हैं, उसका समर्थन किसी भी तर्क द्वारा नहीं हो सकता। परन्तु चीन के सम्बन्ध में जापान की जो नीति रही है, वह भी बड़ी ही निन्दनीय और घृणित है। एक ओर अगर जापान चीन को यूरोप की शक्तियों के प्रभाव से बचाना चाहता है, तो दूसरी ओर उसे समूचा निगल जाने की धुन में है। फिर कोरिया की स्वतन्त्रता का अपहरण करने तथा उसकी राष्ट्रीय भावनाओं को कुचलने में जापान ने जिन साधनों का उपयोग किया है, उससे क्या जापान पर किसी भी एशियाई शक्ति का कुछ विश्वास रह जाता है? वहाँ उसने जिस निर्लज्जतापूर्ण दमन-नीति का प्रयोग किया है, उससे यह बात साबित होती है कि साम्राज्यवाद की लालसा में फँसा हुआ एशिया का एक

राष्ट्र भी वही कुकृत्य कर सकता है, जो यूरोप की शक्तियाँ साम्राज्य-विस्तार की लालसा में करती रही हैं।

जापान के पूर्व में कोरिया नाम का एक बहुत छोटा सा देश है और इन दोनों के बीच में समुद्र की उताल तरङ्गें अपना खेल खेलती रहती हैं। इधर दो शताब्दियों से जापान की जन-संख्या अधिक तेज़ी से बढ़ रही है, इसलिए इस समस्या को हल करने के लिए वह नए-नए क्षेत्र अपने अधिकार में करना चाहता है। यही कारण कोरिया की स्वतन्त्रता-अपहरण का भी है। जापान पचास-साठ वर्ष पहले एक साधारण राष्ट्र था। उसने कई बार परोक्ष रूप से कोरिया को हड़प जाने की चेष्टा की, परन्तु चीन के हस्तक्षेप के कारण वह अपनी मनो-कामना पूरी करने में असफल रहा।

कोरिया छोटा सा देश है, परन्तु उसमें राष्ट्रीयता की प्राग सदा से धधकती रही है। सन् १८७६ में कोरियनों ने कई जापानियों को मार डाला। बस जापान को कोरिया से छेड़छाड़ करने का अवसर मिल गया। अन्त में दोनों देशों में समझौता हुआ। कोरिया ने अपने बन्दरगाह में जापान को कुछ व्यापारिक अधिकार दे दिए, परन्तु साथ में ही जापान से अपनी स्वतन्त्रता भी स्वीकार करा ली। कोरियावासी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए व्याकुल थे, इसलिए उन्होंने अन्य देशों से भी सन्धि करना चाहा। अमेरिका से भी सन्धि हो गई और उसने स्वीकार किया कि यदि कोई देश उसकी स्वतन्त्रता अपहरण करने की चेष्टा करेगा तो अमेरिका उसकी रक्षा करेगा।

सन् १८८१ में कोरिया में भयङ्कर अकाल पड़ा। उप-द्रव होने लगे और लोगों ने जापानी दूतावास पर भी आक्रमण कर दिया। कई जापानी मारे गए और कुछ भाग गए। इस घटना से जापान के लिए फिर कोरिया पर आक्रमण कर उसे अपने अधीन करने का बहाना मिल गया, परन्तु कोरिया की सरकार ने एक लाख येन और कुछ व्यापारिक सहूलियतें देकर उसे शान्त किया।

जापान, कोरिया पर अपना प्रभुत्व जमाने की हर तरह से कोशिश कर रहा था, परन्तु चीन उसके मार्ग का महान बाधक था। वह कोरिया में जापान का बढ़ता हुआ प्रभाव देख कर सजग हो गया था। फलतः उसने भी कोरिया में अपने दस हज़ार सैनिक भेज दिए थे। चीन एक प्रकार से बहुत दिनों से कोरिया का संरक्षक बना चला आता था, इसलिए जापान के लिए आव-श्यक था कि वह पहले कोरिया को चीन के प्रभाव से मुक्त करे और उसके सैनिकों को निकाल बाहर करे। उसने कोरिया के विद्रोहियों को भड़का कर सङ्गठित किया और चीन को यह कह कर कि वह बलवाइयों को दबाने के लिए, कोरिया के बादशाह की सहायता के लिए, सैनिक भेज रहा है, अपने दस हज़ार सैनिक सियोल रवाना कर दिए। जब कोरिया में चीन की अधिक शक्ति हो गई तो जापान ने कोरिया के बादशाह को अपनी नई-नई शर्तें मानने के लिए विवश किया। सब से पहले उसने कोरिया को चीन की संरक्षता तोड़ने और चीनी सैनिकों को अपनी सीमा से निकाल बाहर करने के लिए विवश किया। साथ ही उसने कोरिया



की बहुत सी खानें और रेलवे-सम्बन्धी अधिकार हड़प कर, सियोल पर भी कब्जा कर लिया।

इसी समय चीन और जापान में पारस्परिक मन-मुटाव हो गया और अन्त में दोनों देशों में युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में चीन पराजित हुआ। जापान ने अपने मार्ग की बाधा को हटी हुई देख कर कोरिया पर बेधड़क पंजा बढ़ाना शुरू किया। कोरिया के सम्राट के लिए उसने पहले ही अपने पचास सलाहकार भेज दिए थे और वे कोरिया से ऐसी व्यापारिक शर्तें स्वीकार कराने की चेष्टा कर रहे थे, जिनसे उसकी स्वतन्त्रता पर सीधा प्रहार होता था। कोरिया की रानी ने इन शर्तों का विरोध किया। बादशाह भी जापान के बढ़ते हुए हाथ से चौकचा हो गया था। इस पर जापानी सेनाओं ने बादशाह का महल घेर लिया, रानी मार डाली गई, बादशाह कैद कर लिया गया, और जापान का एक पिछू वहाँ का शासक बना दिया गया।

इस समय यदि रूस जापान की प्रतिस्पर्धा में न खड़ा हो जाता तो कोरिया की स्वतन्त्रता का अन्त हो गया होता। परन्तु जापान की बढ़ती हुई शक्ति ने रूस को सजग कर दिया था। अवसर देख कर कोरिया का बादशाह जापान की कैद से निकल भागा और रूस के आश्रय में चला गया। जापान को शक्तिशाली रूस से लोहा लेने का साहस न था, इसलिए कोरिया की स्वतन्त्रता की रक्षा हो गई। सन् १८८६ में कोरिया, जापान और रूस में एक सन्धि हो गई, जिसमें यह निश्चय हुआ कि जापान और रूस दोनों अपनी-अपनी सेनाएँ कोरिया से हटा लें, कोई उसकी सेना और पुलिस के सञ्चालन-कार्य में हस्तक्षेप न करे और जापान वहाँ रहने वाली अपनी प्रजा की हरकतों की ज़िम्मेदारी ले।

इस तरह कोरिया को अपनी राष्ट्रीय शक्तियों के सङ्गठित करने का अच्छा अवसर मिल गया। परन्तु वहाँ के शासकों ने इसका उचित प्रयोग करने की चेष्टा न की। उनके स्वेच्छाचार और अत्याचारों ने कोरिया में एक नवीन भाव को जन्म दिया। कुछ देश-भक्तों ने समझ लिया कि जब तक उनके देश में एक नवीन शासन-प्रणाली का, जिसमें जनता का शासकों पर अङ्कुश रहे, जन्म न होगा तब तक देश का कल्याण नहीं हो सकता। प्रजातन्त्र के यही प्रारम्भिक विचार थे। इस नवीन विचार के मनुष्यों ने एक नई संस्था का जन्म दिया, जिसका नाम “स्वातन्त्र्य समाज” था। क्रिस्तिन जैसन इस आन्दोलन का जन्मदाता था। वह कोरिया-सरकार द्वारा १८७४ में निर्वासित कर दिया गया था। परन्तु कोरिया, जापान और रूस का समझौता होने के बाद उसे फिर कोरिया में आने की आज्ञा मिल गई।

‘स्वातन्त्र्य समाज’ शुद्ध राष्ट्रीयता का पोषक था। वह कोरिया में जापानी आधिपत्य का विरोधी तो था ही, साथ ही वह रूस के बढ़ते हुए प्रभाव और हस्तक्षेप को भी रोकना चाहता था। सन् १८८६ से पहले कोरिया की सेना का शिक्षा-भार जापानियों के हाथों में था, अब बादशाह और उसकी सरकार यह कार्य-भार रूस को देना चाहती थी। ‘स्वातन्त्र्य समाज’ ने इसके विरोध में अपनी आवाज़ उठाई और इसके दस हजार सदस्य राज-महल के पास इकट्ठे हुए और जब तक बादशाह ने रूसी अफसरों को बिदा नहीं कर दिया, तब तक वहाँ से नहीं हटे। परन्तु ‘स्वातन्त्र्य समाज’ इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसका नेता सिङ्गमेनरी इन बातों पर जोर देने लगा कि कोरिया को अब अपने देश में विदेशियों के प्रभाव और हस्तक्षेप का पूर्णतः अन्त कर देना चाहिए। जो व्यापारिक सुविधाएँ अन्य देशों को दी जायँ, उनमें कोरिया की स्वाधीनता की पूरी रक्षा हो, राजनीतिक

अपराधियों के मामले न्याय के आधार पर खुली अदालतों में हों और देश के शासन की व्यवस्था ठीक की जाय। जब शासकों ने इन माँगों पर कुछ ध्यान न दिया, तो सारे देश में भीषण आन्दोलन की लहर फैल गई। सभाओं और प्रदर्शनों की धूम मच गई। पुरुष ही नहीं, स्त्रियाँ भी अपने घरों से निकल कर आन्दोलन में भाग लेने लगीं। बादशाह चौंक उठा। उसने आज्ञा दी कि ‘स्वातन्त्र्य समाज’ बन्द कर दिया जाय और जो न माने उसे गिरफ्तार कर लिया जाय। हज़ारों मनुष्य अपने को गिरफ्तार कराने के लिए पुलिस-स्टेशनों पर इकट्ठे होने लगे। सरकार घबड़ा गई। उसकी जेलों में इतने आदमियों को रखने की जगह न थी, इसलिए उसने उनके १७ नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। इससे जनता का क्रोध और भी भड़क उठा और उसने प्रतिवाद में बड़ी-बड़ी सभाएँ कीं। परिणाम यह हुआ कि सरकार ने नेताओं को छोड़, उनकी माँगों पर उचित ध्यान देने का वचन दिया।

कोरिया का बादशाह इस समय रूस के हाथ की कठपुतली बना हुआ था। उसमें उसके विरुद्ध कुछ करने का साहस न होता था। जनता ने जब बादशाह का यह रुख देखा तो फिर वह उठ खड़ी हुई। सरकार के विरोध में सभाएँ और प्रदर्शन होने लगे। शासकों ने क्रुद्ध होकर जुलूसों पर पुलिस को आक्रमण करने की आज्ञा दी। परन्तु उस समय कोरिया की पुलिस में भी राष्ट्रीय भावों की कमी नहीं थी। उसने अपने हथियार फेंक दिए और अपने निहत्थे तथा निरपराध भाइयों पर आक्रमण करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इस पर सेना बुलाई गई। उसने अपनी पाशविक शक्ति से जनता पर आक्रमण करके उसे तितर-बितर कर दिया। दूसरे दिन जनता ने सरकार की पाशविक शक्ति का सामना करने के लिए निष्क्रिय-प्रतिरोध का अवलम्बन करने का निश्चय किया। हज़ारों मनुष्य राजमहल के पास धरना देकर बैठ गए। बादशाह ने फिर एक चाल चली—उनकी माँगों को पूरा करने का वचन दिया। परन्तु फिर भूल गया, सभाएँ फिर सङ्गीनों द्वारा बन्द की जाने लगीं और सार्वजनिक नेता गिरफ्तार करके जेलों में भेज दिए गए।

इस समय पूर्व में रूस और जापान के हितों का इतना सङ्घर्ष हो चला था कि शीघ्र कोरिया के प्रश्न को लेकर उनमें महायुद्ध छिड़ गया। छोटे से जापान ने विशाल-काय रूस को पछाड़ दिया। इस युद्ध ने कोरिया के भाग्य का भी निर्णय कर दिया। अन्य शक्तियों का साम्य नष्ट हो गया और जापान उसका प्रयोग अपने हित में करने के लिए स्वतन्त्र हो गया। रूस-जापान युद्ध में जापान की विजय और कोरिया का स्वातन्त्र्य नाश एक साथ ही हुआ। बादशाह से ज़ब-दस्ती एक सन्धि-पत्र पर दस्तखत कराए गए और इसके बाद उसकी शक्ति-बस नाम-मात्र को रह गई।

जापान ने अपनी शताब्दियों की आकांक्षा को पूरी करने के लिए धीरे-धीरे कोरिया के शासन के प्रत्येक विभाग में अपना प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा का प्रारम्भ किया। अनेक विभागों में कोरियनों की जगह जापानी नियुक्त किए गए। जापान यह समझता था कि कोरिया की राष्ट्रीय भावनाओं का जब तक अन्त न होगा तब तक उसे स्थायी सफलता नहीं मिलेगी, इसलिए उसने कोरिया के प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन पर अपना अङ्कुश रखा और बिना उसकी आज्ञा के किसी तरह की सभा और प्रदर्शन करना बन्द कर दिया। जिन लोगों ने जापान की इस नीति का विरोध किया, उन्हें या तो निर्वासित कर दिया गया अथवा जेल में डूँस दिया गया। यही नहीं, जापान ने कोरिया में जापा-

नियों को बसाने के लिए उन्हें अनेक सुविधाएँ दीं और बहुत सी ज़मीन उन्हें नाम-मात्र के मूल्य पर दे दी।

सन् १९०५ में जापान ने कोरिया के बादशाह के सामने कई विचित्र शर्तें पेश कीं। उन शर्तों का तात्पर्य यही था कि कोरिया की वैदेशिक नीति के निर्णय करने का अधिकार जापान के हाथ में हो और कोरिया का शासन जापानी प्रधान और वकील की देख-रेख में हो। जनता ने इस तरह की शर्तों का पूर्ण विरोध किया। सम्राट भी इस तरह की शर्तें स्वीकार नहीं करना चाहता था। उसने अपना एक प्रतिनिधि अमेरिका के प्रेज़िडेंट रूज़वेल्ट के पास, अपनी दुख-गाथा सुनाने और सन् १८८२ की सन्धि का स्मरण दिलाने के लिए भेजा। यही नहीं, उसने अपना एक प्रतिनिधि हेग-कॉन्फ़रेन्स में भी भेजा। परन्तु हेग-कॉन्फ़रेन्स ने उसकी बातों को सुनने तक से इन्कार कर दिया। प्रेज़िडेंट रूज़वेल्ट ने स्पष्ट कह दिया कि जो राष्ट्र अपने स्वावलम्बन पर निर्भर नहीं रह सकता, दूसरा उसकी कोई मदद नहीं कर सकता। यह घटना इस बात को अच्छी तरह से स्पष्ट कर देती है कि संसार के उच्च अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त केवल बलशाली देशों के हित के लिए ही हैं, निर्बल और दलित राष्ट्रों के लिए उनका कोई प्रयोग नहीं है। इधर जब बादशाह ने नवीन सन्धि-पत्र पर दस्तखत करने से इन्कार किया तो जापान ने उसे तख़्त से उतार कर कैद कर लिया और उसीके वंश के अपने एक कठपुतले को बादशाह बना कर अपनी शर्तों पर दस्तखत करा लिए। नए बादशाह को कोई अधिकार नहीं था। शासन का सारा काम जापान के रेज़िडेंट-जनरल के हाथ में था। कोरिया की बची-खुची स्वतन्त्रता का भी अन्त हो गया।

जापान ने कोरिया की स्वतन्त्रता का अपहरण कर लिया, लेकिन उसकी राष्ट्रीय भावनाओं को न कुचल सका। जब वह अधिक दमन करता था तो यह शक्ति भी भीतर ही भीतर प्रवाहित होने लगती थी और मौक़ा पाते ही यह दावानल की तरह भड़क उठती थी। सन् १९०६ में एक कोरिया-निवासी ने प्रिन्स ह्यो को मार डाला। उसके स्थान में काउण्ट टिरोबी रेज़िडेंट-जनरल बन कर आया। सारे देश में फ़ौजी शासन की व्यवस्था की गई। धर-पकड़ होने लगी। ८० हज़ार से भी अधिक देश-भक्त जेलों में डूँस दिए गए। स्त्री, बच्चे और वृद्ध तक कोड़ों से पीटे गए। देश में चारों तरफ़ हाहाकार मच गया। हज़ारों कोरियावासी अपना घर-द्वार और संपत्ति छोड़ कर मन्चूरिया चले गए।

जापान के भयङ्कर अत्याचारों से पीड़ित होकर हज़ारों कोरियन युवक पहाड़ों में छिप गए और अपना सामरिक सङ्गठन करने लगे। वे अवसर पाते ही जापानी सैनिकों पर टूट पड़ते और उन्हें मार-काट कर पहाड़ों में भाग जाते थे। इससे चिढ़ कर जापान ने और भी भयङ्कर दमन प्रारम्भ कर दिया। देश-भक्तों के गाँव के गाँव जला दिए, लोगों को कत्ल किया और स्त्रियों तक की इज़्ज़त पर हमला किया। बड़े-बड़े सार्वजनिक नेता पकड़ लिए गए और उन्हें सात-सात और दस-दस साल के लिए कारागार में बन्द कर दिया। कारागार में भी उन्हें महान यन्त्रणाएँ दी जाती थीं। उन्हें नज़ा करके कोड़े लगाए जाते थे और उनके हाथ काठ में दे दिए जाते थे।

( अगले अङ्क में समाप्त )



# ❀❀ 'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ ❀❀



(दाहिने) पं० रामचन्द्र शर्मा वैद्यराज और पं० हरिहरदत्त शर्मा, एम० ए०—दोनों ही सज्जन कनखल (हरद्वार) के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता हैं।



कुमारी जी० एम० डीसोज़ा; एल० आर० सी० पी० (लण्डन) एम० आर० सी० एस० (इंग्लैण्ड) आप मट्टानचेरी (कोचीन) के 'वीमेन एण्ड चिल्ड्रेन हॉस्पिटल' की सर्जन इन्चार्ज हैं।



श्री० पं० तुलाराम जी—आगरा वार-कौन्सिल के १७वें डिक्टेटर। आप तीन महीने की सज़ा काट चुके हैं।



रायबरेली ज़िले के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्त्ताओं के सहभोज का दृश्य—यह सहभोज गत १६ मार्च को श्री० पित्रेय जी द्वारा ऊँचाहार ग्राम में दिया गया था। बीच में × चिन्हयुक्त खड़े, श्री० पित्रेय जी और बैठे हुए श्री० शीतलासहाय जी।



श्री० मदनमोहन उपाध्याय—आप प्रयाग के एक उत्साही राष्ट्रसेवक हैं। ६ मास की कठिन सज़ा भोग चुके हैं।



यह चित्र उस समय का है, जबकि कराची में, श्री० एफ० के० नरीमेन आदि धम्बई के प्रतिनिधि, बम्बई में एक जुलूस निकालने के लिए, सरदार किशन-सिंह से स्वर्गीय सरदार भगतसिंह का भस्मावशेष ले रहे हैं। पुष्पाच्छादित मञ्जूषे में सरदार के चित्र के साथ उनका भस्मावशेष है।

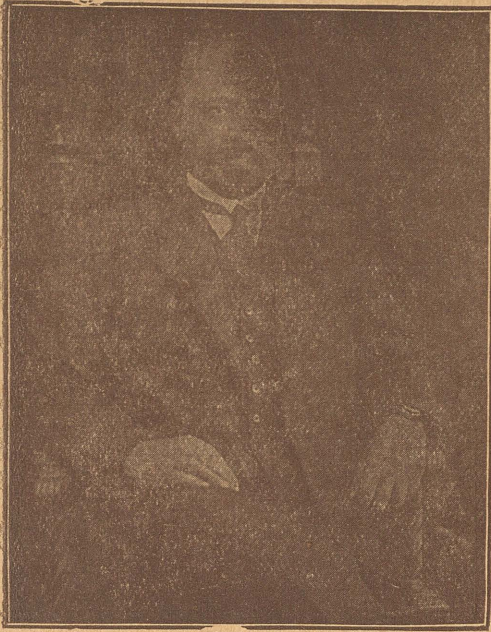


श्रीमती मारठा वी० सिंह—आप पटना के बादशाह नवाब रजवी प्रेकटीसिङ्ग स्कूल की प्रधान शिक्षयित्री हैं।

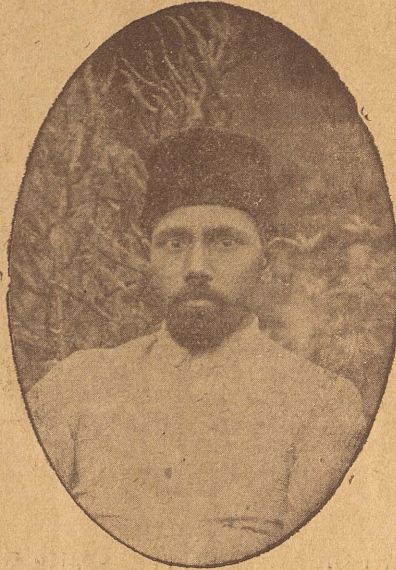


# ❁ 'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ ❁

प्रतिभाशाली उर्दू पत्र-सम्पादकों की चित्रावली



ऑनरेबल जस्टिस सर अब्दुल कादिर  
सरपरस्त स० 'अदबी दुनिया'



प्रो० मुहम्मद हुसेन सम्पादक  
'हसन-खयाल'



मि० महमूद अहमद इरफ़ानी स० 'इस्लामी-  
दुनिया' काहिरा



मि० अज़ीमुलकरीम स० 'नोबहार'



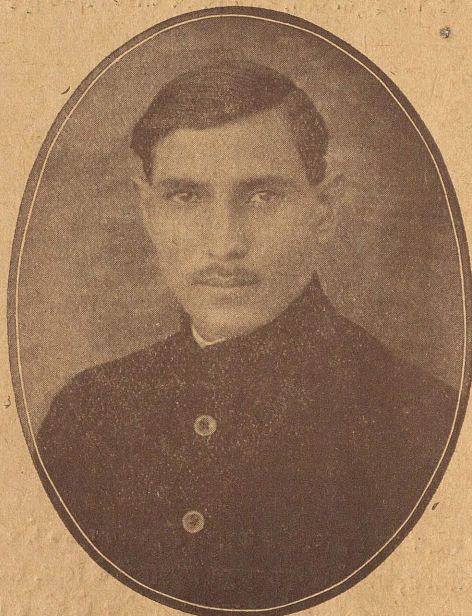
मि० सय्यद हामिदअली  
स० 'बालसखा'



मि० बदीउज़्ज़माँ स० 'अज़ीज़'



मि० अमोन सलोनवो स० 'नज़र'



प्रो० ज़फ़रताबाँ स० 'दौहय-उम्र'



मि० कैफ़ो चिरैयाकोटी स० 'सुमान'



# ❀ 'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ ❀



❀  
कुमारी शकुन्तला देवी—आप दातागञ्ज (बदायूँ) के मुख्तार पं० मुकुटबिहारी लाल सनाढ्य की कन्या हैं। आपकी उम्र अभी केवल बारह वर्ष की है, किन्तु इस साल आपने व्याकरण की मध्यमा की परीक्षा दी है।

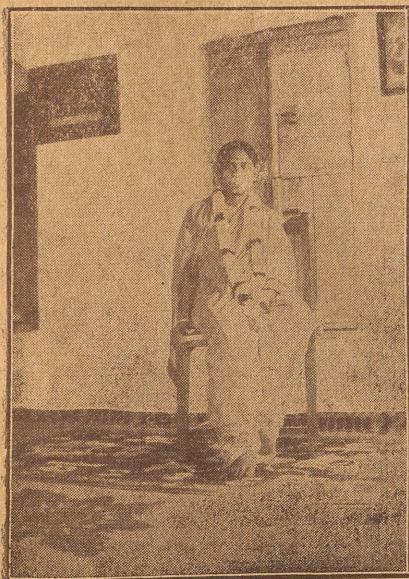
❀  
चि० निमाई—यह १५ महीने का सुन्दर शिशु इलाहाबाद के डॉ० पी० एल० चटर्जी का पौत्र है। इसे चर्खा चलाने का बड़ा शौक है। बालक बड़ों की अपेक्षा स्वराज्य का सच्चा समर्थक प्रतीत होता है।



राष्ट्रीय महिला-मण्डल, कराची—इन महिलाओं ने गत सत्याग्रह-संग्राम में अपूर्व कार्य किया है। बैठे हुई सभी महिलाएँ जेल-यात्रा कर चुकी हैं। नीचे बैठा हुआ दस वर्ष का एक बालक है, जो कोड़ों की मार खा चुका है।



श्रीमती डबल्यू० वाई० एम० कुक—आप पटने के “बादशाह नवाब रजवी ट्रेनिंग कॉलेज” की लेडी प्रिन्सिपल नियुक्त हुई हैं।



❀  
श्रीमती माया दीक्षित—आप अमरावती की ख्यातनामा महिला हैं। गत आन्दोलन में आपने अपूर्व राष्ट्रीय कार्य किया है।

❀  
दक्षिण कनाडा में पट्टर शाखा के ‘वीमेन्स इण्डियन एसोसिएशन’ द्वारा सञ्चालित हिन्दी क्लास की कुछ अध्यापिकाएँ तथा छात्राएँ। बैठे हुई महिलाओं में बाईं तरफ से तीसरी श्रीमती पी० सीतादेवी प्रधान हिन्दी अध्यापिका हैं। आपकी सेवाओं के उपलब्ध में छात्राओं ने आपको एक स्वर्ण-पदक प्रदान किया था।

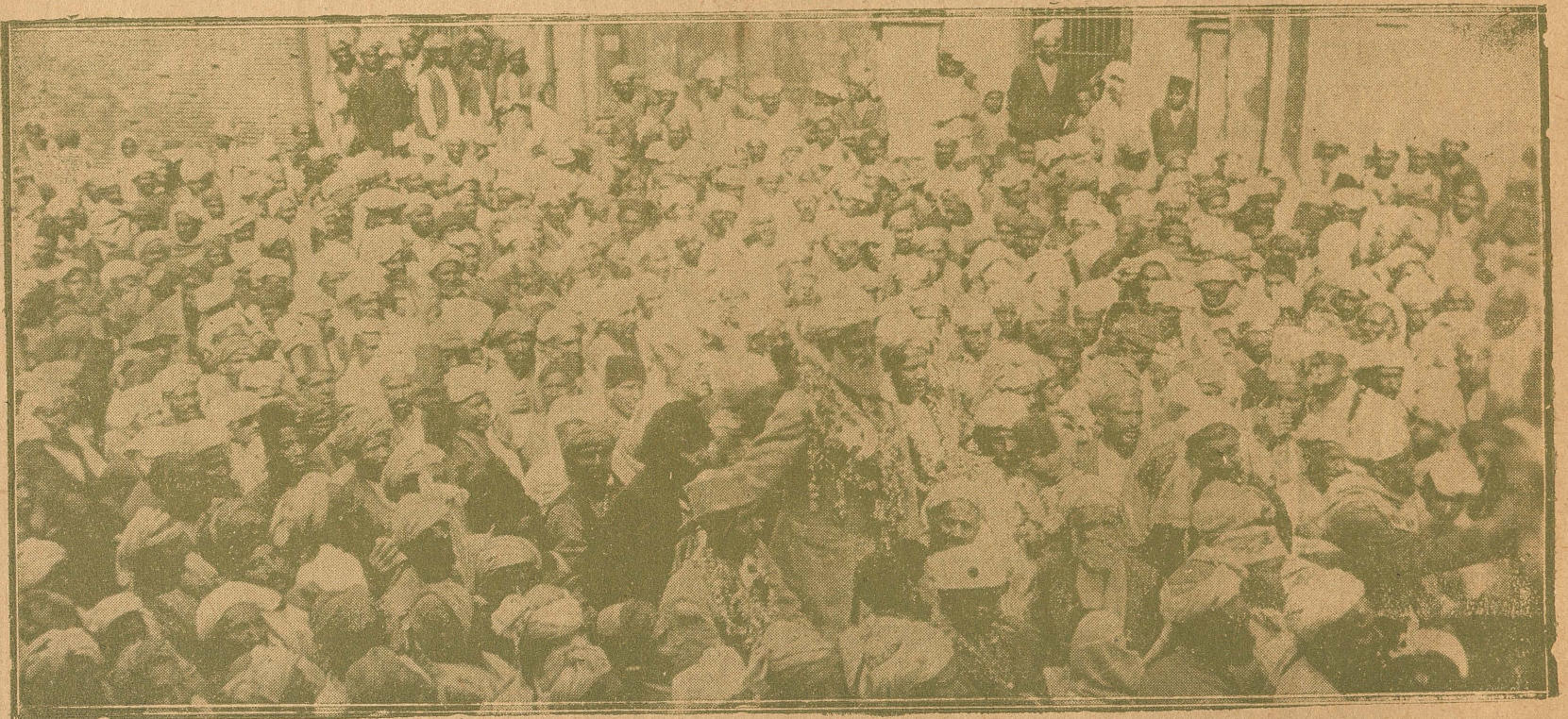




# ❀❀ 'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ ❀❀



काँग्रेस से वापस लौटने पर पेशावर में सीमा-प्रान्त के "गाँधी" खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ के अभूतपूर्व स्वागत का दृश्य—बीच में पाठक गाँधी-टोपी पहने हुए ख़ाँ साहब को देखेंगे।

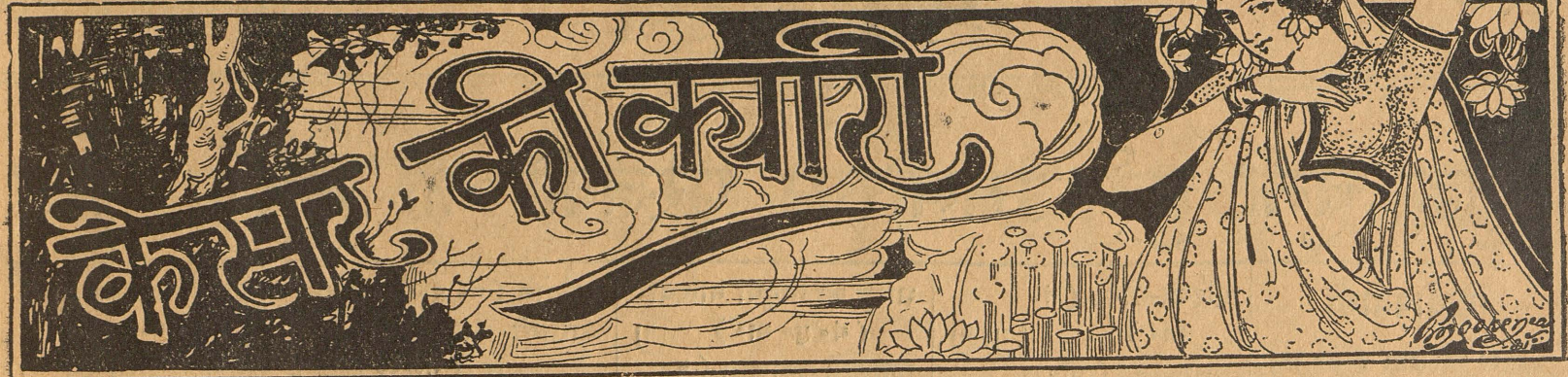


सीमा-प्रान्त के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध राष्ट्रीय नेता—आज़ाद लाल-बादशाह के स्वागत का दृश्य—जबकि वे काँग्रेस से सीमा-प्रान्त वापस लौटे थे।



चारसदा ( सीमा-प्रान्त ) के उस अभागे शहीद का शव—जो 'मोतीलाल-दिवस' के दिन पुलिस की गोलीयों का शिकार हुआ था।





साकी का अक्से-रुख नहीं जामे-शराब में ! वह चाँद है, जो डूब गया आफ़ताब में !!  
मतलब यह है, कि कत्ल करूँगा अताब में ! तलवार उसने भेज दी खत के जवाब में !!

### जवाब

कासिद के आते-आते खत एक और लिख रखूँ,  
जानता हूँ, वह जो लिखेंगे जवाब में।

—“ग़ालिब” देहलवी

उनको कहाँ है सत्रो तहम्मूल अताब में,  
दम भर के बाद और खत आया जवाब में।  
क्या-क्या फ़रेब दिल की दिए इज़तिाब में,  
उनकी तरफ़ से आप लिखें खत जवाब में।  
जी चाहता है, छेड़ के हूँ उससे हम कलाम,  
कुछ तो लगोगी देर सवाल-जवाब में।  
आशिक तो कब दबेंगे फ़रिश्तों से वादे मर्ग,  
तकरार हो न जाय सवाल-जवाब में।

—महाकवि “दाग” देहलवी

इज़हारे शौक उसने किया भी तो किस तरह,  
भेजा मेरा ही खत मेरे खत के जवाब में।  
रहना था चुप तुझे, मेरे इज़हारे हाल पर,  
लाखों सवाल हो गए पैदा जवाब में।  
पहिले लिखा कुछ और फिर उसने लिखा कुछ और,  
यों आप दो खत एक मेरे खत के जवाब में।

—“नूह” नारवी

मेरे पयामे शौक का अज़ाम देखिए,  
सर नामावर का भेज दिया है जवाब में।  
—“रफ़ीक” साहब  
“हाँ” का सवाल खत में है पे नामावर फ़िज़ून,  
लिखवा गया ‘नहीं’ भी, न उनसे जवाब में।

—“ज़या” देवान्दपुरी

मतलब यह है, कि कत्ल करूँगा अताब में,  
तलवार उसने भेज दी खत के जवाब में।  
अटक हुआ हूँ, देखिए होता है क्या मञ्जाल,  
हज़ामे नज़्म उससे सवाल जवाब में।  
महशर में तुझको दावरे महशर रहे ख़याल,  
यह दिन गुज़र न जाय सवाल-जवाब में।

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

### हवाब

मेरी नमूद क्या है जहाने-ख़राब में,  
बिजली में है चमक कि हवा है हवाब में  
—“अज़हर” अमृतसरी  
गुज़री जो सर से मौज तो पानी में मिल गया  
कितनी खुदी भरी थी निमामे-हवाब में !  
—“बिस्मिल” इलाहाबादी

१—सब, २—गुस्सा, ३—बेकरारी, ४—बात-  
चीत करना, ५—मरने के बाद, ६—पैग़ाम, ७—नतीजा  
८—छत ले जाने वाला, ९—नतीजा, १०—अन्तिम  
समय, ११—प्रलय, १२—न्याय करने वाला, १३—  
जीवन, १४—मिटने वाला संसार, १५—बुल्ला,  
१६—गुरू।

### शबाब

शोखी ने तुमको डाल दिया इज़तिराब में,  
कुछ तमकनत का लुफ़ न देखा शबाब में  
—महाकवि “दाग” देहलवी  
ताकाने-इश्क कौन है ऐसा मेरी तरह,  
रोती हैं हसरतें मुझे अहदे शबाब में।

—“नूह” नारवी

“आबिद” बलाये-इश्क बुताँ में कहाँ फँसे,  
तुमने यह घुन कहाँ से लगाया शबाब में।

—“आबिद” इलाहाबादी

क्या जाने आप हाल नशेबो फ़राज़े इश्क,  
रखिए कदम सँभाल के अहदे शबाब में !

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

### हिसाब

क्यों फ़िक्र इस कदर है रक़ीबों के बाब में,  
उनके गुनह भी डाल दो मेरे हिसाब में।  
दुनिया की बाज़े पुरस से अब तक नहीं निजात  
उलझा हुआ हूँ हथ के दिन भी हिसाब में।

—महाकवि “दाग” देहलवी

दोनों ने घर किया है निगहे इन्तेखाब में,  
दिल भी हिसाब में है, ज़िगर भी हिसाब में।  
क्या रोज़े हथ हम कहे उनके जवाब में,  
दुनिया के हैं गुनाह हमारे हिसाब में।

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

### आब

रखना कदम तसौवरे जानाँ सँभाल कर,  
काई है जा बजा मेरी चश्मे पुर-आब में।  
—महाकवि “दाग” देहलवी  
रुकता नहीं मिज़ा से यह फ़ितना बला का है,  
तिफ़ले सरशिक मचला है चश्मे पुर-आब में।

—“आबिद” इलाहाबादी

बहते हैं अश्क हर घड़ी दिन हो कि रात हो,  
दरिया का जोश है मेरी चश्मे पुरआब में।  
चमकी सरों पर, और दिलों से गुज़र गई,  
बिजली का था असर तेरी तेरे खुशआब में।  
—“बिस्मिल” इलाहाबादी

१७—चञ्चलता, १८—गुरू, १९—हताश, २०—  
ज़माना, २१—अच्छी सूरत वाले, २२—उतार-चढ़ाव,  
२३—दुश्मन, २४—सम्बन्ध, २५—सवाल जवाब, २६—  
पसन्द करना, २७—प्रलय का दिन, २८—ध्याव, २९—  
माशक, ३०—आँखें पानी भरी हुई, ३१—बरौनी, ३२—  
आँसू ३३—पानी रखने वाली तलवार।

### शराब

प शोख जो बताप मये-इश्क को हराम,  
ऐसे को दो लगाप भिगो कर शराब में !  
कुछ शान मग़फ़रत से नहीं दूर ज़ाहिदों,  
डूबें गुनाह वादाक़शों के शराब में।

—महाकवि “दाग” देहलवी

मुझ तक कब उनकी बज़्म में आया था दौरे जाम  
साकी ने कुछ मिला न दिया हो शराब में।

—“ग़ालिब” देहलवी

फूलों का रङ्ग और कुछ अङ्कुर का अरक  
कोई हराम चीज़ नहीं है शराब में।  
साकी जो मेहबाँ है, तो पीने का ज़िक्र क्या,  
निकलूँगा मैक़दे से नहा कर शराब में।

—“नूह” नारवी

कहते हैं रिन्द हज़रते वापज़ से बार-बार,  
तोबा को गोता दीजिए जामे-शराब में।

—“बिस्मिल” इलाहाबादी

### ख़वाब

ता फिर न इन्तज़ार में नींद आए उम्र भर,  
आने का अहद कर गए आप जो ख़वाब में !  
—“ग़ालिब” देहलवी  
हरदम छुपाए रहते हैं रुख को नकाब में,  
बेपर्दा अब नज़र नहीं आते वह ख़वाब में !  
—“ज़या” देवान्दपुरी

### ताब

“ग़ालिब” छुटी शराब पर अब भी कभी-कभी,  
पीता हूँ रोज़ अबो शबे-माहताब में !  
—“ग़ालिब” देहलवी  
“हिन्दी” ने आज देख लिया किसको ख़वाब में  
सीने में इज़तिराब है दिल पेचो-ताब में !  
—“हिन्दी” साहब

उस जुल्फ़े ख़मब-ख़म की है उल्फ़त का यह असर,  
दिल है मुसीबतों में, ज़िगर पेचोताब में।  
ख़ुरशीद का जवाब है दागे ज़िगर “ज़या”,  
यह भी तो उससे कम नहीं कुछ आबोताब में !  
—“ज़या” देवान्दपुरी

“बिस्मिल” जो मेरे दिलको है उस महजर्बी का शौक,  
लिखता हूँ मैं गुज़ल भी शबे-माहताब में !  
—“बिस्मिल” इलाहाबादी  
( शेष मैटर ३१वें पेज में देखिए )

३४—प्रेम की मदिरा, ३५—ईश्वर की कृपा, ३६—  
परहेज़गारी, ३७—शराबी, ३८—सभा, ३९—शराब-  
खाना, ४०—शराबी, ४१—नसीहत करने वाला, ४२—  
चेहरा, ४३—बदली, ४४—चाँदनी रात, ४५—धूँवर  
वाले बाल, ४६—सूरज, ४७—चमक, ४८—चाँद-सी  
सूरत,



# कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकों की संक्षिप्त सूची

| स्त्रियोपयोगी                           | गृहिणी-गौरव (अं० मा०)                        | भारत की विदुषी नारियाँ (गं० पु० मा०)           | कर्मयोग (गं० पु० मा०)                                       | बच्चों का चरित्र-गठन (उ० ब० अ०)                        |
|-----------------------------------------|----------------------------------------------|------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------|
| आदश महिला (इं० प्रे०) २)                | गौरीशङ्कर (चाँ० का०) १॥, २)                  | महासती मदालसा (ब० प्रे०) १॥, २), २॥            | कारनेगी और उसके विचार (गं० पु० मा०) १॥                      | बच्चों के सुधारने के उपाय (हिं० अं० र०) १॥             |
| अपराधी (चाँ० का०) २॥                    | घरेलू चिकित्सा (") १॥                        | माता के उपदेश (सर० मं०) १-                     | क्या करें? (स० सा० मं०) १॥                                  | बालचर-जीवन (ब० प्रे०) १)                               |
| अश्रुपात (गं० पु० मा०) १॥               | चित्तौड़ की चिता (चाँ० का०) १॥               | माता-पुत्र (न० स० ऐ० सं०) १॥                   | गुलिस्ताँ (इं० प्रे०) २)                                    | बाल-विनोद (५ भाग) (इं० प्रे०) १॥                       |
| अरक्षणयोगी (इं० प्रे०) १)               | चौक पूरने की पुस्तक (चि० प्रे०) १)           | मुस्लिम-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २॥, २॥, २॥       | गोबर-गणेश संहिता (हिं० अं० र०) १-                           | ब्रह्मचर्य (ज० शं० वैद्य) १), १-                       |
| अनाथ पत्नी (चाँ० का०) २)                | जनन-विज्ञान (पा० ऐ० कं०) ३), ३॥              | शैव्या-हरिश्चन्द्र (ब० प्रे०) २॥, २॥, ३)       | चरित्र-गठन (इं० प्रे०) १)                                   | ब्रह्मचर्य-विज्ञान (स० सा० मं०) १॥                     |
| अनाथ बालक (इं० प्रे०) १)                | जननी-जीवन (चाँ० का०) १॥                      | सती बेहुला (ब० प्रे०) २॥, २॥, २॥               | चॉकलेट (बी० स० पु०) १)                                      | ब्रह्मचर्य ही जीवन है (झा० हिं०) १॥                    |
| अबलाओं का इन्साफ़ (चाँ० का०) ३)         | तारा (इं० प्रे०) १)                          | सती सीता (पा० ऐ० को०) १॥                       | जीवन का सद्ब्यय (गं० पु० मा०) १)                            | भारतीय अर्थशास्त्र (गं० पु० मा०) २॥, ३॥                |
| अबलाओं पर अत्याचार (चाँ० का०) २॥        | दम्पति सुहृदय (हिं० मं०) १)                  | सती-सुकन्या (ब० प्रे०) १॥, १॥, १॥              | जीवन के आनन्द (इं० प्रे०) १॥                                | मिखारी से भगवान (गं० पु० मा०) १), १॥                   |
| अमृत और विष (दो भाग) (चाँ० का०) ५)      | दाम्पत्य जीवन (चाँ० का०) २॥                  | संयुक्ता (पाँपुबर) १॥                          | जैसे चाहो वैसे बनो (हिं० सा० मं०) ३॥                        | भिन्न-भिन्न देशों के अनोखे रीति-रिवाज (मि० बं० का०) १॥ |
| अञ्जना देवी (ना० दा० स० ऐ० सं०) १॥      | दिव्य देवियाँ (गृ० मी०) १॥                   | संसार की असभ्य जाति की स्त्रियाँ (प्र० पु०) २॥ | टॉल्स्टॉय के सिद्धान्त (प्र० पु०) १॥                        | भित्त-भित्त देशों के अनोखे रीति-रिवाज (मि० बं० का०) १॥ |
| आदर्श महिलाएँ (दो भाग) (गं० द० पा०) १॥  | दुलहिन (हिं० पु० मं०) १)                     | सीतादेवी (पाँपुबर) १॥                          | तपस्वी अरविन्द के पत्र (हिं० मं०) १-                        | मानव-जीवन (हिं० अं० र०) १॥                             |
| आदर्श रमणी (नि० चं०) १॥                 | देवी जोन (प्रका० पु०) १-                     | सुभद्रा (ब० प्रे०) २), २॥                      | दाम्पत्य विज्ञान (पाठक कं०) २), २॥                          | मितव्यय (इं० प्रे०) १॥                                 |
| आरोग्य-साधन (हिं० पु० ए०) १-            | देवी पार्वती (गं० पु० मा०) १), १॥            | सुहागरात (अभ्युदय) ४)                          | दिव्य जीवन (सं० सा० प्र० मं०) १-                            | मितव्ययता (हिं० अं० र०) १॥                             |
| आर्य-महिला-रत्न (ब० प्रे०) २॥, २॥       | देवी सती (गं० पु० मा०) १॥                    | स्त्री और पुरुष (स० सा० मं०) १-                | देश-दर्शन (हिं० अं० र०) २), ३)                              | वक्तृत्व-कला (मि० बं० का०) १)                          |
| ईश्वर य न्याय (गं० पु० मा०) १॥          | नवनिधि (हिं० अं० र० का०) १॥                  | स्त्री-सुबोधनी (न० कि० प्रे०) २)               | नवीन पत्र-प्रकाश (मि० बन्धु का०) १॥                         | व्यावहारिक सभ्यता (स० सा० मं०) १॥                      |
| उमासुन्दरी (चाँ० का०) १॥                | नल-दमयन्ती (ब० प्रे०) १॥, १॥, २)             | स्त्री-कर्तव्य-शिक्षा (का० पु० मं०) २॥         | नीति रत्नमाला (गं० पु० मा०) १)                              | विवेक वचनावली (हिं० पु० ए०) १)                         |
| कन्या-दिनचर्या (अं० प्रे०) १)           | " " (पाँपुबर) १॥                             | हरिश्चन्द्र-शैव्या (ब० प्रे०) २॥               | " " (इं० प्रे०) १॥                                          | व्यावहारिक पत्रबोध (हिं० पु० ए०) १॥                    |
| कन्या-पाकशास्त्र (") १)                 | " " (गं० पु० मा०) १॥                         |                                                | पतियों को सीख (मनो-रमा के पत्र) ३॥                          | शेक्सपीयर कथा-गाथा (रा० ना० ला०) १॥                    |
| कन्याओं को पोथी (सा० हिं० मं०) १)       | नन्दन-निकुञ्ज (गं० पु० मा०) १), १॥           |                                                | पौराणिक उपाख्यान-माला (रा० ना० ला०) १॥                      | श्रीकृष्ण-चरित्र (रया० ला० ब०) १-                      |
| कन्या शिक्षावली (चार भाग) (हिं० मं०) १॥ | नारी-उपदेश (गं० पु० मा०) १॥                  |                                                | प्राचीन परिणत और कवि (गं० पु० मा०) १॥, १॥                   | श्रीकृष्ण-चरित्र (पु० मं०) २॥                          |
| कमला के पत्र (चाँ० का०) ३)              | नारी-विज्ञान (पा० ऐ० को०) २), २॥             |                                                | प्रातःकाल और सायं काल के विचार (हिं० सा० मं०) १-            | सदाचार-दर्पण (मि० बं० का०) १॥                          |
| " (अङ्ग्रेजी) (") ३)                    | निर्मला (चाँ० का०) २॥                        |                                                | प्रेत-लोक (रा० रया०) १)                                     | सदाचार-सोपान (सर० मं०) १-                              |
| कुल-लक्ष्मी (हिं० मं०) १॥               | पतिव्रता (इं० प्रे०) १)                      |                                                | प्रेम (हिं० मं०) १-                                         | समाज (हिं० अं० र०) १॥                                  |
| कुल-ललना (गृ० ब०) १॥                    | पतिव्रता गान्धारी (इं० प्रे०) १॥             |                                                | फ़िज़ी द्वीप में मेरे २१ वर्ष (प्र० पु० मा०) १॥             | " (इं० प्रे०) १)                                       |
| कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥, २)               | पार्वती और यशोदा (इं० प्रे०) १॥              |                                                | फ़िज़ी में भारतीय प्रतिज्ञा-बद्ध कुली-प्रथा (प्रका० पु०) १) | संक्षिप्त शरीर-विज्ञान (गं० पु० मा०) १॥                |
| ग्रह का फेर (चाँ० का०) १॥               | प्राचीन हिन्दू माताएँ (ना० दा० ऐ० सं०) १)    |                                                |                                                             |                                                        |
| गायत्री-सावित्री (बेब० प्रे०) १)        | भारत की देवियाँ (ब० प्रे०) १-                |                                                |                                                             |                                                        |
| गार्हस्थ्य-शास्त्र (ब० भा० अं०) १)      | भारत के स्त्री-रत्न (दो भाग) (स० सा० मं०) १- |                                                |                                                             |                                                        |
| गीता-भाषा (मे० ब० दा०) १॥               |                                              |                                                |                                                             |                                                        |
| गुदगुदी (चाँ० का०) १॥                   |                                              |                                                |                                                             |                                                        |
| गुप्त सन्देश (गं० पु० मा०) १॥           |                                              |                                                |                                                             |                                                        |
| गृहधर्म (ना० दा० स० ऐ० सं०) १॥          |                                              |                                                |                                                             |                                                        |



# भारतीय किसानों का विप्लव

[ श्री० एच० एन० ब्रेल्सफर्ड ]

[ 'भविष्य' के पाठक जानते हैं कि मि० एच० एन० ब्रेल्सफर्ड ब्रिटिश पार्लियामेंट तथा लेबर-पार्टी के एक योग्य सदस्य हैं। आप सत्याग्रह संग्राम के अवसर पर इस देश का भ्रमण करने आए थे। विलायत लौट कर इस देश के सम्बन्ध में, वहाँ के समाचार-पत्रों में आपने अनेकों लेख लिखे हैं। आपके लेखों को वहाँ के लोग बड़े ध्यान से पढ़ते हैं। उनमें यहाँ के किसानों की भयङ्कर गरीबी का हाल पढ़ कर लोग प्रश्न करने लगते हैं कि "अगर वहाँ के किसानों की हालत इतनी अधिक खराब है तो आश्चर्य है कि वे विप्लव क्यों नहीं कर देते?" इस लेख में मि० ब्रेल्सफर्ड ने उन कारणों को बतलाया जिनसे कि अब तक किसानों ने विप्लव नहीं किया। परन्तु आपका अनुमान है कि निकट भविष्य में ही भारतीय किसानों का एक देश-व्यापी विप्लव होगा।

—सं० "भविष्य" ]

**भा**रत के सम्बन्ध में प्रकाशित मेरी लेख-माला के प्रथम दो लेखों को पढ़ चुकने के बाद अधीर पाठक मुझसे एक प्रश्न पूछने के लिए उतावले हो रहे होंगे कि "अगर भारत की दशा ऐसी बुरी है, जैसी कि इन लेखों में वर्णन की गई है, तो वहाँ के किसान और मजदूर विप्लव क्यों नहीं कर देते?" मेरा उत्तर है कि इस प्रश्न के पीछे पश्चिमीय मनोवृत्ति छिपी हुई है। पाठकों के उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर देने से पहले मुझे यहाँ भारत के सम्बन्ध की कुछ मुख्य-मुख्य बातों का उल्लेख कर देना आवश्यक मालूम होता है।

भारतीय जीवन में केवल दुःख ही दुःख नहीं है, चाहे वह गरीब से गरीब ग्राम्य जीवन ही क्यों न हो। परम्परा से होते चले आने वाले पर्व और उत्सव बराबर ही होते रहते हैं, चाहे करों और ऋणों का कितना ही बड़ा बोझ उन पर क्यों न लदा हो। नृत्य और गान-वाद्य किसी न किसी सम्बन्ध में नित्य ही हुआ करते हैं। मन्दिरों की दैनिक पूजा-प्रार्थना तो सदैव सुखकारी ही होती है। हिन्दू-धर्म में दुःखदाई रस्मों का कोई स्थान ही नहीं है। मुझे मालूम होता है कि भारतीयों की आश्चर्य-जनक धीरता तथा शान्ति-प्रियता का कारण उनका आधे पेट भूखा रहना भी है। मैंने एक अङ्गरेज अफसर के मुँह से सुना है कि भारतीय रङ्गरूटों को जो पहिली बात सिखलानी पड़ती है, वह है भरपेट भोजन करना। साधारण भारतीय मजदूर में इतनी शक्ति नहीं रहती कि वह अपने ऊपर होने वाले किसी अन्याय का बदला घूँसों से ले सके। यूरोपियन मजदूरों की तुलना में, पञ्जाबी किसानों को छोड़ कर, शेष किसानों की ताकत आधी होती है।

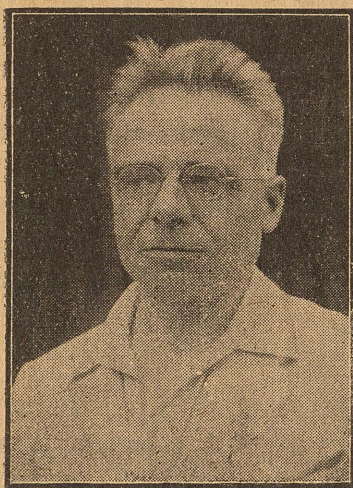
## जाति-पाँति तथा धर्म

भारतवासियों के विषय में दूसरी बात जो है, उसका सम्बन्ध जाति-पाँति तथा धर्म से है।

भारत में परम्परागत प्रथाओं तथा सामाजिक रीतियों का बन्धन बड़ा ज़बरदस्त है। जीवनचर्या की साधारण से साधारण बात में जाति और धर्म का प्रतिबन्ध दिखाई पड़ता है। जीवन, पुराने आदेशों और निषेधों के जाल में शैशवावस्था से ही कुछ ऐसा जकड़ दिया जाता है कि बड़ा होने पर भारतीय स्वभाव में केवल आज्ञा-कारिता ही रह जाती है। रूढ़ियों के विरुद्ध बगावत करने का साहस बिरले ही भारतीय कर सकते हैं। प्रत्येक वर्ण अपना निराला आदर्श और ढङ्ग रखता है। कोई कभी अपने वर्ण की खचित रेखा से बाहर जाने का प्रयत्न नहीं करता। साहस और उत्साह केवल लड़ने वाली तथा शासन करने वाली जातियों में पाया जाता है। दूसरी जातियाँ न तो इस बात की कोई इच्छा

ही रखती हैं, न उनके प्रति, जिनके पास ये गुण हैं, किसी प्रकार की ईर्ष्या ही रखती हैं। किसी भारतीय को किसी के सामने अपनी कमजोरी या कायरता स्वीकार करने में कोई लज्जा नहीं मालूम होती। एक बार एक बड़े ही योग्य हिन्दू सज्जन ने मुझसे कहा— "मेरे पिता कायर थे, मैं अर्ध-कायर हूँ, मेरी सन्तान बहादुर होगी।" उनका मतलब यह था कि कायर बनाने वाली रूढ़ियों के बन्धन धीरे-धीरे टूटते जा रहे हैं। इन रूढ़ियों ने शताब्दियों से लोगों को तरह-तरह के अत्याचार सहने के लिए बाध्य किया है।

भारतीय जीवन में धर्म का भी अपना एक निराला ही स्थान है। सम्पूर्ण दृश्य संसार की माया है। उसे बदलने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। सम्पूर्ण जीव-जगत जीवन के विराट चक्र में बराबर घूम रहा है। अछूत सोचता है,



श्री० एच० एन० ब्रेल्सफर्ड

किसी पूर्व जन्म के पाप से आज मैं अछूत हो गया हूँ, अपना अछूत धर्म यदि नियमपूर्वक जीवन में पालन कर लूँगा तो अगले जन्म में सम्भव है, इससे कोई उच्च श्रेणी प्राप्त हो जाय।

## भारतीय कब विप्लव करते हैं ?

उपर्युक्त प्रकार की वर्णव्यवस्था तथा जीवन के सम्बन्ध में प्रचलित ऐसे दृष्टिकोण से दो प्रकार के परिणामों की उत्पत्ति हुई है। एक तो व्यक्ति, अपने शारीरिक और मानसिक जगत में, हृदय दर्जे का विनय-शील बन गया है। भारतीयों की इस विनयशीलता को देख कर यूरोपियन दर्शक आश्चर्य-चकित हो जाता है। लेकिन व्यक्ति की इस विनयशीलता का परिणाम यह होता है कि जब कभी किसी जाति, समाज, गाँव या राष्ट्र में किसी की तरफ से कोई

आन्दोलन उठ खड़ा होता है, तब उस समाज, जाति या राष्ट्र के व्यक्ति एक होकर ऐसा सङ्गठित दृश्य उपस्थित कर देते हैं, जिसे देख कर एक यूरोप-निवासी दङ्ग रह जाता है। वह ऐसा ही सुदृढ़ सङ्गठन अपने देश में देखने की अभिलाषा करने लग जाता है। वही व्यक्ति, जो किसी अपमान, अत्याचार को कभी चुपचाप, बिना क्रोध तक प्रकट किए, सहन कर लेता है, सामूहिक विप्लव के समय एक अत्यन्त अमृत शक्ति का प्रदर्शन करता है।

गाँधी-आन्दोलन के प्रति जन-समुदाय की महानुभूति होने के मूल में भारतीयों की यही मनोवृत्ति छिपी हुई है। कुछ योग्य व्यक्तियों ने पहले उनकी नीति पर सन्देह प्रकट किया था, परन्तु धीरे-धीरे उनमें से कुछ तो मौन हो रहे और अवशिष्टों ने अन्त में उन्हीं के पथ का अनुसरण कर लिया। इस आन्दोलन में हज़ारों की संख्या में बड़े-बड़े व्यापारियों तथा दूकानदारों ने अपने को नष्ट कर दिया है। फिर भी जो कुछ उन्होंने किया, वह सब प्रसन्नतापूर्वक किया है। जो कोई इस आन्दोलन से बचने का प्रयत्न करता था, उसे उसीके घर वाले, स्त्री और बच्चे तक, लजित करते थे। गाँवों में तो कहीं-कहीं ऐसे व्यक्ति लोकमत द्वारा दण्डित भी हुए थे।

वर्ण-व्यवस्था के बन्धन नगरों में बराबर ढीले पड़ते जा रहे हैं। रेल, ऑफिस और कल-कारखानों के समीप ऐसी व्यवस्थाएँ अधिक समय तक कैसे पनप सकती हैं? परन्तु लोकमत से डरने की मनोवृत्ति भारतीयों में वर्ण-व्यवस्था के टूट जाने के बहुत समय बाद तक भी शायद बनी रहेगी। बम्बई और कलकत्ता के मिलों में काम करने वाले मजदूर सैकड़ों वर्णों के और अनेक भाषाओं के बोलने वाले होते हैं। अतः इन्हें किसी एक ट्रेड यूनियन का स्थायी सदस्य बनाने का काम बड़ा कठिन होता है। फिर भी, इनकी शक्ति का पता कभी किसी हड़ताल के होने पर लगता है। बिना किसी प्रकार के स्थायी कौष और बिना किसी प्रकार की आजीविक-प्रबन्ध के जिस स्थिरता और धैर्य के साथ ये मजदूर हड़ताल करते हैं, उसका नमूना यूरोपीय देशों की सुसङ्गठित ट्रेड यूनियनों तक में सदैव देखने को नहीं मिलता। भारतीय समाज में व्यक्तिवाद को प्रश्रय नहीं दिया गया है। उस समाज में आज्ञाकारिता और निष्क्रियता के ही गुण उत्पन्न किए जाते हैं। परन्तु किसी कार्य के लिए एक बार सञ्चालित हो जाने पर सारा समाज एक हो जाता है। उस समय विरोधी बहुत ही कम दिखाई पड़ते हैं।



### शक्ति का ज्ञान

गांधी-आन्दोलन के द्वारा ग्रामों में अपनी शक्ति का ज्ञान पैदा हो गया है। वे अब अपने को अकेला नहीं समझते। अगर कहीं बङ्गाल ने सुना कि गुजरात ने करबन्दी का आन्दोलन आरम्भ कर दिया है, तो वह सोचने लगता है कि हम भी बङ्गाल में करबन्दी का आन्दोलन क्यों न चला दें? परिवर्तन तथा जागृति की भावना बहुत दूर-दूर तक फैल गई है। संयुक्त प्रान्त के किशनपुर गाँव में भ्रमण करते समय मैंने शरीब से शरीब किसानों के मुख-मण्डल पर उस जाग्रत भावना के चिह्न देखे थे। मैंने उनसे कोई राजनीति सम्बन्धी प्रश्न नहीं पूछा, क्योंकि ऐसे प्रश्नों के उत्तर की आशा उनसे नहीं की जा सकती थी। परन्तु संयोगवश उनमें से एक ने किसी बात के सम्बन्ध में स्वयं 'स्वराज्य' शब्द का प्रयोग किया। मैंने देखा कि इस शब्द के प्रयोग करते ही उपस्थित ग्रामीणों के चेहरों पर ज्योति की एक सुन्दर रेखा दौड़ गई। एक साथ ही मानो वे किसी आशा से आशान्वित हो उठे। मैंने उनसे पूछा कि स्वराज्य हो जाने पर उनकी दशा में क्या सुधार हो जायगा? उत्तर में उनमें से बहुत से एक साथ ही बोल उठे। धीमे कण्ठों से एक संयुक्त, परन्तु दृढ़ स्वर में उत्तर मिला—“स्वराज्य में हमारा भू-कर नाम मात्र का रह जायगा।” उन्होंने कहा—“आप विश्वास रखिए, हम लोग जानते हैं कि स्वराज्य का क्या मतलब है।” उनमें से अनेकों ने गांधी को एक बार पास के ज़िले से होकर कहीं जाते समय देखा था।

अब तक इन कृषकों ने कर न देने की बात नहीं सोची थी। वे देने में असमर्थ थे, बस इतना ही उन्हें मालूम था। अपनी इस असमर्थता को ज़मींदार के सामने प्रकट कर देने के लिए वे तैयार थे। ज़मींदार भी सम्भवतः कर स्थगित कर देने के सिवाय और कर ही क्या सकता था? किसान तो यह जानते हैं कि हमसे कोई ले ही क्या सकता है, जो था वह गिरवी रक्खा है। अगर कोई चाहे तो हमारा ऋण ले सकता है। इन किसानों का, ज़मींदार के प्रति जो भाव था, उसमें आलोचना तथा भय दोनों का विचित्र सम्मिश्रण था। ज़मींदार महाशय प्रान्तीय व्यवस्थापक सभा के सदस्य हैं। चुनाव के समय इन्होंने अपने आपको गांधी का अनुयायी घोषित किया था, यद्यपि कॉङ्ग्रेस स्वयं कौन्सिल-बहिष्कार की घोषणा कर चुकी थी। ये ज़मींदार महाशय खदर पहनते थे और उनकी मोटरकार में राष्ट्रीय झण्डा भी उड़ता रहता था। किसानों ने कहा कि गाँव को धोखा देकर इन्होंने वोट डलवा लिए। किसानों का मुखिया अपने भारतीय सुलभ सहज और सच्चे भाव से बोल उठा—“अगर ज़मींदार के इस धोखे का पता हम लोगों को चल भी जाता तो क्या होता! हम लोगों को वोट तो देना ही पड़ता। न देते तो ज़मीनीं छिन जातीं।”

मैंने सोचा, ज़मींदार का सामना करने के पहले इन कृषकों को दल बना कर अपना सङ्गठन करना पड़ेगा।

### करबन्दी की चढ़ाई

लेकिन मैंने जो कुछ सोचा था, वह शलत प्रमाणित हुआ। अपनी यात्रा में इलाहाबाद का भ्रमण करते समय मुझे मालूम हुआ कि करबन्दी का आन्दोलन आरम्भ कर दिया गया है, सो भी कॉङ्ग्रेस के नेतृत्व में, जो कि अब तक करबन्दी के विषय में हिचकिचा रही थी। अन्य राष्ट्रीय संस्थाओं की तरह, कॉङ्ग्रेस में भी सभी श्रेणी के लोग मौजूद हैं। उसके मुख्य कार्यकर्ताओं में तो अधिकतर ज़मींदार, महाजन और वकील ही हैं, शेष स्वयंसेवक आदि शरीर श्रेणियों के हैं। इस प्रकार के धनिक लोगों के होते हुए कॉङ्ग्रेस के नेतृत्व में करबन्दी आन्दो-

लन का चलाया जाना आश्चर्यजनक बात थी। गुजरात के किसानों की बात न्यायी थी, क्योंकि अपने खेतों के वे स्वयं मालिक हैं। बङ्गाल आदि प्रान्तों ने पुलिस-टैक्स न देने का ही आन्दोलन चलाया था; इसका कारण यह था कि उत्तर तथा मध्य भारत के प्रान्तों में ज़मींदारी प्रथा का चलन है। इस प्रथा में सरकार और किसान के बीच में ज़मींदार हैं। ज़मींदार किसान से कर वसूल करके कुछ हिस्सा स्वयं रख लेता है और कुछ नियत हिस्सा सरकार को दे देता है। ज़मींदारी प्रथा वाले प्रान्तों में करबन्दी का आन्दोलन चलाने से किसानों और ज़मींदारों को आपस ही में लड़ना पड़ता जिसे कॉङ्ग्रेस नहीं चाहती थी। फिर भी इलाहाबाद के आस-पास के गाँवों ने कॉङ्ग्रेस से करबन्दी आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए कहा। बात यह थी कि किसान कर देने में बिल्कुल असमर्थ थे। कॉङ्ग्रेस ने इस विकट परिस्थिति में यह निश्चय किया कि किसान ज़मींदार का अंश तो दे दें, परन्तु वह अंश जो ज़मींदार सरकार को देता है, न दें। साथ ही ज़मींदार इस बात का प्रतिज्ञा-पत्र लिख दे कि जो अंश वे किसानों से पाएँगे वह अंश वे सरकार को न दे डालेंगे। ज़मींदारों में ऐसे 'बॉण्ड' या प्रतिज्ञा-पत्र लिखने की हिम्मत नहीं थी।

मैं इस करबन्दी आन्दोलन की प्रगति जानने के लिए बराबर इच्छुक रहा हूँ, परन्तु लण्डन के दैनिक पत्रों में तो ऐसी खबरें छपती ही नहीं। मैंने एक अमेरिकन समाचार-पत्र में पढ़ा था कि करबन्दी आन्दोलन के लिए भारत के किसी भाग में कहीं प्रदर्शन का आयोजन हो रहा था, जिसे सरकार ने गोली चला कर तितर-बितर कर दिया। इस गोलीकाण्ड में अनेकों के हताहत होने की बात भी उसमें लिखी थी। दिसम्बर मास में हिन्दुस्तान छोड़ते समय मैं अनुमान कर रहा था कि कुछ ही महीनों में सम्भवतः कृषकों का देशव्यापी आन्दोलन छिड़ जायगा। उस समय हिन्दुस्तान की जो हालत थी, वह रूस की प्रथम क्रान्ति के समय की हालत से बिल्कुल मिलती-जुलती थी। शासन-शक्ति का वैसा ही अधःपतन था, राष्ट्र का वैसा ही एक स्वर था और वैसी ही शरीबी की व्यापकता थी। मैंने भारत में कुछ ज़मींदारों से भी बातचीत की थी। उनमें से कुछ अन्यमनस्क थे। उन्हें किसी हानि का डर नहीं था। उनकी ज़मींदारियाँ गिरवी थीं और उपज ऐसी थी कि मज़दूरों की मज़दूरी तक के लिए भी पूरा न पड़ता था।

### क्रान्ति की सूचना

मैं नहीं जानता भविष्य में क्या होगा। भविष्य गांधी के निर्णय पर अवलम्बित है। सरकार उनको बिल्कुल ही समझने में असमर्थ है। उसे बिना बातचीत के और बिना किसी शर्त के सम्पूर्ण राजबन्दियों को छोड़ देना चाहिए था। उसे पुलिस की करतूतों की जाँच भी कराना चाहिए था। अनुचित शान की रक्षा करने में वह अपने विनाश की तैयारी कर रही है।

मेरे इस लेख के लिखते समय गांधी जी हिन्दुस्तान में सन्धि की बातों पर विचार कर रहे होंगे। यदि उन्होंने सन्धि के पक्ष में निर्णय किया तो एक बार फिर से चारों ओर शान्ति फैल जायगी और उस हालत में किसानों को अपने ज़मींदारों और महाजनों के विरुद्ध लड़ने के लिए एक दूसरे नेता की आवश्यकता पड़ेगी। परन्तु यदि गांधी ने लड़ाई जारी रखने का सिगनल दिया तो किसानों में राष्ट्रीय नहीं, तो कम से कम सामाजिक क्रान्ति पैदा हो जायगी। धनी सहायकों की सहायता हट जाने पर साधारण जनता अपने ध्येय को अधिक स्पष्ट देख सकने में समर्थ होगी।

## रजत-रज

[संग्रहकर्ता—श्री लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल]

काँटा काँटे से निकलता है।

✽

गगनचुम्बी शैल-शिखर, बर्फ का मोटा बिहाफ़ ओढ़े ठिठुर कर सोता है।

✽

वृक्ष के शुष्क हो जाने पर उसके पल्लव जीवित नहीं रह सकते।

आत्मा के प्रयाण कर जाने के अनन्तर मांस-पिण्ड सर्वथा निरर्थक है।

✽

उत्थान ही पतन का मूल कारण है।

✽

दुर्जन से विषधर उत्तम है; क्योंकि यह एक ही बार डसता है और वह बार-बार दुख देता है।

✽

क्रोध में मधुर स्मृतियों का लोप हो जाता है।

✽

छली पवन प्रातःकाल वाटिका में प्रेमी बन कर आता है और पुष्पों के मुख चूम-चूम कर स्नेह जताने के बहाने से ओस-कणों को उनकी गोद से छीन ले जाता है।

✽

मनुष्य प्रत्येक दशा में अपने हृदय की सान्त्वना का आधार ढूँढ़ लेता है।

✽

चन्दन ने कुठित होकर मनुष्य से कहा—हे निर्दय नर! तू विस-विस कर मेरे शरीर को क्यों नित्य क्षीण करता जाता है?

मनुष्य बोला—इसमें तुराई ही क्या है? क्या देवता के मस्तक पर चढ़ कर अन्त में तुम्हें सुख नहीं मिलता?

✽

सम्भव असम्भव से पूछता है—“तुम्हारा निवास कहाँ है?”

उत्तर मिलता है—“निर्बल के स्वप्न में”

✽

क्या छोटों का प्रेम बड़ों के प्रेम से बड़ा नहीं हो सकता?

✽

निद्रा सन्तोष की चेरी है और वासना की बैरिन।

✽

लघुजन की प्रभुता तिमिर-मध्य ही है। उषा का आगमन होते ही एक-एक करके तारागण लुप्त हो जाते हैं।

✽

कवि-हृदय की वसन्त-वाटिका में जो भाव-कुसुम खिलते हैं, उन्हीं के द्वारा सरस्वती की पूजा होती है।

✽

कुरूप कालिमाधारी कलानिधि मनोहर है या प्रखर प्रकाश वाला प्रभाकर?

✽

रवि मेघों की पिचकारी लेकर वर्षा से होली खेलता है।

वर्षा की सतरङ्गी सारी इन्द्रधनुष के रूप में फैल जाती है।

✽

✽

✽

✽

✽

✽



## गुजरात का किसान

[ महात्मा गाँधी ]

**‘कि** सी को बदनाम करके उसे दबोच देना’ एक लोकोक्ति है। ‘गुजरात का किसान धृष्ट है, उसने समझौते की शर्तों का पालन नहीं किया’ ऐसा कह कर उसकी बदनामी उड़ा देना आसान है। कुछ दिन हुए एक प्रेस-प्रतिनिधि से मैंने कहा था, कि यह दुर्भाग्य की बात है, कि मि० बेन ने गुजरात के किसानों पर समझौता न पूरा करने का गलत लाञ्छन लगाया है। मि० बेन का कहना था कि गुजरात के किसान अपना लगान नहीं अदा कर रहे हैं। इस दोषारोपण को सुन कर पहले मैं आश्चर्य में पड़ गया था, क्योंकि मेरा यह विश्वास था, कि गुजरात का किसान चाहे कितनी ही बुरी हालत में क्यों न हो, समझौते की शर्तों को अपनी शक्ति भर पूरा करेगा।

दिल्ली में मुझसे शिकायत की गई थी, कि बारडोली तथा वलोड से २८ फरवरी के पहले तक बहुत काफ़ी रकम वसूल हुई, परन्तु उसके बाद से १५ मार्च तक के बीच में केवल ३,२१२ रु० वसूल हुए। शिकायत करने वालों का अभिप्राय यह था, कि समझौते के वक्त से बहुत कम वसूली हुई है।

समझौते की घोषणा ७ मार्च को हुई थी। मैं सरदार वल्लभभाई के साथ १४ मार्च को बारडोली पहुँचा था। यह तो स्पष्ट ही है कि जब तक हम लोग बारडोली न पहुँच जाते, किसानों को सम्पूर्ण परिस्थिति ब समझा देते और वे अपने-अपने घरों को वापस न आ जाते, तब तक उनसे किसी बात की आशा नहीं की जा सकती थी। जो हो, किसानों ने जो कुछ दिया है, उसका व्योरा नीचे दिया जाता है :—

| तारीख                    | बारडोली | वलोड    |
|--------------------------|---------|---------|
| १५-३-३१ से पहले की वसूली | २,५००)  | २०,०००) |
| १६ मार्च                 | ...     | ...     |
| १७ "                     | २००)    | ...     |
| १८ "                     | ४००)    | ...     |
| १९ "                     | २००)    | १३६)    |
| २० "                     | ...     | २२८)    |
| २३ "                     | ५००)    | ३७६)    |
| २४ "                     | १,७००)  | १,११४)  |
| २५ "                     | ८००)    | ३६४)    |
| २६ "                     | १,०००)  | ...     |
| २७ "                     | १,०००)  | ११७)    |
| ३० "                     | २,०००)  | २,२२६)  |
| ३१ "                     | १,५००)  | १,६४६)  |
| १ अप्रैल                 | ४,०००)  | १,३६१)  |
| २ "                      | २,०००)  | १,२०८)  |
| ७ "                      | १०,०००) | १,८२६)  |
| ८ "                      | ६००)    | २,२४६)  |
| ९ "                      | २,२००)  | २,४२६)  |
| १० "                     | ५,५००)  | १,३७६)  |
| ११ "                     | ६,८००)  | १,७००=) |
| १३ "                     | २०,०००) | ६,६३२=) |
| १४ "                     | ६,५००)  | १,४५५=) |
| १५ "                     | १०,०२८) | १,०११=) |

|      |     |           |     |          |
|------|-----|-----------|-----|----------|
| १६ " | ... | ११,४४६)   | ... | २,७६१=)  |
| १७ " | ... | ७,६२२)    | ... | ३,७३६)   |
| १८ " | ... | ६,६८१)    | ... | ५,५४५=)  |
| २० " | ... | ११,५१८)   | ... | ६,३४६=)  |
| २१ " | ... | ७,३६५)    | ... | १,८५६=)  |
| २२ " | ... | ६,१६२)    | ... | ३,४२१=)  |
| २३ " | ... | ४,४५६)    | ... | १,०६०)   |
| २४ " | ... | ६,०००)    | ... | ४,००६=)  |
| २५ " | ... | ७,१२६)    | ... | १,१६२=)  |
| २६ " | ... | ...       | ... | ५,५००)   |
|      |     | १,५४,४०७) | ... | ८३,५२८=) |

मैं दावे के साथ कहता हूँ कि बारडोली के किसानों ने अपनी तरफ से कुछ उठा नहीं रखा। इतना भी उन्होंने उस हालत में किया है, जब कि उनकी ज़बन की हुई ज़मीनों लौटाई नहीं गई थीं, कुछ बेंच भी दी गई थीं, पुराने पटेल और तलाती, जिन्होंने इस्तीफ़ा दे दिया था, नियुक्त नहीं हुए थे, सब राजबन्दी नहीं छोड़े गए थे और कुछ के विरुद्ध मामला चल ही रहा था।

परन्तु यहाँ से हम विषय पर पटाचेप कर देना आवश्यक है। मैं कह सकता हूँ कि स्थानीय अधिकारियों के साथ मैत्री-भाव कायम करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। नतीजा यह हो रहा है कि जो बातें आज से बहुत पहले ही गवर्नमेण्ट की तरफ से पूरी हो जानी चाहिए थीं, वे अब भी अपूर्ण बनी हुई हैं और यद्यपि लगान अदा करने के विषय में लोगों में कोई अनिच्छा नहीं है, फिर भी किसानों के सिर पर दमन और धमकी की नज़्मों तलवार लटकती रक्खी गई है। यह कार्रवाई खेड़ा से प्रारम्भ की गई है। मालूम होता है, अधिकारीगण इस बात को हृदय से नहीं अनुभव करते कि देश और गवर्नमेण्ट के बीच कम से कम अस्थायी सुलह हो गई है और कोशिशें की जा रही हैं कि वह सुलह स्थायी हो जाय।

स्थायी सुलह के मार्ग में कठिनाइयाँ बहुत हैं। लेकिन मैंने तो लॉर्ड इर्विन को वचन दे दिया है कि जहाँ तक मनुष्य से सम्भव है, मैं अपनी पूर्ण शक्ति से इस बात का प्रयत्न करूँगा कि यह सन्धि टूटने न पाए। इस समझौते को लोगों ने ‘सभ्य पुरुष के समझौते’ के नाम से भी पुकारा है। मैं जानता हूँ कि लॉर्ड इर्विन इस बात के लिए हृदय से उत्सुक थे कि उनके अधीनस्थ कर्मचारीगण समझौते की शर्तों को पूर्ण रूप से पालन करें, क्योंकि वे मुझसे वही बात काङ्ग्रेसवालों द्वारा कराने के लिए कई बार कह चुके थे।

मैंने जनता का जितना विश्वास आकर्षित कर लिया है, उतने के लिए ही यथेष्ट कष्ट का अनुभव कर चुका हूँ। परन्तु अब इस बात का मैं अधिक समय तक छिपा नहीं रख सकता कि लक्षण कुछ अच्छे नहीं दिखलाई पड़ते। सत्याग्रही के पास लोकमत और कष्ट-सहन के अतिरिक्त दूसरा कोई अस्त्र नहीं है। कोई मेरे इस लेख का अर्थ, जितना साधारणतया शब्दों से बोध होता है,

\* शर्तों के बाद जा अङ्क दि० ग० हैं, उन्हें पाठक अङ्ग्रेजी पाई समझें।

उससे अधिक न लंगावें। मुझे आशा है और मैं इसके लिए ईश्वर से प्रार्थना करूँगा कि आगने सप्ताह में मैं आप लोगों को बतला सकूँ कि आकाश से खतरनाक बादल हट गए हैं।

**गाँवों के प्रति हमारा कर्तव्य**

पिछले साल के युद्ध से राष्ट्र के स्वाधीनता-संग्राम के लिए विदेशी वस्त्र-बहिष्कार की उपयोगिता भली-भाँति प्रमाणित हो गई है। विदेशी वस्त्र के आयात में कमी देखने से बहिष्कार-प्रोग्राम की सफलता का पता लगता है। हमें अपनी इस सफलता से सन्तुष्ट होने का अधिकार है, परन्तु सफलता के सन्तोष में हमें बहिष्कार-प्रोग्राम के मुख्य उद्देश्य को न भुला देना चाहिए। हमको याद रखना चाहिए कि हमारा राष्ट्र लाखों ग्रामीण घरों में निवास करता है।

बहिष्कार-प्रोग्राम का सञ्चाजन इस रीति से होना चाहिए कि उसका अत्यधिक लाभ ग्रामीणों को मिले। ऐसा न होने से बहिष्कार-प्रोग्राम का मूल उद्देश्य नष्ट हो जायगा। ग्रामीणों को बहिष्कार से अत्यधिक लाभ पहुँचाने का यही उपाय है कि लॉग खादी को सब वस्त्रों से ऊपर स्थान दें।

इसके लिए हमें अपनी रुचियों को बदल देने की आवश्यकता है। हमें खुरखुरी, मोटी खादी पहनने का स्वभाव डालना चाहिए। भारत में पैदा होने वाली रुई अधिकतर छोटे रेशे वाली और कातने में कम नम्बर का सूत पैदा करने वाली होती है। कातने वाले प्रायः अब तक मोटा ही सूत कातते रहे हैं। उन्होंने अब तक या तो अपनी निजी आवश्यकताओं के लिए काता है या आस-पास रहने वाले पड़ोसियों के लिए काता है। इस-लिए तुरन्त अच्छे नम्बर का सूत कातने लगना उनके लिए अभी कठिन है। यह बात सारे उत्तर भारत के लिए लागू है। पंजाब, यू० पी०, बिहार और बङ्गाल में भी, जहाँ लाखों बेकार या अर्ध-बेकार चर्रें चलते हैं, मोटी ही खादी बुना जाती है। दक्षिण में कुछ हद तक महीन और मध्यम दर्जे का खादा मिल जाती है, परन्तु वहाँ भी अधिकतर खादी कम नम्बर सूत की ही बनी जाती है। अखिल भारतीय चर्रा-सङ्घ, जिसका कार्यक्षेत्र बहुत बढ़ गया है, इन प्रान्तों में खादी उत्पन्न करने की सुविधाओं का दशमांश भी प्रयोग में नहीं ला सका। मोटी खादी उत्पन्न करने का बहुत विस्तृत क्षेत्र है। यदि राष्ट्र मोटी खादी को अपना ले तो बहुत हद तक खादी विदेशी कपड़े के स्थान की पूर्ति करने लग जाय। इससे एक लाभ यह होगा कि कुल आमदनी देश की जन-संख्या में बँट जायगी, केवल कुछ पूँजीपतियों के पास न सिमट जायगी।

बहिष्कार की दृष्टि से जो कुछ खादी का महत्व है वह तो है ही, देश की वर्तमान आर्थिक परिस्थिति की दृष्टि से भी उसका कम महत्व नहीं है। रुई तथा खाद्य पदार्थों की बाज़ार-दर घट जाने से गाँवों की दशा बहुत बुरी हो गई है। पैदावार के मूल्य से जीतने-बोने आदि के व्यय भी पूरे नहीं पड़ते। इसलिए कम रुई बोनने वाले किसान कुछ अधिक आमदनी कर लेने के विचार से अपने घरों में दो-एक चर्रें भी चलाने लगे हैं। इसी प्रकार दूसरी वस्तुओं के पैदा करने वाले किसानों ने भी कुछ सूत कात कर अपनी आय बढ़ाने का उपाय किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि देश के भिन्न-भिन्न भागों में आस-पास के गाँवों से मुण्ड के मुण्ड ग्रामीण सूत लेकर किसी निकटस्थ खादी-केन्द्र में बेचने के लिए एकत्र होते हैं। गत वर्ष के पहले भी सूत की उपज इतनी अधिक थी, कि खादी-केन्द्र उसका प्रबन्ध करने में असमर्थ थे। परन्तु अब पहले से भी कठिन (शेष मेयर ३२वें पृष्ठ पर देखिए)



शीघ्रता कीजिए !

नहीं तो पछताना पड़ेगा !!

मूल्य लागत मात्र  
केवल ४) ६०स्थायी ग्राहकों से  
केवल ३) ६०

## व्यङ्ग-चित्रावली

यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज़ा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता की याद आने लगेगी; और सामाजिक क्रान्ति की भावना प्रबल वेग से हृदय में उमड़ने लगेगी। प्रत्येक सामाजिक कुरीतियों का चित्रों द्वारा नम्र प्रदर्शन किया गया है। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, छुआछूत, परदा-प्रथा, पण्डे-पुरोहितों तथा साधु-महन्तों के भयङ्कर कारनामे, अन्ध-विश्वास, पाखण्ड तथा आचरण सम्बन्धी नाना प्रकार की नाशकारी कुरीतियों का सजीव चित्र देखना हो तो इस चित्रावली को अवश्य मँगाइए। एकरङ्गे, दुरङ्गे, तथा तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। आज तक ऐसी चित्रावली कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

### स्मृति-कुञ्ज

नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकास और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुःख, साधन-उत्सर्ग, एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल ३); स्थायी ग्राहकों से २।)

### मूर्खराज

यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झूठों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)

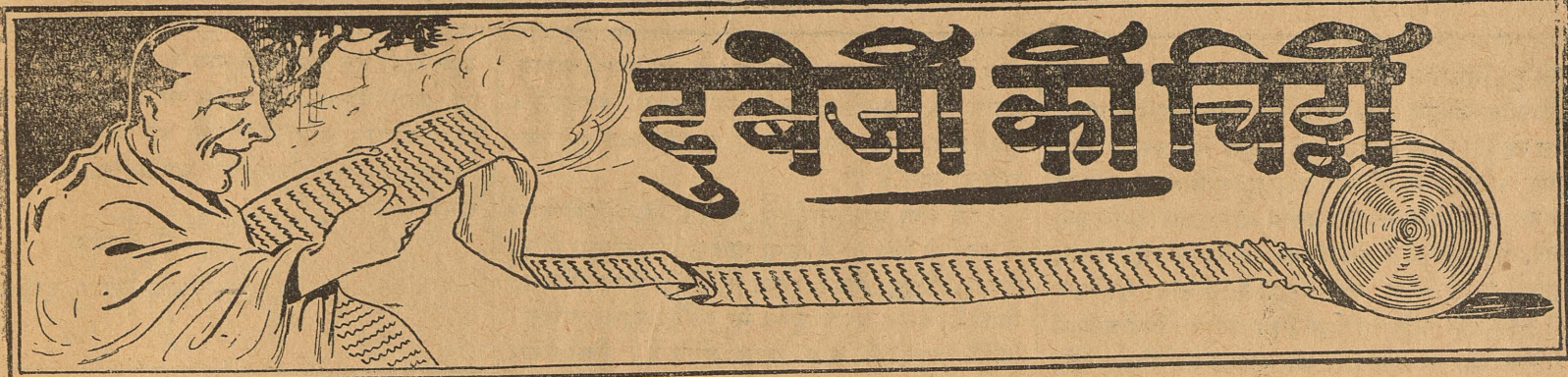
### अपराधी

सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार डॉल्सटॉय के “रिज़रेशन” विकटर ह्यूगो के “लॉ मिज़रेबुल” इबसन के “डॉल्स हाउस” गोस्ट और ब्रियो का “डैमैज़्ड गुड्स” या “मेटरनिटी” के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!

सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये सब ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य केवल लागत मात्र २।), स्थायी ग्राहकों से १।।=)

व्यवस्थापक ‘बाँद’ कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद





अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

स्वर्गीय मौलाना मुहम्मदअली की तो अच्छी कट गई। वह जैसे भी थे गनीमत थे और अब तो यही कहना पड़ेगा कि—“खुदा बख्शे, बहुत सी खूबियाँ थीं मरने वाले में।” मुसलमान लोग अब तक बड़े गर्व के साथ कहते हैं कि—“जनाब, मुहम्मदअली ने राउण्ड-टेबिल कॉन्फ्रेंस में धूम मचा दी और जो कहा, वह करके दिखा दिया।” अर्थात् बिना आज्ञादी लिए ज़िन्दा हिन्दुस्तान नहीं लौटे। हालाँकि हिन्दुस्तान के डॉक्टरों ने, उनका स्वास्थ्य देख कर, उन्हें पहले ही इज़लैण्ड जाने से रोका था। अपने राम तो यह समझते हैं, कि डॉक्टरों ने जो कहा था वही हुआ। खैर उनकी तो अच्छी कटी। अब बड़े मैया आक्रिबल के बोरिए बटोरने के लिए रह गए। फ़ार्सी की एक कहावत है कि—“गर पिदर नतवानद पिसर तमाम कुनद।” अर्थात् जो कार्य पिता नहीं कर पाता उसे पुत्र पूरा करता है। यदि इसी कहावत को यों कहा जाय कि—“गर बिरादरे खुर्द नतवानद, बिरादरे कलाँ तमाम कुनद।” अर्थात् जो छोटा भाई नहीं कर सका, उसे बड़ा भाई पूरा करेगा। इसमें सन्देह नहीं, कि बड़े मैया हैं बड़े मेधावी, तब तो अकेले सैकड़ों “गाँधी” का सामना करने की शक्ति रखते हैं। जिस प्रकार भीम में दस सहस्र हाथियों का बल था, उसी प्रकार बड़े मैया में सैकड़ों “गाँधी” की शक्ति विद्यमान है। कसर इतनी है कि वह शक्ति केवल दो अङ्गुल की ज़वान में ही कैद होकर रह गई—यदि कहीं शरीर भर में फैली होती तो फिर

कसर की क्यारी

(२५वें पृष्ठ का शेषार्थ)

आफ़ताब

वह नाला-दिल में खस\*के बराबर जगह न पाय जिस नाता से शिगाफ\*० पड़े आफ़ताब में —“गालिब” देहलवी

साकी भी है शरीक जो दौरे-शराब में, अब और चार चाँद लगे आफ़ताब में। साकी का अक्से\*१-रुख नहीं जामे-शराब में, वह चाँद है जो डूब गया आफ़ताब में। —“नूह” नारवी

ख़राब

आँख अपनी बन्द होते ही परदे से उठ गए, देखा था हमने खाक जहाने-ख़राब में। महाकवि “दारा” देहलवी अपने को मैं शुमार करूँ किस हिसाब में, है एक जहाँ-ख़राब, जहाने-ख़राब में। अच्छा है देख जाओ कि बस्ले-अख़ीर है, अब क्या धरा है आशिके खाना ख़राब में। —“बिस्मिल” इलाहाबादी

क्या था—उस समय मौलाना जिहाद के झण्डे का बाँस पकड़े धूमते होते। उनकी जीभ में भी जो शक्ति है वह “बापू” नाम का जाप करके उत्पन्न हुई है। शुक्र है, कि अनुष्ठान पूरा न हो पाया, यदि पूरा हो गया होता, तो शायद मौलाना अल्लाह मियाँ के सामने भी ख़म ठोंक कर खड़े हो जाते। फ़िलहाल तो वह योग-अष्ट योगी की भाँति ठोकरें खाते धूम रहे हैं।

मौलाना को मुसलमानों के भविष्य की जितनी चिन्ता है उतनी कदाचित् बिहिश्त में बैठे हुए इस्लाम के जन्मदाता हज़रत मुहम्मद साहब को भी न होगी। बेचारे करें क्या, उनका दिल ही ऐसा है। वह तो बहुत चाहते हैं कि बुढ़ापे में एकान्तवासी होकर “अल्लाह ! अल्लाह !” जपा करें, परन्तु कमबख़्त दिल नहीं मानता। जब वह देखते हैं कि मुसलमानों में कोई अच्छा लीडर नहीं है तो दिल में गुदगुदी पैदा होती है। सोचते हैं—हम में कोई ऐब तो है नहीं, न काने हैं, न अन्धे, न लूले, न लँगड़े। शरीर भी अपने सीमा प्रान्त के बाहर तक अपना क़दम जमाए हुए है। ऐसी दशा में क्यों न लीडरी के लिए जोर लगाया जाय। लीडर होना भी ऐसा चाहिए कि जो मील भर की दूरी से दिखाई पड़ जाय और हज़ारों आदमियों के बीच में भी इस प्रकार चमके जैसे गेहूँ के ढेर में मटर का दाना। गाँधी जी जैसे ‘लीडर’ किस काम के, जो चार आदमियों के बीच में भी न दिखाई पड़ें। यही सब सोच-विचार कर बेचारे उठे। परन्तु अपने राम का यह विश्वास है कि जिस समय मौलाना उठेंगे, उस समय किसी ने अवश्य झुँका होगा। क्योंकि बेचारे अभी लीडर बन भी न पाए और लोगों ने लठियाना आरम्भ कर दिया।

मौलाना का ख्याल है, कि गाँधी जी मुसलमानों का गला काटना चाहते हैं। परन्तु अपने राम की समझ में यह नहीं आता कि गाँधी जी जैसा दुर्बल-शरीर व्यक्ति मौलाना जैसे मोटे-ताज़े मुसलमान का गला कैसे काट सकता है। मौलाना का गला काटने में मौलाना के दर्ज़ी को कितना कष्ट उठाना पड़ता होगा—इसका अनुमान सरलता से लगाया जा सकता है। मौलाना का कथन यह भी है कि “गाँधी जी” मुसलमानों को परस्पर लड़वाना चाहते हैं। सो अपने राम की समझ में इस कार्य को स्वयं मौलाना जिस खूबी से कर सकते हैं और कर रहे हैं उस खूबी से “गाँधी जी” कभी नहीं कर सकते, क्योंकि मौलाना तो इस कला के आचार्य हैं। उनकी लीडरी तो इसी कला पर निर्भर है। जो बात अधिक मुसलमानों ने कही, बस मौलाना ने ठीक-उसके विरुद्ध कहना आरम्भ किया। इस पर इधर मुसलमानों में चख-चख चली और इधर समाचार-पत्रों में मौलाना पर टीका-टिप्पणी होने लगी। बस मौलाना की लीडरी की देग चढ़ गई। लेकिन बहुत बड़ा भारी अफ़सोस यह है, कि सदा एक आँच की कसर रह जाती है—देग निगोड़ी भली-भाँति पकने नहीं पाती। इस मामले में मौलाना का भाग्य मौलाना का साथ ऐन मौके पर जोड़ देता है। जान पड़ता है, जितना हष्ट-पुष्ट उनका शरीर है, उतना उनका भाग्य नहीं है। यदि कहीं ऐसा

होता तो मौलाना हिन्दुस्तान को बग़ल में दाब कर मक्का-मदीना चले जाते।

मौलाना संयुक्त निर्वाचन के बहुत ही खिलाफ़ हैं। वह चाहते हैं कि मुसलमान अपना ठाई चावल का पुलाव अलग ही पकावें, जिससे कि मौलाना को भी खुरचन-वुरचन मिलती रहे। संयुक्त निर्वाचन में मौलाना को पुलाव की झलक भी देखने को न मिलेगी। पुलाव दूसरे लोग चख जायेंगे और खाली देग मौलाना को माँजनी पड़ेगी। इस काम से मौलाना बहुत ही घबराते हैं। इसके अतिरिक्त संयुक्त निर्वाचन में मौलाना को हिन्दुओं से मिल-जुल कर रहना पड़ेगा। यह काम ऐसा असह्य है, कि मौलाना से कभी हो ही नहीं सकता। मौलाना जिस समय स्वर्ग से इस मर्त्यलोक में अवतरित होने के लिए चले थे, उस समय अल्लाह मियाँ को यह वचन देकर चले थे, कि हिन्दुओं से कभी मेल न करेंगे। अतएव वह यदि मेल कर लें, तो अल्लाह मियाँ नाराज़ होकर उन्हें बिहिश्त में घुसने न देंगे। हालाँकि मौलाना को बिहिश्त की कोई अधिक परवाह नहीं; परन्तु जब हूर, ग़िलमाँ, शराबे-तहूरा, चरमै-कौसर और दरख्ते-नूवा का ध्यान आ जाता है, तो छाती पर साँप लोट जाता है। इन चीज़ों के कारण बिहिश्त में जाना आवश्यक है। मर्त्यलोक में वह जितने कष्ट झेल रहे हैं वह केवल इस भरोसे पर कि बिहिश्त में उक्त सब पदार्थ उन्हें अवश्य मिलेंगे। अतएव हिन्दुओं से मेल करके अल्लाह मियाँ को नाराज़ कर देने का साहस मौलाना में नहीं है। सम्पादक जी, कदाचित् आप यह शङ्का करें कि यदि ऐसी बात थी तो मौलाना ने इतने दिनों तक गाँधी जी के पैर क्यों दाबे। इसका कारण केवल यह था कि मौलाना गाँधी जी को मुसलमान बनाने का प्रयत्न कर रहे थे और अपनी समझ में उन्होंने गाँधी जी को मुसलमान बना ही लिया था—केवल बाकायदा कलमा पढ़ाने की देर थी; परन्तु एक दिन ख़्वाब में हज़रत मुहम्मद साहब आए और उन्होंने मौलाना को डाँट कर कहा—“क्यों बे, तू हिन्दू होता जा रहा है?” तब मौलाना की आँखें खुलीं कि मैं चला था गाँधी जी को मुसलमान बनाने, सो उलटा मैं ही हिन्दू बनने लगा। बस उसी दिन से मौलाना ने कसम खा ली कि गाँधी जी से सदा दूर ही रहेंगे और उनके प्रत्येक कार्य का विरोध करेंगे। सम्पादक जी, अपने राम को यह बात एक बहुत ही प्राइवेट आदमी से मालूम हुई है—केवल आपको बता रहा हूँ और किसी से न कह दीजिएगा। यह भी सुनने में आया, कि जिस समय ख़्वाब में मुहम्मद साहब ने मौलाना को डाँटा तो मौलाना फूट-फूट कर रोए और बोले—“या हज़रत, मैं तो गाँधी जी को कुफ़्र से निकाल कर ईमान की रोशनी में लाना चाहता था—मेरा इरादा हिन्दू बनने का हर्गिज़ नहीं था। और मैं अब आप से वादा करता हूँ कि जब तक ज़िन्दा रहूँगा—हमेशा गाँधी जी की मुखालफ़त करता रहूँगा—चाहे बात जो हो या बेज। तब हज़रत ने फ़र्माया कि—“अच्छा जा, अगर तू ऐसा करेगा तो बिहिश्त में तुझे तेरे ही मानिन्द तन्दु-



रुस्त हूर मिलेगी।" सो सम्पादक जी, मौलाना अपने डील-डौल की हूर प्राप्त करने के लिए यह सब पापड़ बेल रहे हैं। वरना जनाब, चाहे संयुक्त निर्वाचन हो चाहे पृथक, मौलाना के ढेंगे से। हाँ, पृथक निर्वाचन होने से इतना लाभ मौलाना को अवश्य हो सकता है कि इक्के वाले, ताँगे वाले, ठेले वाले, भिरती, कुँजड़े, क़साई, घोसी, धुनिप, जुलाहे—इन सबकी क़पा से मौलाना कौन्सिल की कुर्सी तक पहुँच ही जायेंगे। संयुक्त निर्वाचन में कौन्सिल की चपरासगिरी भी शायद ही मिल सके, क्योंकि कौन्सिल के चपरासियों के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वह फुर्तीले और दौड़-दौड़ कर काम करने वाले हों, ऐसे चपरासियों का वहाँ काम नहीं, जो पारा पिए हुए चूहे की भाँति हिल-डुल भी न सकें।

मौलाना में सब से बड़ा गुण एक वह है कि कभी किसी बात पर स्थिर नहीं रहते। इतने भारी शरीर में, इतना हल्का चित्त! यह बड़ी विचित्र बात है। इसका एक बहुत बड़ा कारण यह प्रतीत होता है कि मौलाना बेचारे स्वयम् तो कभी कुछ नहीं कहते। उनकी असली राय क्या है और वह क्या चाहते हैं—यह तो कदाचित् अल्लाह मियाँ ही जानते हों। वह जो कुछ कहते हैं, केवल अपने श्रोताओं को खुश करने के लिए। जिस बात में उनके श्रोता प्रसन्न होते हैं, वह वही कहते हैं। वह जानते हैं कि गँवार और बेपदी मुसलमान जनता हिन्दुओं के विरुद्ध कहने से ही प्रसन्न होती है और यह समझती है कि जो हिन्दुओं का विरोधी है वही उनका सच्चा शुभचिन्तक है। इसीलिए बेचारे मौलाना को उनको खुश करने के लिए हिन्दुओं के विरुद्ध अफ़्रीम उगलनी पड़ती है। इस पर आप कदाचित् यह शङ्का करें कि यदि ऐसी बात है तो बड़े भैया पढ़े-लिखे और समझदार मुसलमानों की जमाअत से क्यों भागते हैं? इसका कारण अपने राम की समझ में यह है कि पढ़े-लिखे लोग यह बात जानते हैं कि मौलाना अफ़्रीम-विभाग के अफ़सर रह चुके हैं इस कारण यह जब उगलेंगे तब अफ़्रीम ही उगलेंगे। अतएव वे इन्हें पतियाते ही नहीं। मौलाना भी समझते हैं कि—“इन मुँहफटों के बीच में हर तरह से मुश्किल है। यदि इनके मन की कहुँगा तो ये लोग मेरी नेकनियती पर विश्वास नहीं करेंगे और जो इनके विरुद्ध कहुँगा तो हथे पर ही

टोक देंगे। इनके सामने ज़बान खोलना अपनी आबरू गँवाना है। इसलिए इनसे दूर रहना ही अच्छा है। कुँजड़े-क़साई भले, जो चुपचाप हमारी बात सुन कर खुश हो जाते हैं।”

बड़े भैया मुसलमानों से कहते हैं कि लुहें हिन्दुओं से लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए और सरकार से भी लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। बेशक, बिल्कुल तैयार हैं, केवल आपके हुकम भर की देर रहना चाहिए। क्योंकि जल्दी में काम ख़राब होता है। जिस प्रकार आप तमाम ज़माने भर से लड़ने को तैयार हैं, उसी प्रकार आपके अनुयायी भी लड़ने को तैयार हैं। अल्लाह मियाँ दो अज़ुल की ज़बान सलामत रखें और उसे तेज़ रखने के लिए चटपट सालन सफ़ाई करते रहें—फिर देखिए कैसी घमासान लड़ाई होती है कि शॉर्ट-हैंड जानने वाले रिपोर्टर भी मुँह बाए खड़े देखते रहें। अपने राम को इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि यदि मौलाना चाहें तो हिन्दुओं को सुबह-शाम कोस-कोस कर नेस्तोनाबूद कर दें, क्योंकि मौलाना और उनके समस्त अनुयायी अल्लाह मियाँ के बहुत ही प्यारे बन्दे हैं और हिन्दू सब काफ़िर और मुरतिद हैं। रही ब्रिटिश सरकार, सो उसे हराना कौन बड़ी बात है। जहाँ मौलाना ने यह एलान किया कि उन्हें स्वराज्य-वराज्य की कोई आवश्यकता नहीं—बस ब्रिटिश सरकार नोकदुम भाग खड़ी होगी। कसर केवल इतनी ही है कि कुछ नासमझ और बेवक़ूफ़ मुसलमान मौलाना का विरोध कर रहे हैं, और मौलाना जैसे योग्य, बुद्धिमान और राजनीति का क्रीमा बना कर खा जाने वाले व्यक्ति का कहना नहीं मानते। सब से बड़ा रोना तो यही है कि मुसलमानों में एका नहीं, सज़्जन नहीं। चौबीस करोड़ हिन्दुओं ने केवल महात्मा जी को अगुआ बना दिया और उनको यह अधिकार दे दिया कि वह स्याह करें या सफ़ेद—सब ठीक है और सात करोड़ मुसलमान मौलाना को अगुआकार नहीं बना रहे हैं। इसी से तो कभी-कभी यह इच्छा होती है कि क़त्लीर बन कर छोटे भैया की क़ब्र पर जा बैठें।

सम्पादक जी, अपने राम को अफ़्रीमचियों के बहुत से क्रिस्ते मालूम हैं, इस कारण अपने राम मौलाना की बातों को अधिक महत्व नहीं देना चाहते। मौलाना

बहुत दिनों तक अफ़्रीम-विभाग के कर्मचारी रहे हैं, अतएव उनके दिमाग में अफ़्रीम का असर कहाँ तक न पहुँचा होगा। और मैं आपको भी यही सलाह दूँगा कि आप भी उनकी बातों को अफ़्रीमचियों की गप्प ही समझें।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

\* \* \*

## गुजरात का किसान

(२१वें पृष्ठ का शेषांश)

परिस्थिति उत्पन्न हो गई है। मूल-धन बहुत नियमित होने के कारण खादी-केन्द्र सबका सब सूत नहीं खरीद पाते, बहुत से कातने वालों को योंही लौट जाना पड़ता है। ऐसी हालत में यदि खादी की माँग बढ़ जाय और तदनुसार खादी की उत्पत्ति भी बढ़ जाय, तो बहुत से सूत कातने वालों को सहायता मिल सकती है। खादी की माँग बढ़ जाने से लोग उसमें मूल-धन लगाने के लिए भी आकर्षित हो सकते हैं। इस प्रकार बहिष्कार की दृष्टि से तथा देश की वर्तमान आर्थिक कठिनाई की दृष्टि से भी खादी को अपना देश का कर्तव्य है।

जो लोग खादी की धोती या साड़ी, भारीपन के कारण पहनने में कठिन अनुभव करते हैं, वे भी अपनी दूसरी आवश्यकताओं के लिए, जैसे तौलिया, कमीज़, कोट, चादर, दरी और ऐसी ही अनेक दूसरी वस्तुओं के लिए खादी का प्रयोग कर सकते हैं। इस उपाय से आज-कल उत्पन्न होने वाले सूत से कहीं अधिक सूत की खपत सम्भव हो जायगी। इन बातों को समझने के लिए केवल कल्पना-शक्ति के उचित अभ्यास की आवश्यकता है। देश के जल-वायु तथा ग्रामीणों के साधनों के अनुरूप पोशाक बना लेने पर बहुत सी वस्तुओं की आवश्यकता दूर हो जायगी। धोती और साड़ी की लम्बाई में कमी की जा सकेगी और सर पर पगड़ी या साफ़ा की जगह टोपी रखी जा सकेगी। अधिक आराम और सफ़ाई की सुविधा भी हो जायगी। वस्त्रों के व्यय में तो कमी हो ही जायगी।

\* \* \*

# ब्राह्मी रसायन

## दिल और दिमाग के लिए अद्भुत शक्तिवर्धक, अति स्वादिष्ट और पवित्र

यह नुस्खा चरक ऋषि-कृत २,००० वर्ष का पुराना है, पर हमने उत्तर भारत के श्रेष्ठ चिकित्सक और धुन्धर लेखक आचार्य श्री० चतुरसेन शास्त्री महोदय के परामर्श से इसे नवीन आधुनिक पद्धति से इसी वर्ष तैयार करके बेचना प्रारम्भ किया है।

यह दवा ही ब्राह्मी के ताज़े रस के द्वारा बनाई गई है। गर्मी के दिनों में इसका नित्य सेवन करने से मस्तिष्क और हृदय में अत्यधिक तरावट, और शक्ति उत्पन्न होती है। काम करने से तबियत नहीं घबराती, गर्मी की कोई तकलीफ़ नहीं होती। गर्मी के दिनों में दिमागी काम करने वाले जज, बैरिस्टर, वकील, सम्पादक और अन्य नाज़ुक मिज़ाज अमीरी तबियत के सज़्जनों के लिए अपूर्व है। स्त्रियों और बच्चों के लिए गर्मी से बचाने के लिए जीवनी-मूल है।

निरन्तर सेवन करने से पुराना सिर-दर्द, हिस्टीरिया, निद्रानाश, बालों की कमज़ोरी, आँखों में अंधेरा आना, नक़्सांर फूटना, दिल को धड़कन, ख़बड़ाना, सिर में चक्कर आना, गुस्सा आना आदि सब शिकायतें दूर होती हैं।

**इस साल तमाम गर्मी सेवन कीजिए—आपको बहुत लाभ होगा।**

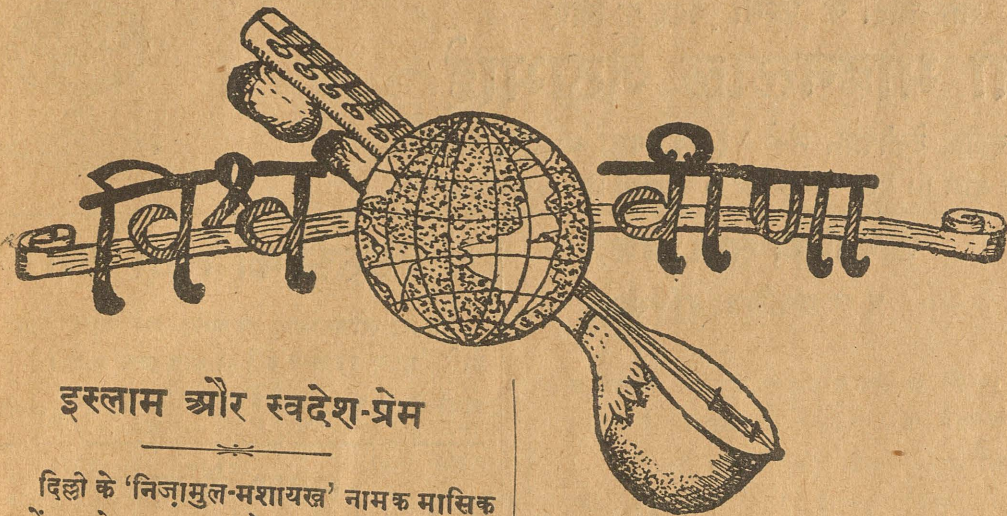
१५ दिन सेवन-योग्य दवा का डब्बा ४), पोस्टेज पृथक्

नोट—कृपया दवा का ऑर्डर सीधा बर्कशॉप के पते पर भेजिए।

**सञ्जीवन-फ़ार्मेस्युटिकल वर्क्स**

{ हेड ऑफ़िस—चाँदनी चौक, दिल्ली  
वर्कशॉप सिकन्दराबाद, बुलन्दशहर (यू० पी०)}





## इस्लाम और स्वदेश-प्रेम

दिल्ली के 'निज़ामुल-मशायख' नामक मासिक पत्र में उसके सम्पादक मौ० वाहिदी साहब ने मुसलमानों के स्वदेश-प्रेम के सम्बन्ध में हाल ही में एक महत्वपूर्ण लेख लिखा है, उसकी कुछ पंक्तियों का अनुवाद यहाँ दिया जाता है। आशा है, इससे मुसलमान ही नहीं, वरन् हिन्दू भी लाभ उठाएँगे।

—स० 'भविष्य' ]

**नि**स्सन्देह इस्लाम किसी देश, प्रान्त या नगर में सीमित नहीं है। जिस तरह आदमी 'हिन्दू' कह देने से हिन्दुस्तान का रहने वाला और 'अङ्गरेज' कह देने से इङ्गलिस्तान का रहने वाला समझा जाता है उसी तरह केवल 'मुसलमान' कह देने से किसी देश विशेष के अधिवासी का बोध नहीं होता। मुसलमान के लिए यह कहना पड़ेगा कि वह भारतीय मुसलमान है, या चीन, या अफ्रीकी, तब उसके वतन का पता लगेगा। इस्लाम सार्वभौमिक राष्ट्रीयता का पता देता है, यानी सारे संसार से प्रेम करना सिखाता है। इस्लाम के पैगम्बर का दूसरा नाम 'रहमतुल-आलमीन' अर्थात् विश्व-हितैषी है।

परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि पैगम्बर साहब संसार के हितैषी थे और अपने देश के अहितैषी। वास्तव में अपने देश पर अनुग्रह की वर्षा करके उन्होंने स्वदेश-प्रेम को धर्म का एक अङ्ग बना दिया। इस्लाम धर्म में जिन चीजों का समावेश है, या जिन वस्तुओं की समष्टि का नाम इस्लाम धर्म है, उनमें एक स्वदेश-प्रेम भी है। शायद ही किसी धर्म में स्वदेश-प्रेम के सम्बन्ध में ऐसे जोरदार और स्पष्ट शब्द कहे गए होंगे और किसी पैगम्बर ने अपने देश की इतनी सेवा न की होगी, जितनी इज़रत मुहम्मद ने की थी। मुहम्मद साहब अगर ईश्वर के प्रेमी न भी होते—इनमें ईश्वर-प्रेम और पैगम्बरी के क़याल को अलग करके भी देखिए, तब भी वे अपने वतन के शान्ति विधायक और स्वदेश-प्रेमी की हैसियत से संसार के इतिहास में अद्वितीय हैं। तीस वर्षों की चेष्टा से आपने जङ्गली, गँवार और शासन-शक्ति से अनभिज्ञ अरब को ऐसा बना दिया कि सारे संसार पर उसका मिक़ा बैठ गया। अरब वाले केवल स्वयं ही सभ्य और शिक्षित नहीं हो गए, बल्कि सारे संसार को सभ्यता और विद्या की शिक्षा देने के लिए निकल पड़े। उन्होंने केवल अपने को ही विद्या से विभूषित नहीं किया, बल्कि सारे संसार को पाठ पढ़ाया। अरब ने केवल अपने को ही स्वतन्त्र नहीं किया, वरन् संसार के एक बड़े भाग पर शासन भी किया। यह सब कुछ इज़रत मुहम्मद के देश-प्रेम का परिणाम था। क्या आदम से लेकर आज तक कोई ऐसा मनुष्य पैदा हुआ है, जिसने अपने देश को इस प्रकार उन्नति के शिखर पर पहुँचाया हो? परन्तु दोहाई है इन्हीं इज़रत मुहम्मद साहब की कि

जिनकी सन्तान आज कम से कम हिन्दुस्तान में तो स्वदेश-प्रेम को पाप समझती है।

मैं नहीं जानता कि जो धर्म (दीन) संसार भर के लिए तो अनुग्रह कहलाए, जो संसार भर से प्रेम करना सिखाए, "हुबुल वतन मन-इल-ईमान" अर्थात् 'स्वदेश-प्रेम-धर्म है' की शिक्षा प्रदान करे, उसके अनुयायी अपने देश की सेवा से क्यों विमुख हैं? क्या अब मुसलमानों में धर्म का कोई अंश बाक़ी नहीं रह गया है? क्या हिन्दुस्तान के मुसलमान संसार भर से वैसा ही प्रेम करते हैं, जैसा उनके पैगम्बर चाहते थे?

पैगम्बर साहब ने अगर दुनिया से ऐसी ही मुहब्बत की होती जैसी कि आज हिन्दुस्तान में मुसलमान कर रहे हैं, तो दुनिया में वह एक आदमी को भी अपने दीन में सम्मिलित नहीं कर सकते थे और हिन्दुस्तान के मुसलमान जैसी आज दुनिया से मुहब्बत कर रहे हैं, वैसी ही मुहब्बत अगर इस्लामी मुहब्बत कहलाएगी तो एक दिन हिन्दुस्तान में एक भी मुसल-

## अधिष्ठात्री और नर्स की आवश्यकता

स्थानीय "मातृ-मन्दिर" के लिए एक सुशिक्षिता एवं उन्नत विचार की महिला की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार, खाने और रहने के अतिरिक्त ५०) रु० से १००) रु० तक।

एक ट्रेण्ड नर्स की भी आवश्यकता है। वेतन, खाने और रहने के अतिरिक्त, २५) रु० से ५०) रु० तक। आवेदन-पत्र अपनी आयु, अनुभव तथा फोटो सहित जो ( बिना डाक-व्यय आए लौटाई नहीं जायगी ) श्री० आर० सहगल, चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए।

मान नहीं रहेगा। कहीं यह भी देखा है कि अपने घर से तो प्रेम न हो और दूसरों के घर से प्रेम हो? अपने मुहल्ले, शहर, प्रान्त और देश से तो प्रेम न हो और दूसरों के मुहल्ले, शहर, प्रान्त और देश से प्रेम हो!

असल बात तो यह है कि अब हमें अपने स्वार्थ के सिवा और किसी से कोई प्रेम नहीं है। हिन्दुस्तान के मुसलमानों में जो जितना ही बड़ा है, वह उतना ही अपने स्वार्थ में निमग्न है। झूठा है वह जो स्वदेश-प्रेमी नहीं है और पैर इस्लामिज़्म का स्वप्न सुनाता है। उसे केवल अपने स्वार्थ से प्रेम है और वह प्रेम भी ऐसा है, जिसे स्वार्थपरता कहते हैं, जिससे वह शायद संसार में तो कुछ सुख भोग ले, परन्तु अन्त में उसका मुँह काला होगा। हमारे बड़े आदमियों को घर, मुहल्ला, शहर और देश क्या, अपने बच्चों से भी प्रेम नहीं होता।

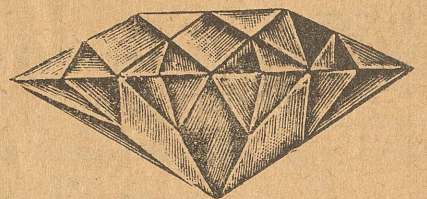
मैं ग़लत कहता हूँ तो आप बतलाइए कि हमारे लीडरों में कितनों की औलाद ऐसी लायक़ निकली है, जैसी लायक़ साधारण लोगों की औलाद है? संसार भर से प्रेम करने वाले मुसलमान-लीडरों में किसका बेटा स्वदेश-भक्त मोतीलाल के बेटे जवाहरलाल की तरह है? खैर, जवाहर जैसा बेटा तो किसी देश-प्रेमी हिन्दू का भी नहीं है। किसी मुसलमान लीडर का बेटा केवल शिक्षित ही दिखा दीजिए। केवल धार्मिक शिक्षा प्राप्त सही। अथवा केवल सांसारिक विद्याओं का पण्डित सही। कोई मौलवी ही बतलाइए, कोई अंग्रेज दिखलाइए, सोचिए, हँसिए।

विश्वास रखिए, एक नहीं मिलेगा। हमारे नेताओं को अपनी स्वार्थपरता से इतनी फुर्लत नहीं कि वे अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की ओर ध्यान दें। उन्हें सारे संसार से प्रेम करने और सार्वभौमिक राष्ट्रीयता की बुनियाद डालने का इतना ध्यान रहता है कि अपने देश से लेकर अपने घर तक से गाफ़िल हो जाते हैं।

थोड़े दिनों से केवल पञ्जाब के मुसलमानों में पञ्जाबियत का भाव पैदा हुआ है। और इनमें जीवन के चिन्ह पाए जाने लगे हैं, उनका कारण यही उनकी प्रान्तिक्ता है। हिन्दुओं में यह भाव बहुत दिनों से था। हिन्दू पहले बङ्गाली होता है, फिर हिन्दुस्तानी। पहले मद्रासी या पञ्जाबी आदि होता है तब हिन्दुस्तानी।

देख लीजिए, जो पहले बङ्गाली थे, वही अन्त में भारतीय प्रमाणित हुए। इसी तरह अगर मुसलमान 'रहमतुल-हिन्द' ( भारत-प्रेमी ) बनेंगे तो 'रहमतुल-आलम' ( विश्व-प्रेमी ) भी साबित होंगे। नहीं तो उनकी 'रहमत' के 'र' अक्षर पर बिन्दु लग चुका है और वह रहमत के स्थान पर 'ज़हमत' ( कष्ट ) बन गया है। अगर यह इसी तरह क्रायम रह गया तो सारे संसार में फैल जाएगा और फैल कर ऐसा मिटेगा, कि फिर क़यामत ( प्रलय ) से थोड़े ही दिन पहले तक हमारा पता लगे तो लगे, अन्यथा फिर नहीं लगेगा।

\* \* \*



## आर्टिफिशल डायमैण्ड

सुन्दर—जेवरों में खूब चमकता है।

सुदृढ़—काँच काट देता है।

सस्ता—केवल १) रुपये प्रति कैरट।

सैम्पल—नाक की कील ३) रुपए में मँगाइए।

पता—आर्टिफिशल डायमैण्ड,

सौकारपेट, मद्रास

Artificial Diamond Co.;

Sowcarpet, MADRAS.

## एक नई ख़बर !

एक नई पुस्तक "हारमोनियम, तबला एण्ड बाँसुरी मास्टर" प्रकाशित हुई है। इसमें ७० नई-नई तर्ज़ों के गायनों के अलावा १३५ राग-रागिनी का वर्णन खूब किया गया है। इससे बिना उस्ताद के हारमोनियम, तबला और बाँसुरी बजाना न आवे, तो मूल्य वापिस देने की गारण्टी है। पहिला संस्करण हाथोंहाथ बिक गया। दूसरी बार छप कर तैयार है। मूल्य १); डा० खर्च १-) पता—गर्ग एण्ड कम्पनी नं० ६, हाथरस





## सोने-चाँदी के फ़ैन्सी ज़ेवर के लिए सोनी मोहनलाल जेठाभाई

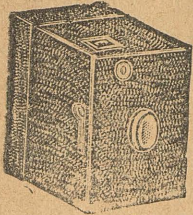
३२ अरमनी स्ट्रीट, टेलीफोन नं० ३१४३, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता  
“बी” केटलॉग दाम ॥) “सी” केटलॉग ॥) पोस्टेज भेज कर मंगाइये !



कम कीमती और छोटा केमरा खरीदना रुपया बर्बाद करना है।

फोटोग्राफी सीख कर

२००) मासिक कमा लो



यह नई डिज़ायन का रॉयल हैड केमरा अभी आया है। इसमें असली जर्मनी लेंस न्यू फ़ाइंडर और स्प्रिङ शटर लगा है तथा ३।X४ इंच के बड़े प्रेड पर ठीका और मनोहर तस्वीर खींचता है। फोटो खींचने में कोई दिक्कत नहीं, स्प्रिङ दबाया कि तस्वीर खिंच गई। फिर भी शर्त यह है कि—

यदि केमरे से तस्वीर न खिंचे तो

१००) नक़द इनाम

साथ में कुछ जरूरी सामान, प्रेड, लैक टोनिङ कागज़, प्रेड धोने के तीन मसाले, फोटोग्राफिक लालटेन, २ तरतरी, तस्वीर छापने का प्रेम, सरल विधि व स्वदेशी जेबी चर्चों मुफ्त दिया जाता है। मूल्य केवल ४) डाक प्रच ॥॥

पता—माधव ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़ नं० ४१

दवाइयों में

### खर्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए “अनुभूत योगमाला” पाल्कि पत्रिका का नमूना मुफ्त मंगा कर देखिए।

पता—मैनेजर “अनुभूत योगमाला” ऑफिस, बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)

गृहस्थों का सच्चा मित्र

३० वर्ष में प्रचलित, रजिस्टर्ड

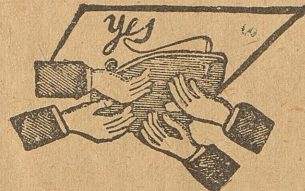
बालक, वृद्ध, जवान, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक रामबाण दवा। हमेशा पास रखिए। वक् पर लाखों का काम देगी। सूची मय कलेण्डर मुफ्त मंगा कर देखो।

कीमत ॥॥) तीन शीशी २) डा० म० अलग

पता :—चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा

भूत, भविष्य, वर्तमान बताने वाला जादू का

### ज्ञानचेट



मैस्मेरिज़्म विद्या से भरा हुआ यह ज्ञानचेट गुप्त प्रश्नों का (जैसे रोग, यात्रा, परीक्षा का परिणाम, चोरी, खोए मनुष्य या गढ़े धन का पता, व्यापार, रोज़गार में हानि या लाभ। इस वर्ष फ़सल अच्छी होगी या बुरी, विवाह होगा या नौकरी लगेगी कि नहीं, गर्भ में लड़का है कि लड़की। फ़र्ज़ों का सिद्ध होगा कि नहीं, इत्यादि) ठीक-ठीक उत्तर पेन्सिल द्वारा जिस भाषा में चाहो, लिख देता है। अभ्यास की तरकीब सहित मूल्य २॥॥) डाक-प्रच ॥॥)

पता—दीन ब्रादर्स अलीगढ़, नं० ११

### उस्तरे को बिदा करो

हमारे लोमनाशक से जन्म भर बाढ़ पैदा नहीं होते। मूल्य १) तीन बने से डाक-प्रच माफ़।

शर्मा ऐण्ड को०, नं० १, पो० कनखल (यू० पी०)

### सुन्दर केलेण्डर

महात्मा गाँधी, पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहरलाल नेहरू के रङ्गीन चित्र सहित बिना मूल्य मंगाइए।

पता :—सुधावर्षक प्रेस, अलीगढ़

### बिलकुल मुफ्त

आरोग्य, दौलत और आबादीका सरल रास्ता बतानेवाला “वैद्यविद्या” मुफ्त मिलती है। आज ही मंगाइये। राजवैद्य नारायणजी, केशवजी, हेड आफिस जामनगर (काठियावाड़)

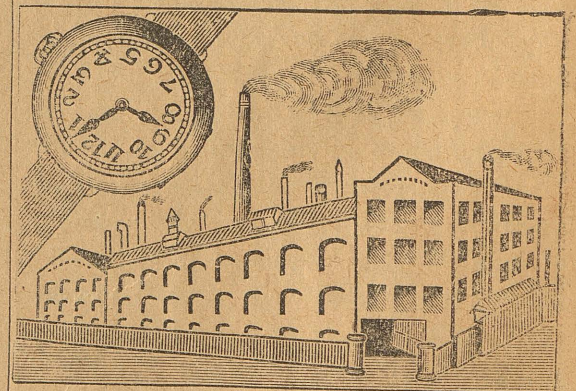
### हाथ का बना हुआ खदर

१—बढ़िया शुद्ध खदर—साइज़ १७ गज़ से १८ गज़ X २७ इंच या १२ गिरह प्रति थान का मूल्य केवल ६॥) रुपए।

२—रेशमी खदर—सिल्क सूटिङ या करण्डी साइज़ ७ गज़ X २७ इंच जो कि एक सूट या दो कोटों के लिए काफ़ी है। मूल्य केवल २॥) रुपए। पैकिङ्ग महसूल डाक माफ़।

दी इण्डियन ट्रेडिङ्ग कं०, फगवाड़ा, पञ्जाब

### २॥॥) में रिस्टवाच



निकल लीवर रिस्टवाच सिर्फ़ स्टॉक खाली करने के लिए फ़ैक्टरी के दाम में १ महीना के लिए दी जायगी। यह घड़ी देखने में सुन्दर, कल-पुर्जे की निहायत मज़बूत, समय बताने में बिल्कुल ठीक, इस दाम में रिस्टवाच आपने सुनी भी न होगी; कीमत सिर्फ़ २॥॥) गारण्टी १ साल। डाक-प्रच ॥॥) अलग।

साथ में खूबसूरत बक्स मय एक रेशमी क्रीता के मुफ्त मिलता है। स्टॉक थोड़ा है। घड़ी अच्छी तरह देख-भाल कर, पार्सल करने के पहले, भेजी जाती है। ३ घड़ी मँगाने से डाक-प्रच माफ़।

ईस्ट इण्डिया वाच कम्पनी (भी) ब्रीडन स्ट्रीट कलकत्ता

### पसारठकी सर्व प्रकार औषध

सस्ते दरमें बेचना शुरू कर दिया।

किराना, मशाला, पाचन, काढ़ा, घुटी, सर्व प्रकार काष्ठ औषध जड़ी बूटी (बन औषधियाँ) हरी और सूखी शुद्ध और ताजा यथार्थ मूल्यपर मिलेगी। और भी कलकत्ते में लिनेवाला देशी विलायती सब तरहका माल थोक और खुदरा कम खर्चों और हिफाजतके साथ भेजा जाता है। कुछ दाम अगाड़ी भेज देना होगा और विशेष हाल जाननेके लिये या कोई चीजका भाव मँगाना होवे तो -) आनाका टिकट भेजकर निश्चय कर लीजिये।

कमीशन एजेंट—भारत भैषज्य भण्डार

नं० ९ मल्लिक स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता।

## “होमियोपैथिक दवायों”

५ पैसे की डाम किताब देख कर थोड़ी पढ़ी-लिखी खियाँ भी इलाज कर सकती हैं। गृहचिकित्सा बक्स असली अमृत तुल्य दवाइयों से भरी १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०८ शीशियाँ हैं; जिनका मूल्य क्रमानुसार उप-योगी हिन्दू पुस्तक तथा दू.पर सहित २), ३), ३॥), ४॥), ६॥), ८॥), १०॥) है। सब प्रकार की होमियोपैथिक सम्बन्धी पुस्तकें बायोकेमिक दशाएँ ग्लोबलस, सुगर ग्राफ़ मिस्क टूब, फ़ायल, वेल्डेट कार्ड, कार्डबोर्ड केस आदि सस्ते दाम में मिलते हैं। स्कूस सनेरेरिया मेरटेन बी० टी० मोतिषाबिन्द व जाला की शर्तिया दवा, दाम २॥॥) की डाम।

बी० सी० धार एण्ड ब्रादर्स नं० ८१, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता



## साहित्य का सपूत

[ श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल् बी० ]

अङ्क—२; दृश्य—३

पार्क

( रमाकान्त का एक अखबार पढ़ते हुए आना )

रमाकान्त—( पढ़ता-पढ़ता एकाएक नफ़रत से अखबार दूर फेंक देता है ) राम ! राम ! ऐसा पक्षपात ?

( जदुनाथ का आना )

जदुनाथ—ओहो ! तुम पहले ही से यहाँ पहुँच गए। मगर तुम तो—( सूरत गौर से देख कर ) क्यों, क्या हुआ क्या ?

रमाकान्त—आज के अखबार में कल के तमाशे का हाल नहीं पढ़ा, जो यहाँ की शिक्षित मण्डली ने खेला था ?

जदुनाथ—नहीं तो। क्यों ?

रमाकान्त—तमाशा तो हमने और तुमने दोनों ही ने देखा था। जैसा था वह हम-तुम खूब जानते हैं।

जदुनाथ—हाँ-हाँ। मगर जब नाटक ही ऊटपटाँग हो तो खेलने वालों का क्या दोष ? जब लोग लेखन-कला का गणेशायनमः नाटक हो लिख कर करना चाहते हैं, तब नाटक-कला की दुर्दशा न होगी तो होगी क्या ? यह नहीं ख्याल करते कि केवल बातों ही में चरित्र-चित्रण, भाव-प्रदर्शन, घटना-विकास करना और उनमें दृश्यों की ऐसी तरतीब बाँधना कि वह घटना-चक्र और साथ ही रङ्गमञ्च पर ठीक बैठती जाएँ, इनके अलावे बातें भी इतनी स्वाभाविक हों कि उनके नाट्य में कहीं भी अड़-चन न पड़े, खेल नहीं है। जब लेखनी लेखन-कला पर पूरा अधिकार जमा ले और लिखने वाला स्टेज-ज्ञान और नाट्य-मर्म से भली-भाँति परिचित हो जाए, तब कहीं उसे नाटक लिखने की हिम्मत करनी चाहिए। वरना वह नाटक ही क्या, जो रङ्गमञ्च पर ठीक न उतरे ? हालाँकि कुछ लोगों ने इस ऐव को छिपाने के लिए ही एक नया नाम 'पाठ्य-नाटक' निकाला है। उनका सर ! नाटक भी भला कहीं खाली पढ़ने के लिए होता है ? ऐसा होता तो फिर गल्प और उपन्यास की क्या ज़रूरत थी ?

रमाकान्त—वही तो। एक तो नाटक दो कौड़ी का था, उस पर वह खेलने वालों की काट-छाँट से और भी चौपट हो गया था। मगर—( अखबार उठाता है )

जदुनाथ—वह तो हुआ ही चाहे, क्योंकि नाटक में कोई भी अंश बेकार नहीं होता। जिसे हम बेकार और भद्दा समझते हैं, वह अक्सर दृश्यों की तरतीब और घटनाओं का क्रम ठीक बैठाने की खातिर या दर्शकों को ज़रा सा उकता कर यह बोध कराने के लिए होता है कि इसके पहिले की घटना घटित हुए बहुत या कुछ न कुछ समय हो गया।

रमाकान्त—( अखबार की तरफ़ इशारा करके ) मगर यह अख़ल का दुश्मन इन बातों को समझे तब तो, जिसने इस नाटक की तारीफ़ों से कॉलम के कॉलम भर दिए हैं। और प्रहसन जो उसके साथ खेला गया था और जिसने सच पूछो तो तमाशे में जान डाल दी थी, उसी की बदौलत दर्शक अन्त तक जूटे रहे, उसके बारे में इसने कुछ लिखा ही नहीं। गोया इस अन्धे को वह दिखाई ही नहीं पड़ा था। शायद इस बेवक़ूफ़ की समझ

में गम्भीर अंश के लेखक ने हाथ से लिखा था और प्रहसन के लिखने वाले ने पैर से। यह देखो तो।

जदुनाथ—अजी मारो गोली। इन निपोड़सङ्गों को मैं खूब जानता हूँ। इनका साहित्य-सम्मेलनों की स्पीचों तक में यही हाल है। यह लोग कला की खूबियाँ क्या जानें ? पेड़ के पत्ते देखते हैं, जड़ नहीं। बस विषय पर मुग्ध होना जानते हैं, क्योंकि कला परखने की इतनी अकल कहाँ ? तब यह कैसे समझें कि साहित्य में असली चीज़ कला है, जो खराब से खराब विषय को भी उत्तम कर दिखाती है और जिसके बिना उत्तम से उत्तम विषय भी दो कौड़ी का है। गम्भीर अंश का विषय धार्मिक और बड़े-बड़े शब्दों में था। इसलिए इसने आँख मूँदे तारीफ़ कर दी होगी। यह न देखा कि इसमें कला का क्या हाल है ?

रमाकान्त—क्या बताऊँ, हमारे हास्य लेखक-गण भी बड़े दबू मालूम होते हैं, जो इनकी धाँधली चुपचाप सहते जाते हैं और इनकी खबर नहीं लेते।

जदुनाथ—क्या ज़रूरत ? यह लोग हैं कौन, तीन में या तेरह में ?

रमाकान्त—कम से कम बनते तो हैं बड़े ज्ञानी, भाषा-प्रचारिणी-सभा के मेम्बर।

जदुनाथ—जाव भी। जहाँ ऐसे लोग मेम्बर होंगे वहाँ भाषा-प्रचारिणी काहे को, बल्कि भाषा-हत्याकारिणी सभा बन जाएगी। हमारे हास्य-लेखकों का इन पर लेखनी उठाना अपनी लेखनी का अपमान करना है। उनकी निगाहों में यह लोग इतनी भी इज़्ज़त के क़ाबिल नहीं हैं। वह खूब जानते हैं कि साहित्य की क़दर और भाषा की तरक्की जनता के हाथ में है। तभी तो हास्य-लेखकों में कोई इनकी ओर फूटी आँख से भी नहीं देखता।

( संसारीनाथ का कुछ ख़त लिए हुए आना )

संसारी—भई साहित्यानन्द पर तुम्हारा चकमा तो असर करने लगा। यह देखो, उसका आज का ख़त, जिसे उसने तिलोत्तमा के नाम से भेजा है और जिसे मैं अभी-अभी डाक़घ़ाने से लेकर आ रहा हूँ।

( ख़त जदुनाथ को देता है )

रमाकान्त—पढ़ो-पढ़ो। देखें इस दफ़े उसने क्या लिखा है।

जदुनाथ—( ख़त पर सरसरी नज़र डालता हुआ ) लिखा क्या है ? रङ्ग जमता जा रहा है। चित्र की माँग है। दर्शनों की लालसा है। ( ख़त पर नज़र डाले हुए ) ओहो ! फ़ोटो के लिए तो इस दफ़े हाथ जोड़ कर प्रार्थना है। ( सामने से पत्र हटा कर ) अभी क्या, जब तिलोत्तमा के पीछे इसे पागल बना दूँ, तब मेरा नाम जदुनाथ है। उसके बाद तो उसे उँगलियों पर नचाना बाँएँ हाथ का खेल है। फिर तो जो चाहूँगा, उससे करा लूँगा। मेरी छेड़छानियों ने कहाँ तक काम किया है, इसको जाँचने के लिए मैंने तिलोत्तमा की तरफ़ से उसे कल लिख भेजा है कि मैं अभी कुमारी हूँ और पिता जी पुगने ख्याल के हैं। इसलिए न मैं पढ़ें के बाहर निकल सकती हूँ और न किसी फ़ोटोग्राफ़र के सामने बैठ कर फ़ोटो खिंचवा सकती हूँ। चित्र कहाँ से भेजूँ।

यदि आप कृपा कर कल साढ़े पाँच बजे शाम को मत्थे पर हरा टीका लगा कर पार्क में टहलने के लिए आवें तो मैं अपने कोटे पर से दूरबीन द्वारा आपका दर्शन पाकर अपना जन्म सफल कर लूँगी।

रमाकान्त—ओहो ! यह चाल तो अच्छी चले उस्ताद, और यह ख़त उसे आज ही मिला होगा।

जदुनाथ—इसीलिए तो तुम लोगों को इस वक्त यहाँ मिलने को कहा था। मेरा ख्याल है कि यह ख़त अपना असर ज़रूर दिखाएगा और वह दौड़ता हुआ आएगा। मैंने टेसुआ से भी कह दिया है कि जब वह आने लगे तो मुझे खबर कर दे। ख़ैर, अभी बहुत वक्त बाक़ी है। हाँ संसारीनाथ, जब तक तुम भी अपने मत्थे पर एक हरा टीका लगाओ।

( अपनी जेब से रङ्ग की छिन्नी निकालता है )

संसारी—( घबड़ा कर ) क्यों ?

जदुनाथ—ताकि प्रेम का नशा डह की आँच से उस पर और जल्दी चढ़ जाए। तुम्हारी पेशानी पर अपना ही ऐसा टीका देख कर वह यह समझे कि तुम भी तिलोत्तमा के लिए यहाँ आए हो।

रमाकान्त—बहुत ठीक ! यह खूब सोचा। प्रेम में दिल बड़ा शक़ी हो जाता है। वह ज़रूर यही समझेगा।

संसारी—मगर वह मुझसे कहीं और न बिगड़ जाए ?

जदुनाथ—और अभी क्या वह कम बिगड़ा हुआ है ? अजब आदमी हो, जब देखो तब तुम्हें लेहाज़ ही मारे डालता है। अगर तुम चपला को पाना चाहते हो, तो जैसा कहता हूँ वैसा करो, नहीं जाने दो। हमारा क्या ?

संसारी—नहीं भाई, ख़फ़ा न हो। हाथ जोड़ता हूँ। चपला की खातिर मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूँ।

जदुनाथ—( संसारीनाथ के हरा टीका लगाता हुआ ) अब तुम आए रास्ते पर। बस अब इतना करो कि जब साहित्यानन्द आवे तो उसके सामने खूब अकड़-अकड़ कर इस तरह घूमना कि मानो तुम उसे पहचानते ही नहीं। समझे ! जब तक हम लोग तिलोत्तमा के बाप और नौकर बन कर आएँगे और टीका पहचान कर तुमसे मिलेंगे, फिर देखना तमाशा। वह लो, टेसुआ भी आ गया। क्यों रे, क्या हाल है ? आ रहे हैं ?

टेसू—आने की तैयारी कर रहे हैं। खूब टीका-ऊका लगाया है। ( संसारीनाथ की तरफ़ देख कर ) बस-बस ऐसा ही।

रमाकान्त—क्या अभी घर से चले नहीं ?

टेसू—नहीं, अभी जो आज दिन भर में कविता लिखी है। उसे रट रहे हैं। कहते हैं कि उसे पार्क में चल कर खूब चिल्ला-चिल्ला कर पढ़ेंगे, ताकि अड़ोस-पड़ोस के सभी मुहल्ले वाले सुन सकें। अच्छा अब जाता हूँ।

( जाता है )

जदुनाथ—ओहो ! यह ज़ोर ?

रमाकान्त—उसकी कविता सुनने क़ाबिल होगी।

जदुनाथ—यह अच्छी कही, भला वह कविता क्या कहेगा अपना सर ! कविता कहने के लिए दिल-दिमाग़ और ज़बान चाहिए। वह कविता नहीं, कविता की टाँग अलबत्ता तोड़ सकता है।

रमाकान्त—वही क्यों ? कविता की टाँग आजकल बहुत से लोग तोड़ते हैं भाई।

संसारी—मगर यह धाँधली तभी तक है, जब तक कविता की भाषा बोल-चाल की भाषा से भिन्न रखी जाती है।

रमाकान्त—अब यह भी बोले।

जदुनाथ—साहित्य के विषय पर इनकी ज़बान ख़ाह-मख़ाही खुलेगी। आखिर लेखनी का असर कहाँ जा सकता है ? ख़ैर, ठीक कहते हैं। तभी तो कविता में न



कोई शब्दों के चुनाव और न उनके इस्तेमाल पर ध्यान देता है—जो शब्द जहाँ चाहते हैं, भट खींच-खाँच या सिकोड़-फिकोड़ कर दूँस देते हैं। वाक्यों तक को भी लोड़-मोड़ कर बुरी तरह उलट-पलट देने से बाज़ नहीं आते। जुमले का सर यहाँ है तो धड़ का साढ़े तीन कोस तक पता नहीं; और धड़ है भी तो पेट पीठ के ऊपर और पीठ टाँग के नीचे है। इसीसे न उसमें कुछ मज़ा होता है, न खूबी होती है, और न असर ही होता है। बल्कि सुनने तक में बुरी और भद्दी मालूम होती है। वह कविता क्या स्वाक दिल पर लग सकती है, जिसके मानी घण्टों सर मारने पर खुलें।

संसारी—ऐसी हाथापाई भला कहीं बोल-चाल की भाषा में चल सकती है? जहाँ ज़रा शब्दों और वाक्यों का बेजा इस्तेमाल हुआ, तहाँ वे कानों में खटक कर क्रौरन कहने वाले की ज़बान पकड़ लेंगे।

रमाकान्त—क्यों नहीं! मगर मुश्किल तो यह है कि हमारी वर्णमाला में ए, ऐ, ओ, औ का कोई ह्रस्व अंश है ही नहीं। हालाँकि बोलने में ये बहुत सी जगहों पर ह्रस्व ही बोले जाते हैं। जैसे “तो क्या हुआ” में “तो”। “कहने को बात रह गई” में “को”। अब यही फ़िक्ररे अगर हम पद में लावें तो हिन्दी-पिङ्गल के क्रायदे पर “तो” और “को” को डबल मात्रा में रख कर छन्द बैठा लाना पड़ेगा। क्योंकि ह्रस्व मात्रा इनकी है नहीं। तब बोल-चाल का मज़ा या उसके ऐसा बहाव इसमें कैसे आ सकता है?

जदुनाथ—यह न कहो। कहने वाला अपनी ज़बान की सफ़ाई लाख ढङ्ग से दिखला सकता है। फिर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि हमारी वर्णमाला का यह ऐब हमारे इस घमण्ड को, कि नागरी-लिपि में हर तरह के उच्चारण के शब्द सही-सही लिख सकते हैं, तोड़ रहा है। क्योंकि हमारे पास ह्रस्व एकार न होने के कारण Set, Pet, Men, Ten ठीक-ठीक लिख नहीं सकते। इसलिए इन चारों स्वरों का ह्रस्व अंश रखना बहुत ज़रूरी है। इनके बदले में ऋ ऌ लृ लृ को स्वरों की श्रेणी से अगर अलग कर दें तो कमी-बेशी दोनों बराबर हो जाए और नुक़सान भी कुछ न हो। क्योंकि अच्चल तो उच्चारण के लेहाज़ से ऋ-लृ को स्वरों में रखना ही नहीं चाहिए और दूसरे इनका काम रेफ़ और ईकार से बख़ूबी चल सकता है।

रमाकान्त—मगर ह्रस्व ए, ऐ, ओ, औ, को लिखि-गा किस तरह, यह तो बताइए।

जदुनाथ—“भ” की तरह “ए” का मत्था खोल देने से ह्रस्व “ए” हो सकता है। और जहाँ पाइयों का मामला है, वहाँ ऊपर की पाइयों को पट से चत कर देने से काम बन सकता है। इस तरह से हमारी वर्णमाला का यह वेढव ऐब भी दूर होगा और पिङ्गल के नियमों को बदलने की कोई ज़रूरत भी न पड़ेगी।

साहित्यानन्द—( नेपथ्य में ) अबे टेसुआ! अब तो पार्क—उहुँक—उपवन आ गया। अब मैं अपने रबड़-छन्द का पढ़ना शुरू कर दूँ ?

जदुनाथ—( चौक कर ) अरे! आ गया। आओ भाई रमाकान्त, चलो ऋटपट भेष बदल कर आवें। और तुम संसारीनाथ यहीं रह कर जैसा कहा है वैसा करना।

रमाकान्त—ज़रा उसकी कविता सुन लूँ तब।

जदुनाथ—नहीं जी, आओ चलो !

( जदुनाथ रमाकान्त को पकड़ ले जाता है और दूसरी तरफ़ से साहित्यानन्द और टेसू का आना )

साहित्यानन्द—( संसारीनाथ को बिना देखे हुए ) क्यों बे, तू उत्तर क्यों नहीं देता ?

टेसू—मैंने कुछ सुना ही नहीं, जवाब क्या दूँ ?

साहित्यानन्द—क्यों नहीं सुना ?

टेसू—( कान खुजाता हुआ ) आपने रास्ते में एक दफ़े जो अपनी कविता पढ़ी तो उसका एक बड़ा सा शब्द मेरे इस कान में अटक गया है, जो निकाले से नहीं निकलता।

साहित्यानन्द—हाँ, अच्छा उस कान—उहुँक—कर्ण से सुन।

टेसू—( घूम कर ) कहिए।

साहित्यानन्द—उस पेड़ के पास चला जा और वहाँ से अवलोक कि मेरा यह टीका दिखाई पड़ता है या नहीं।

टेसू—( दूर जाकर ) यहाँ से तो नहीं दिखाई पड़ता।

साहित्यानन्द—अच्छा टीके को तनिक और चटक और बड़ा—उहुँक—महान कर दूँ। ( जेब से रङ्ग की डिब्बी निकाल कर टीका बड़ा करता है। ) अब तो देख।

टेसू—हाँ, अब कुछ-कुछ दिखाई पड़ने लगा।

साहित्यानन्द—अच्छा वहीं रह। अब मैं अपनी कविता पाठ करता हूँ। देख सुनाई पड़ती है या नहीं। रबड़ छन्द है रबड़। इसके पद रबड़ की भाँति जितना चाहो, उतना बढ़ जाते हैं। सुन—

( जेब से कागज़ निकाल कर चिल्ला-चिल्ला कर पढ़ता है )

प्रेम-सुन्दरी !

प्रेम-सुमन की माला पहने स्नेह-सुरभि के माते अलि चञ्चल गुज़ार रहे।

मत्त तरङ्गिणि !

वृत्तहीन—दिकाल—विक्रीड़ित

तरलित तुङ्ग—तमाल—विचुम्बित

नभवन—शिखर—विहारिणि

कव आओगी ?

संसारीनाथ—( अलग ) ओहो ! यह कविता सुन कर तो मेरी भी अब सामने जाने की हिम्मत पड़ गई। ( टहलता है। )

टेसू—( धत्-धत् करता हुआ साहित्यानन्द पर फट पड़ता है। ) धत् ! धत् ! धत् ! अरे ! आप हैं ? मैं समझा कुत्ता भूँक रहा। क्योंकि कुछ समय तो मिला नहीं, खाली भों-भों की सो आवाज़ मालूम हो रही थी।

( क्रमशः )

( Copyright )

\* \* \*

शरीर में नया जोश, नई ताक़त पैदा करने वाला

## पौष्टिक चूर्ण

तीन दिन के भीतर ही अपना गुण दिखाता है, पेशाब की समस्याओं को हटा कर दस्त साफ़ करता है। सब प्रकार का दर्द, पीड़ा को रोकता है, शरीर को बलवान तथा चेहरे को कान्तियुक्त करके स्मरण-शक्ति को बढ़ाता है। स्नायु-दुर्बलता, चीखता और अधिक विलासता के कारण उत्पन्न हुई कमज़ोरी के कारण हाथ-पैरों का काँपना, चक्कर आना, आँखों के आगे चिनगारियाँ निकलना, कलेजे का धड़कना आदि सभी बीमारियाँ दूर होती हैं। मू० ५) रु०, डा० ख० ॥) अलग। इस चूर्ण को हर मौसम में खा सकते हैं। और आयुर्वेदिक औषधियाँ भी सब प्रकार की सदा तैयार मिलती हैं। सूचीपत्र मुफ्त।

पता—भारत भैषज्य भण्डार,

१८, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता

## शरीर को पुष्ट तथा कान्तिमय

बनाने वाली कोई भी दवा मत खाइए, क्योंकि बिना दवा खाए भी यह सभी बातें प्राप्त हो सकेंगी, पूरा हाल—  
मैनेजर रसायन-घर, नं० ११, शाहजहाँपुर से मालूम करें।

प्रतिष्ठाता



डाक्टर एस.के.बर्मन

**डाक्टर**

**(डाक्टर एस.के.बर्मन)**

**लिमिटेड**

**कलकत्ता**

स्थापित

कार

ट्रेड SKB मार्क

१९४४ ई

सन १८८४ ई

विभाग नं० १४, पोष्ट-बक्स नं० ५५४, कलकत्ता।

५० वर्ष से प्रचलित शुद्ध भारतीय पेटेण्ट दवाएँ।

हमारा अनुरोध !

परीक्षा कर लाभ उठाइए !!

डाक्टर शृङ्गार-सामग्रियों के नमूने का बक्स

(Regd.)

( इसमें न प्रकार की शृङ्गार-सामग्रियाँ हैं )

जिन लोगों ने हमारी औषधियों का व्यवहार किया है, वे उनके गुणों से भली-भाँति परिचित हैं।

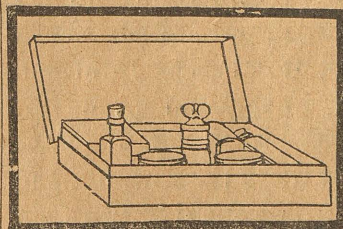
कम मूल्य में हमारे यहाँ की शृङ्गार-सामग्रियों की परीक्षा हो सके, इस-लिए हमने अपने यहाँ की तुनी हुई शृङ्गार-सामग्रियों के “नमूने का बक्स” तैयार किया है। इसमें नित्य प्रयोजनीय सामग्रियाँ नमूने के तौर पर दी गई हैं।

मूल्य—१ बक्स का १॥८) एक रुपया दस आना। डा० म० ॥)

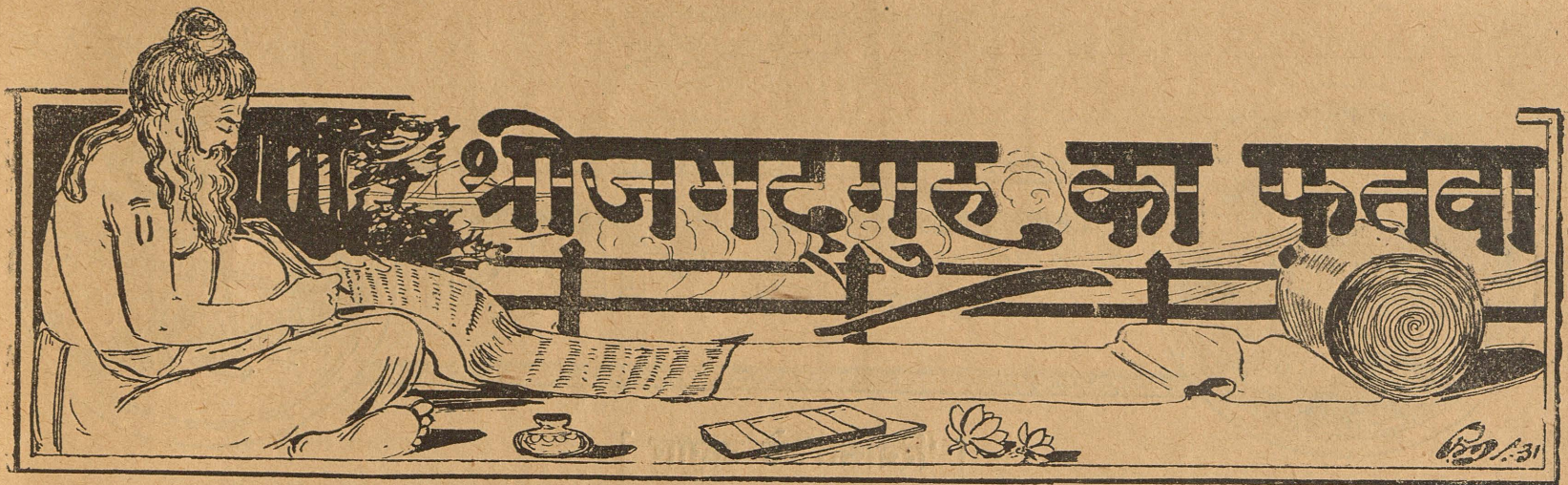
नोट—समय व डाक-खर्च की वचत के लिए अपने स्थानीय हमारे एजेण्ट से खरीदिए।

बिना मूल्य—सम्बत् १९८८ का “डाक्टर पञ्चाङ्ग” एक कार्ड लिख कर मंगा लीजिए।

एजेण्ट—इलाहाबाद ( चौक ) में बाबू श्यामकिशोर दुबे।







## [ हिज़ होलीनेस श्री० वृकोदरानन्द विरूपाक्ष ]

‘किसी के ‘प्रान में कान्ह जुवान में नाहीं’ था, मगर यहाँ आजकल लोगों के प्रान और जुवान दोनों में कानपुर की चर्चा है। अखबार वाले तो, खुदा फूट न बुलवाए, कानपुर की बदौलत मालामाल हो गए। एडीटरों की पौ-बारह है। मजामीन मानो हाथ बाँधे खड़े हैं। मेटर घटता है? कुछ परवाह नहीं, जाँच कमिटी की प्रोसीडिज़ कहीं छपी होगी, किसी गवाह के बयान की कान-पूँछ तराश कर भर दीजिए।

और कुछ न बन पड़े तो सरकारी जाँच कमीशन के हिन्दू मेम्बर मि० दवे की नीरव भाषा की ही तारीफ़ कर दीजिए। ‘यथा नामो तथा गुणाः!’ आरम्भ से ही दवे तो ऐसे दवे कि सगबगाने का नाम ही नहीं लिया। अच्छा ‘साक्षी गोपाल’ चुन कर भेज दिया था। माशा अल्लाह, अपने राम तो सरकार के इस निर्वाचन-चतुरता पर मुग्ध हैं।

उधर अगर किसी हिन्दू गवाह ने मुसलमानों के तन्ज़ीम आन्दोलन का ज़िक्र कर दिया तो नवाबज़ादा साहब का ‘जुन छुड़ गयाउ पाक बरतौरा!’ फिर तो प्रश्नों की वह बौछार शुरू होती थी, कि बेचारे गवाह के लिए सॉंग छिपाना मुश्किल हो जाता था।

खैर, यह ‘टाँय-टाँय फिस’ भी कम मज़ेदार नहीं रही। दज़े के समय जिन्हें दिया लेकर ढ़ूँढ़ने पर भी सरकार और उसकी पुलिस तथा पलटन का पता नहीं लगा था, उनका भ्रम दूर हो गया होगा, और अब निश्चिन्तता-पूर्वक वे सखी नौकरशाही के रामराज्य के मज़े लेंगे।

यों तो कानपुर के दज़े का सातो काण्ड ही पुर-लुफ़ रहा, मगर अपने राम के ‘समझानुसार’ सब से अधिक दिलचस्प रहा, उसका उत्तर-काण्ड। कहा भी है कि “बाल का शुरू उत्तर का अन्त, जो बूझे सो पूरा सन्त।” फलतः जिन लोगों को अब तक श्रीजगद्गुरु की “सन्तता” में सन्देह रहा हो, उन्हें चाहिए कि उसका संशोधन करा डालें और अगर गुन्जाइश न हो तो अन्त में एक “शुद्धि-पत्र” जोड़ लें।

हाँ, तो पुलिस वहाँ दज़े के दिनों में काफ़ी मुस्तैदी दिखा रही थी। मगर दज़ा करने वाले उसे कुछ इन्तज़ाम करने का मौक़ा ही नहीं देते थे। आग लगा कर भाग जाते थे, लूट कर खिसक जाते थे, पुलिस पकड़ने जाती तो गुण्डों को घर में पाती ही न थी। रास्तों पर जो रहते वे पुलिस-लॉरी देखते ही नौ-दो ग्यारह हो जाते। अब बताइए बेचारी पुलिस करती तो क्या करती?

इसलिए श्रीजगद्गुरु की राय है कि अगर भविष्य में आप लोग या आपके गुण्डे लोग कहीं दज़ा करें तो इन ज़रूरी हिदायतों की अवश्य पाबन्दी करें, ताकि पुलिस को दज़ा शान्त करने या अपने कर्तव्य का पालन

करने में कोई दिक्कत न हो, वरना उसे मजबूर होकर ताश खेलना आरम्भ कर देना पड़ेगा।

वे हिदायतें यों हैं कि (१) आग लगाने वाले आग लगा लेने पर उस समय तक कहीं न जाएँ, जब तक पुलिस आकर उन्हें पकड़ न ले, (२) दज़े में गुण्डई से अवकाश पाते ही गुण्डे अपने घरों में चले जाएँ, ताकि पुलिस जब उन्हें पकड़ने आए तो उसे खाली हाथ न लौटना पड़े, और (३) पुलिस की लॉरियाँ देख कर तितर-बितर हो जाना महा कमीनापन है—दज़ा-शास्त्र के विरुद्ध है। ऐसा करने से पुलिस बेचारी गोली नहीं चला सकती। इसलिए दज़ाकारियों को चाहिए कि दज़ा करने के समय पुलिस की लॉरियाँ देख कर भागा न करें।

इस हिदायत को याद रखिए और सहयोगी ‘वर्तमान’ की ज़वानी कुछ और याद रखने योग्य मज़ेदार बातें और सुन लीजिए। वह लिखता है :—

“इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि कानपुर आने के लिए मुसलमान डिप्टी कलेक्टर तथा पुलिस अफ़सरान छुटपटाया करते हैं। कानपुर मालदार ज़िला है। यहाँ डालियों और रिश्वतों की आमदनी का कोई हिसाब नहीं है। कोकेन और जुए से यहाँ पर पुलिस को बँधी हुई आमदनी होती है। बिना ज़ोर या ज़बर्दस्ती दिखलाए ही यहाँ के पुलिस अफ़सरान दो-तीन वर्ष के अन्दर लाख दो लाख कमा ले जाते हैं! कोर्ट-इन्स्पेक्टर होम-मेम्बरों के पैरों पर गिर कर कानपुर भेजे जाने की कोशिश किया करते हैं! प्रान्तिक सरकार से ये सब बातें छिपी नहीं हैं।”

छिपी कैसे रहें जनाब, श्रीमती त्रिकालदर्शिनी हैं—भूत, भविष्य और वर्तमान उनके लिए हस्तामलकवत है। इसके सिवा एक तो पुलिस स्वयं ही उनकी चहेतियों में है, तिस पर दाढ़ी वाली! इसीके बदौलत तो बेचारी मूसरों ढोल बजाती हैं। फिर, कानपुर ही क्यों? संयुक्त प्रान्त में और भी कई स्थान हैं, जहाँ बिना दाढ़ी की पुलिस उन्हें अच्छी ही नहीं लगती।

अमाँ, शोभा और सौन्दर्य भी कोई चीज़ है या नहीं? काशी हिन्दू-प्रधान नगर है, हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है, इसलिए जब से अज़रेज़ी राज्य कायम हुआ है, तब से शायद ही वहाँ एक या दो ‘अ-दाढ़ी’ कोतवाल भेजे गए हैं। बाबा विश्वनाथ की पुरी में बिना दाढ़ी का कोतवाल! राम-राम! कोई सुनेगा तो क्या कहेगा?

फिर पुलिस अफ़ीसरी के लिए दाढ़ीदार जवान होते भी हैं मौज़ूँ। मासिवा इसके दाढ़ी-दल इससे प्रसन्न भी रहता है। फलतः यह आवश्यक है कि उन्हें कानपुर जैसे ज़रखेज़ ज़िले में रक्खा जाए, ताकि उनकी सुट्टी गरम होती रहे और उनकी बदौलत गरम होता रहे श्रीमती जी का पहलू!

परन्तु हिज़ होलीनेस कानपुर की चर्चा में ऐसे फँसे कि मोटे मियाँ मद जिल्लू की याद ही नहीं रही, हालाँकि उनके भोंपू का भो-भो अभी पूर्ववत् ही है। बल्कि यों कहिए कि ज्यों-ज्यों गरमी बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों वह पञ्चम से ससम की ओर बढ़ा जा रहा है। एक तो बिना पेंदी का नगाड़ा, तिस पर यह मई की गरमी, खुदा न करे; कहीं फट पड़ा तो सारे देश में दुर्गन्धि फैल जाएगी।

खैर, अबकी मोटे मियाँ के भोंपू में से जो घोर ख निकला है, उसका तात्पर्य यह है कि अगर महात्मा गाँधी गोलमेज़ में नहीं जाएँगे तो भी मैं अवश्य जाऊँगा। अवश्य जाइए। मगर साथ में थोड़ा सा तेल और एक तुला-दण्ड भी अवश्य लेते जाइए, ताकि लौटने के समय मुग्धानल दादा दोनों हाथों में कोंपर थमा देंगे और आप चाटते चले आइएगा।

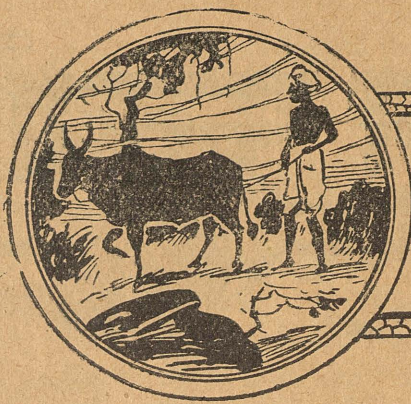
आपने महात्मा गाँधी को धमकी दी है कि अगर वे आपकी आज्ञा मान कर साम्प्रदायिक निर्वाचन नहीं स्वीकार कर लेंगे, तो मुसलमान नाराज़ हो जायेंगे और देश में साम्प्रदायिक अशान्ति की वृद्धि होगी अर्थात् शौकतपन्थो दल हिन्दुओं को पीस कर पी जाएगा। दुख है कि अखबार वाले इस बात के लिए मद जिल्लू को कोस रहे हैं। शायद उन्हें मालूम नहीं कि बेचारा आजकल इन्हीं बातों की रोटी खाता है।

एक सज्जन कहने लगे कि यह मूज़ी की कब-सा पेट वाला मौलाना मुसलमानों का साढ़साती है, यह उन्हें तबाह करने आया है। परन्तु अपने राम की राय है कि यह भारत की राजनीतिक प्रगति के मार्ग का ‘कुन्दा’ है और किसी मदारी के अप्रत्यक्ष हाथों ने इसे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच लुढ़का दिया है। लेहाज़ा जब तक दाढ़ी-चोटी में तबाह नहीं होगी, तब तक यह अपना कर्णकटु भोंपू भी बन्द नहीं करेगा।

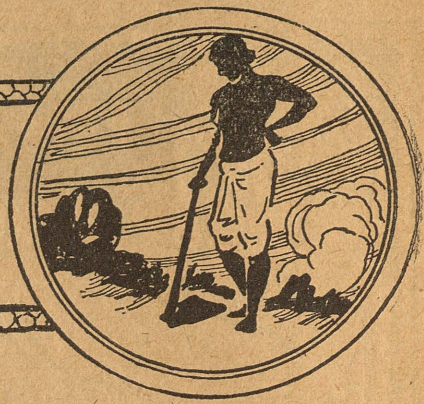
दुख है, कि लाहौर के मुसलमानों ने काला झण्डा दिखा कर बेचारे का विस्मरलाह ही गलत कर दिया। सोचा होगा कि बैठे-ठाले कुछ दिनों के लिए कबाब-रोटी की व्यवस्था हो जाएगी। मगर वहाँ ‘गो बैक’ का ऐसा नारा लगा कि नगाड़े की आवाज़ नकारखाने में तूती की आवाज़ हो गई। खैर, अब कलकत्ते पहुँचे हैं। अगर बैठ गया सिप्पा तो पौवारह है, नहीं तो जडर-जाला के मारे बुढ़ौती किरकिरी हो जाएगी।

इधर ‘पारस’ नाम के अखबार को पता लगा है कि ये और इनके स्वर्गीय सहोदर शाह अमानुल्ला के विरोधियों से पैसे ऐंठते रहे, इसके बाद बच्चा सका को ‘मर्दे मजाहिद’ की पदवी देकर सुट्टी गरम की और अब शाह नादिर खाँ को राज़ी की पदवी दे रहे हैं। मगर मुसलमानों को क्या कहा जाए कि इन बातों को जानते हुए भी भोंपू में सुट्टी भर मिरचों की बुकनी नहीं भोंक देते।





# भारतीय भारत



## [ 'रियासत' के उद्गार ]

### महाराज पटियाला की लड़कियों की शादी की पहेली

महाराज पटियाला की एक लड़की की शादी पिछले सप्ताह हो चुकी है और दो लड़कियों की शादियाँ आगामी सप्ताह में होने वाली हैं। इन तीनों लड़कियों के सम्बन्ध में जो विवरण 'रियासत' कार्यालय में आया है, वह बड़ा ही मनोरञ्जक है। उसमें कहा गया है, कि एक लड़की तो सरदार अमरसिंह (ये वही सरदार अमरसिंह हैं, जिनकी धर्मपत्नी को महाराज पटियाला ने बलपूर्वक उड़ा लिया था, जो अब तक महाराज के राजभवन में है और जिसके सम्बन्ध में पञ्जाब की रियासतों के भूतपूर्व गवर्नर जनरल मि० क्रम की चिट्ठी अखबारों में छपी थी कि सरदार अमरसिंह इस लड़की का मूल्य बीस हजार रुपये महाराज पटियाला से ले लें और अपना अधिकार छोड़ दें।) की पत्नी के गर्भ से है, दूसरी दलीप कौर (निहत सरदार लालसिंह की विधवा) के गर्भ से और तीसरी अनवर जान रण्डी के पेट से। पिछले सप्ताह वाली शादी जो बिजावर के युवराज से हुई है, महाराज पटियाला चाहते थे कि इस लड़के की शादी सरदार अमरसिंह की स्त्री के गर्भ से पैदा लड़की से की जाय। परन्तु जब इस शादी का समाचार सरदार अमरसिंह को मिला तो आपने एक तार महाराज बिजावर को भेजा। यह तार १६ अप्रैल सन् १९३१ को अम्बाला शहर के तार-घर से भेजा गया है, इस तार का नम्बर १६ है और उसका मज़मून इस प्रकार है :—

“सेवा में, हिज़ हाईनेस राजासाहब, बिजावर। वह कन्या जिसे ब्याहने के लिए आप आ रहे हैं, मेरी पत्नी अमर कौर की पुत्री है और उस ब्याह के परिणाम के आप जिम्मेदार होंगे।—अमरसिंह।”

इस तार के पहुँचने पर बिजावर में तो सनसनी फैली ही, महाराज पटियाला भी घबराहट में पड़े कि अब क्या हो? खैर, बिजावर और पटियाला के बीच कई तार आए-गए। परिणाम यह हुआ कि महाराज बिजावर अपने राजकुमार की शादी के लिए पटियाला आए और अमरसिंह की पत्नी की कन्या के बदले राजकुमार बिजावर को अनवर जान रण्डी के गर्भ से पैदा लड़की ब्याह दी गई। इस शादी में महाराज पटियाला ने अपने समर्थी को सवा लाख रुपये नक़द और अपनी लड़की को दो लाख के गहने दिए।

इस शादी के बाद बाक़ी दो लड़कियाँ हैं, जिनमें से एक तो नैपाल के किसी राजपूत जागीरदार से ब्याही जाएगी और दूसरी इलाहाबाद के किसी जागीरदार से। इन शादियों के सम्बन्ध में, समाचार है कि सरदार अमरसिंह ने निश्चय किया है, उनकी बीबी की लड़की से जो व्यक्ति शादी करेगा, उस पर ये अङ्गरेज़ी राज्य में फ़ौजदारी मुक़दमा दायर करेंगे। क्योंकि सरदार अमरसिंह का कहना है कि जिस समय महाराज पटियाला ने उनकी बीबी को उड़ाया था, उस समय वह गर्भवती थी, यह लड़की गर्भ में थी। इसलिए वह लड़की सरदार अमरसिंह

की है और उसकी शादी उसके पिता की मर्जी के खिलाफ़ कोई नहीं कर सकता; क्योंकि लड़की अभी नाबालिगा है। इसी तरह का नोटिस भी दुलहा साहब को दे दिया गया है। अब अनवर जान तवायफ़ वाली लड़की का किस्सा सुनिए! अनवर जान के ख़ानदान के लोग और पटियाला के मुसलमानों का दल शोर मचा रहा है कि यह लड़की चूँकि मुसलमान औरत के गर्भ से है, हिन्दू लड़के को क्यों ब्याही गई? और क्यों प्रचलित प्रथा के विरुद्ध एक मुसलमान तवायफ़ की औलाद हिन्दू के सुपुत्र की गई?

पटियाला के हमारे एक दोस्त का कथन है कि महाराज पटियाला का पञ्जाब स्टेट्स पीपल्स कॉन्फ़रेन्स के सेक्रेटरी के चरणों पर पगड़ी रखना सिर्फ़ इसलिए था कि इन शादियों के अवसर पर किसी प्रकार का आन्दोलन न हो। परन्तु सरदार अमरसिंह की बहादुरी, आत्माभिमान और आत्म-मर्यादा की दाद देनी चाहिए कि इन पर कई बार झूठे मुक़दमे चलाए गए। यातनाएँ

## लतखोरोलाल

( सजिल्द और सचित्र )

The Author Mr. G. P. Srivastava himself writes to say :—

“You have made a wonderful publication of my *Latkhor Lal* and must have spent quite a lot over its pictures and get-up. Please accept my best thanks for such a nice printing.”

Price Rs. 4/- only

THE “CHAND” OFFICE

Chandralok—Allahabad

दी गई। लाखों रुपये के लोभ दिखाए गए, परन्तु इस मद में सब पर लात मार दी और वह लड़की तथा दुलहे पर फ़ौजदारी मुक़दमा करने के लिए मैदान में उतर रहा है; जो निश्चय ही सारे भारत के देशी रजवाड़ों के लिए इब्रत पैदा करने का सबब होगा।

### शाह स्पेन के नाम भारतीय नरेशों का पैग़ाम

काठियावाड़ के विख्यात अख़बार “सौराष्ट्र” में भारत के पाँच नरेशों—महाराज पटियाला, जाम साहब नवानगर, महाराज अलवर, महाराज बीकानेर और महाराज बड़ौदा की ओर से एक पैग़ाम छपा है, जो इन नरेशों ने स्पेन के सिंहासनच्युत बादशाह अल्फ़्रेन्ज़ो को, हाल में भेजा है। तार द्वारा भेजे गए इस पैग़ाम में लिखा है :—

“आपके ऊपर जो विपत्ति पड़ी है, उसे देख कर हमें बहुत दुःख हो रहा है। कुछ मूर्ख और स्वार्थपर लोगों के आन्दोलन के कारण सर्व-साधारण में अपने राज्यों के सम्बन्ध में अविश्वास बढ़ता जा रहा है, परन्तु इसके होते हुए भी हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि ईश्वर ने संसार के विभिन्न विचार के करोड़ों लोगों पर शासन करने के लिए शासक वंशों को इस धरा-धाम पर पैदा किया है। इसलिए आप आख़िरी दम तक लड़िए और अपने ईश्वरदत्त अधिकारों की रक्षा कीजिए। हम आपकी सहायता के लिए तैयार हैं, हालाँकि हम भी यहाँ जीवन और मृत्यु की कशमकश में पड़े हैं।”

शाह अल्फ़्रेन्ज़ो की ओर से इन नरेशों को निम्न-लिखित उत्तर प्राप्त हुआ है :—

“आपके तार के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। इससे मुझे बड़ी सान्त्वना प्राप्त हुई है। मैं यह भी मानता हूँ कि हमारे राजघराने और हमारे राज्य संसार की भलाई के लिए हैं। हमें ईश्वर की आज्ञानुसार प्रजा का सेवक होना चाहिए। आपके तार के बाद मैंने अपना विचार बदल दिया है। मैंने राजसिंहासन को छोड़ नहीं दिया है। केवल अपने कुछ अधिकारों को छोड़ा है और उसकी घोषणा भी कर दी है। मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी मदद करेंगे और मेरा राज्य तथा मेरे ईश्वरदत्त अधिकारों के लिए कोई बात उठा न रखेंगे।”

उपर्युक्त बातें ‘सौराष्ट्र’ के सिवा किसी दूसरे समाचार-पत्र में नहीं छपी हैं और मालूम होता है कि हमारे सहयोगी ने, इसे किसी तरह पाँच-छः राज्यों में से किसी एक के यहाँ से प्राप्त किया है। वस्तुतः इन राजवाड़ों का तार और उसका उत्तर दोनों ही विशेष मनोरञ्जक हैं। रियासतों की बेबस प्रजा को राजाओं का वह वाक्य तो मज़े ले-लेकर पढ़ना चाहिए कि यहाँ भी रजवाड़े जीवन और मृत्यु की कशमकश में पड़े हैं।

### पटियाला से सरदार नानकसिंह का वारण्ट रद्द

पटियाला से अभी हाल में ही समाचार मिला है कि पटियाला के भूतपूर्व सुपरिण्टेण्डेण्ट ऑफ़ पुलिस सरदार नानकसिंह, जो सरदार लालसिंह की हत्या के अपराध में आजीवन कैद थे, और जो जाँच-कमीशन के अवसर पर पटियाला से भाग गए थे, या भगा दिए गए थे, अब बिल्कुल स्वतन्त्र रूप से लाहौर पहुँच गए हैं। रियासत पटियाला ने, आप पर जो वारण्ट था, उसे रद्द कर दिया है।

सरदार नानकसिंह पटियाला के वह व्यक्ति हैं कि अगर आपका जीवन-चरित्र प्रकाशित किया जाए, तो उसमें देशी रियासतों के आग्याचारों और स्वेच्छाचारिता की इतनी बातें मिलेंगी कि उन्हें पढ़ कर रूस के ज़ार को भी लजित हो जाना पड़ेगा। चूँकि सरदार नानकसिंह का रियासत पटियाला के गत बीस वर्षों के इतिहास से विशेष सम्बन्ध है, इसलिए यह अनुचित न होगा कि आज हम आपके स्वतन्त्र होने पर आपके कार्यों का संक्षिप्त परिचय पाठकों को प्रदान करें।



सरदार नानकसिंह पटियाला के सी० आई० डी० के सुपरिण्टेंडेंट थे। जब पटियाला नरेश स्वर्गवासी सरदार लालसिंह की बीवी दलीपकौर पर प्रेमासक्त (इसे प्रेम कहना प्रेम की तौहीन है, इसलिए कामासक्त कहना चाहिए) हुए तो सरदार लालसिंह की पटियाला में हत्या हुई, जिसके साथ सरदार नानकसिंह का सम्बन्ध बताया जाता है। इस हत्या के कुछ दिन बाद सरदार नानकसिंह ने हत्या-सम्बन्धी सब पत्रादि पञ्जाब के तत्कालीन छोटे लाट सर माइकेल ओडायर को दिखा दिया। सर माइकेल ने महाराजा पटियाला से जवाब तलब किया, तो महाराज को वे पत्रादि हस्तगत कर लेने की आवश्यकता हुई। उन्होंने सरदार नानकसिंह को लालच देकर फिर वापस बुलवाया और उन्हें तरकी पर नौकरी दी गई। सरदार नानकसिंह के पटियाला पहुँचने के एक सप्ताह बाद उनकी गिरफ्तारी हो गई और आप पर जेलखाने में वह अत्याचार हुए कि सुन

कर कलेजा बाँप जाता है। और यह सब कुछ इसलिए किया गया कि आप वह कागजात लौटा दें, जिससे इस हत्या का सम्बन्ध महाराज से साबित होता था। अन्त में आपने कागजात दे दिए।

इसके बाद पञ्जाब के भूतपूर्व अन्यतम मन्त्री सरदार बहादुर सर सुन्दरसिंह मजीठिया बीच में पड़े, कि अगर कागजात महाराज को मिल जायँ तो सरदार नानकसिंह छोड़ दिए जायँ। इस सुलह कराने के उपलक्ष में सरदार सुन्दरसिंह भी चाबीस हजार रुपए खा गए। कागजात वापस दे दिए गए, पर सरदार नानकसिंह को छोड़ा न गया। आप पर हत्या का अपराध लगा कर आजीवन कैदी की सजा दे दी गई। ... ..

खैर, सरदार नानकसिंह इस समय आजाद हैं और उन्हें खुश करने के लिए महाराज पटियाला ने २० हजार रुपए दिए हैं। परन्तु सरदार साहब को रुपए

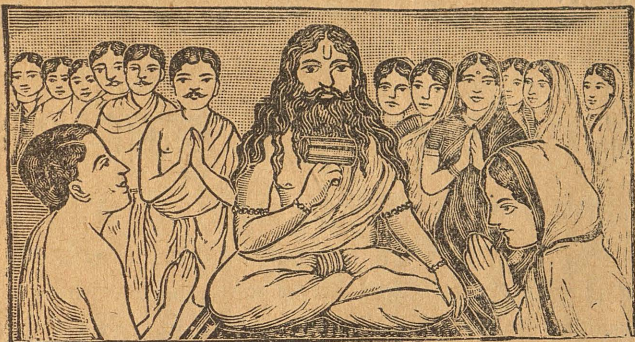
के लोभ में न पड़ कर मैदान में आ जाना चाहिए और महाराज की करतूतों को जनता के सामने रख देना चाहिए।

\* \* \*

## सिगरेट मशीन

सस्ती और शुद्ध स्वदेशी सिगरेट पीने या बेचने के लिए यह मशीन मँगाइए ! १ घण्टे में ५०-६० सिगरेट बना कर १) या १॥) रोज पैदा कर सकते हैं ! तम्बाकू व १०० सिगरेट के कागज सहित मू० १॥) डाक-खर्च ॥) बढ़िया मशीन २॥) डाक-खर्च ॥)

पता—दीन ब्रादर्स अलीगढ़, नं० ८



न्तरों का हाथ क्षण भर में जान लेना, भूत-प्रेतों को बस में कर लेना, स्वप्न-दोष का न होना, मरे हुएओं से बात-चीत करना, राज-सम्मान होना कहाँ तक गिनाएँ बस जिस काम में हाथ डालिएगा फ़तह ही फ़तह है। १२ दिन तक फ़ी वाद १२ दिन के १ कवच का मूल्य २), तीन का १॥) डाक-महसूज ॥=); ध्यान रहे मरे हुएओं की १ पुरत तक का हाथ बतावेगा दूसरे के ज़िम्मेदार हम नहीं, अगर कोई झूठा साबित करे तो १२) इनाम। सन्तान चाहने वाले स्त्री और पुरुष दोनों ही कवच मँगावे।

पता—एस० कुटी हाटखोला ( कलकत्ता )

## मुक्त ! मुक्त !! मुक्त !!

जो कवच २) में मिलता था आज वह सिर्फ १२ दिन के वास्ते मुक्त भेजा जाता है। यह कवच संसार भर के जादू तन्त्र-मन्त्र ज्योतिष चमत्कारों से परिपूर्ण है इसके धारण करने से हर तरह के काम सिद्ध होते हैं। जैसे रोजगार में लाभ मुकदमे में जीत, सन्तान-लाभ, हर तरह के सङ्कटों से छुटकारा, इस्तिहान में पास होना, इच्छानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे बस कर लेना हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, देश-देशानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे बस कर लेना हर प्रकार के रोगों से छुटकारा पाना, देश-देशानुसार नौकरी मिलना, जिसको चाहे बस कर लेना

## रजिस्टर्ड

## शान्तिधारा

महात्मा का प्रसाद नीचे लिखे रोगों में रामबाण है जैसे हैजा, प्लेग, दस्त, उलटी, पेचिश, फ़सली बुखार, मलेरिया, निमोनिया, फोड़ा-फुन्सी, हड्डी के जोड़ों का दर्द, कान व पेट का दर्द, दमा, खाँसी, सर्दी, बिच्छू-साँप और-और ज़हरीले डङ्कों का काटना, कुछ दिन नियमानुसार लेप करने से स्वेत-कुष्ठ जड़ से मिट जाता है। हर एक घर में सदा रखने की चीज़ है। मूल्य छोटी शीशी ॥), बड़ी १), एक बार ६ शीशी मँगाने से डाक-खर्च माफ़।

## शान्तिधारा औषधालय

८२ कोल्टोला स्ट्रीट, कलकत्ता

## असल रुद्राक्ष माला

१) आना का टिकट भेज कर १० दाना नमूना तथा रुद्राक्ष माहात्म्य मुफ्त मँगा देखिए।

रामदास एण्ड को०,  
३ चोरबगान स्ट्रीट, कलकत्ता

## सच्चा और असली

## “नेत्र बन्धु सुर्मा”



रतौंधी, तारोकी, शुन्ध, जाला, माड़ा, लाली, मोतियाबिन्द, ढलका, नाखूना और खुन्नकी अर्थात् नेत्र सम्बन्धी तमाम रोगों को जड़ से आराम कर

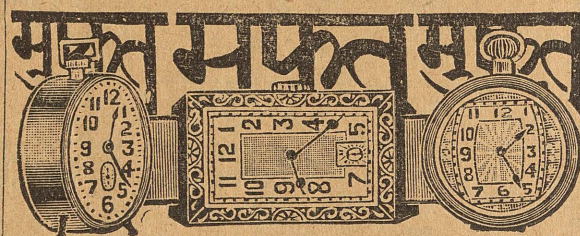
देने के लिए इमारा यह नेत्र बन्धु सुर्मा अपूर्व बल और गुण सम्पन्न है। अगर आँखों में किसी किस्म की शिकायत न भी हो तो भी इसे बराबर लगाने से नेत्र की ज्योति तेज बनी रहती है, आँखों में होने वाली तमाम बीमारियों से बचाए रखता है। बच्चे, जवान, मर्द और औरत सब को समान रूप से हितकारी है। दाम प्रति तोला १) रुपया डा० म० अलग। एक तोला से कम सुर्मा नहीं मिलेगा।

पता—एस० ए० बी० बक्सी एण्ड कं०  
कोठी नं० ७० कोल्टोला स्ट्रीट, कलकत्ता

## लूटो !

## लूटो !!

## खूब लूटो !!!



हमारी मशहूर दाढ़ की दाढ़ा २४ घण्टे में दाढ़ को साफ़ कर देती है। १ दर्जन का दाम ३) दो दर्जन एक साथ देने से ३ सच्ची घड़ियाँ ठीक समय बताने वाली गारण्टी सहित, साथ में पैर के नाप का जूता भी मुफ्त मिलेगा। डाक-महसूज १ दर्जन ॥) दो दर्जन १)

पता—फ़्लेण्डस ऑफ़ इण्डिया, हाटखोला ( कलकत्ता )

## प्लैण्ड क्लियरिङ्ग सेल !!

दोनों हाथों लूटिए !!!

हमारे निहायत खुशबूदार ओटो मोहिनी एसेन्स ( मूल्य प्रत्येक शीशी ८ आना ) की ६ शीशियाँ ख़रीदने वाले को निम्न-लिखित चीज़ें उपहार में दी जायँगी :—१ नं० ३६ एच० की



सुन्दर और मज़बूत घड़ी; १ फ़्लैन्सो फ़ॉक्रेट वाच ( गारण्टी ३ वर्ष ); १ ट्वाय रिस्टवाच ( लेदर बैण्ड के साथ ); १ रुमाल; १ जोड़ जूता ( ज़ीन का बना हुआ ); १ मनीबैग; १ फ़ाउण्टेन पेन;

१ डापर; १ चश्मा; १ सेट कुर्ते की बटन; ८ अँगूठियाँ। दाम इन उपहार की चीज़ों के साथ ६ शीशियों का केवल ३); पोस्टेज १० आना।

पता—एम० एन० वाच को०,  
२० जयमित्र स्ट्रीट, हथखोला, कलकत्ता

## डॉक्टर बनिए

घर बैठे डॉक्टरों पास करना हो तो कॉलेज को नियमावली मुफ्त मँगाइए ! पता—  
इण्टर नेशनल कॉलेज ( गवर्नमेण्ट रजिस्टर्ड )  
३१ बाँसतल्ला गली, कलकत्ता

## महात्मा ईसा

इस पुस्तक में महापुरुष ईसा के जीवन की सारी बातें आद्यन्त वर्णन की गई हैं। उनके सारे उपदेशों तथा चमत्कारों की व्याख्या बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से की गई है। एक बार अवश्य पढ़िए ! मूल्य २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥=)

“चाँद” कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद





## तीनों घड़ियाँ मुफ्त

धोखा साबित करनेवालेको ५००) रु० ईनाम ।

नीचे लिखी दवाओंमें एकही या मिलाकर १२ शीशी लेनेसे मजबूत टाईम-पीस, २४ लेनेसे असली रेलवे पाकेट ३६ लेनेसे सुनहरी कलाई घड़ी मुफ्त ईनाम । प्रत्येक घड़ीकी गारन्टी ३ वर्ष । डाक खर्च अलग देना होगा ।

[नोट—अर्क कपूर १) पुदीना २) का १), सुरमा १) का, कामिनी तैल १) का १), कीमत कम करके भी पूरी ईमानदारीके साथ असली घड़ियाँ ईनाममें दी जा रही हैं । २०००० से ज्यादा ग्राहक और एजेंट हो चुके हैं । व्यापारियों—को खास दर, सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखिये, जरूर सन्तुष्ट होंगे ।]

अर्क कपूर—हैजेकी शर्तिया दवा

कीमत १)

अर्क पुदीना सज्ज—अजीर्ण व पेट दर्द आदिमें ,, १)

अर्क पीपरमेन्ट ( तैल )—खाने व लगानेका ,, १)

सुरमा—भीमसेनी कपूरसे बना हुआ ,, १)

नमक सुलेमानो—पेट रोगोंमें मशहूर ,, १)

दादका मलहम—२४ घंटेमें शर्तिया फायदा कीमत १)

प्राणदा—सब तरहके बुखारोंमें अक्सीर ,, १)

ससगुण तैल—जला, चोट, वाय-दर्द आदिमें ,, १)

अग्निमुख चूर्ण—अत्यन्त स्वदिष्ट पाचक ,, १)

कामिनी विलास तैल—सुगन्ध की खान ,, १)

पता—श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, हेड आफिस १०६, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, पोष्टबक्स ६८३५, कलकत्ता ।

## हिन्दी हैण्ड प्रेस



हिन्दी भाषा प्रेमियों ! आप इसमें कार्ड, लिफाफा, चैक, रोज-मिती के पर्चा, छोटे-छोटे इश्तहार आदि छोटे काम स्वयं तुरन्त छाप कर काम में लाइए । बड़े काम की चीज है । शीशा धातु के अक्षर, मात्राएँ व स्पेस मिला कर ४०० टाइप हैं । प्रेस का साइज ७ इंच लम्बा और ४ इंच चौड़ा है । छापने के अन्य सामान, स्याही की डिब्बी और छापने की विधि साथ में मौजूद है । मूल्य १५, डा० म० १५) इसके लिए अधिक टाइप और स्याही भी हमारे यहाँ बिकती है ।

पता—मैनेजर देशबन्धु कार्यालय,  
मु० बिहारघाट, पो० राजघाट, जि० बुलन्दशहर

डा० डब्लू० सी० राय, एल० एम० एस० की

## पागलपन की दवा

५० वर्ष से स्थापित

मूर्च्छा, मृगी, अनिद्रा, न्यूरस्थेनिया के लिए भी मुफ़ोद है । इस दवा के विषय में विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ कहते हैं कि :—“मैं डॉ० डब्लू० सी० राय की स्पेसिफिक फॉर इन्सेनिटी ( पागलपन की दवा ) से तथा उसके गुणों से बहुत दिनों से परिचित हूँ ।” स्वर्गीय जस्टिस सर रमेशचन्द्र मित्र की राय है—“इस दवा से आरोग्य होने वाले दो आदमियों को मैं खुद जानता हूँ ।” दवा का दाम ५) प्रति शीशी ।

पता—एस० सी० राय एण्ड कं०,

१६७ ३ कार्नवालिस स्ट्रीट,

या ( ३६ धर्मतला स्ट्रीट ) कलकत्ता !

तार का पता—“Dauphin” कलकत्ता



1616 14 1616 14

पढ़ कर गुप्त विद्या द्वारा जो चाहेंगे वन जाओगे जिस की इच्छा करेंगे मिल जाये गा मुफ्त मंगवाओ पता साक लिखो ।

गुप्त विद्या प्रचारक आश्रम, लाहौर

## ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ ?

तत्काल गुण दिखाने वाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ



कफ, खाँसी, हैजा, दमा, शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट-दर्द, कैं, दस्त, जाड़े का बुखार ( इन्फ्लूएन्ज़ा ) बालकों के हरे-पीले दस्त और ऐसे ही पाकाशय की गड़बड़ी से उत्पन्न होने वाले रोगों की एक मात्र दवा है । इसके सेवन में किसी अनुपान की जरूरत न होने से मुसाफ़िरी में लोग साथ रखते हैं (कीमत १५) आना डा० व्यय १ से २ शीशी का ।=)

यदि संसार में बिना जलन और तकलीफ़ के दाद को जड़ से खोने वाली कोई दवा है तो बस, वह यह है । दाद चाहे पुराना हो या नया, मामूली हो या पकने वाला, इसके लगाने से अच्छा होता है । कीमत फ्री शीशी १५) डा० ख० १ से २ शीशी का ।=)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती हैं । धोखे से नकली दवा न खरीदिए ।

पता—सुख सञ्चारक कम्पनी, मथुरा

## हमारे दोस्त सफल हुए



बाबू परमेश्वरप्रसाद, गुदरी बाज़ार दारजिलिङ से १६ ता० सितम्बर की चिट्ठी में इस प्रकार लिखते हैं—“कृपा कर एक जड़ी भेज दीजिए हमारे मित्र को आपकी जड़ी से पूरा लाभ हुआ है ।”

तिब्बत व हिमालय की कन्दराओं में अनेक दिन खोज करते-करते घूमते-फिरते एक बार यह जड़ी एक लामा योगी से प्राप्त हुई है, जिसके धारण करने मात्र से नीचे लिखे सब काम पूरे होते हैं । इसमें सन्देह नहीं । मँगाते समय अपना नाम व काम जरूर लिखिए । एक जड़ी का मूल्य ३॥) डाक-खर्च १=) अलग । ३ जड़ी एक साथ मँगाने वाले को १॥) में मय डाक-खर्च के मिलेगी, जिन्हें विश्वास हो वही मँगावें । शपथपूर्वक लिखने से कीमत वापिस दी जाती है ।

( १ ) वशीकरण—के लिए इससे ज्यादा आजमाई हुई कोई चीज़ संसार में नहीं ; स्त्री-पुरुष दोनों के लिए मूल्य ३॥) ( २ ) रोग से छुटकारा—पुराना खराब से खराब असाध्य कोई भी रोग क्यों न हो शर्तिया आराम मूल्य ३॥) ( ३ ) मुक़दमा—चाहे जैसा पेचीदा से पेचीदा हो ; मगर इससे शर्तिया जीत होगी मूल्य ३॥) ( ४ ) रोज़गार—तिजारत में लाभ न होता हो, हमेशा घाटा होता हो उनका रोज़गार लगेगा, लाभ होगा मूल्य ३॥) ( ५ ) नौकरी—जिनकी नौकरी नहीं लगती हो, बेकार बैठे हों या हैसियत की नौकरी न मिलती हो जरूर होगी मूल्य ३॥) ( ६ ) परीक्षा—प्रमोशन में इससे जरूर कामयाबी मिलेगी, विद्यार्थी और नौकरी-पेशा जरूर आजमाइश करें मूल्य ३॥) ( ७ ) शत्रु-विजय—दुरमन सफ़्त से सफ़्त क्यों न हो उसके ऊपर एक बार विजय जरूर मिलेगी मूल्य ३॥) ( ८ ) तन्दुरुस्ती के लिए यह अपूर्व है, थोड़े ही समय में स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पड़ता है मूल्य ३॥) ६० ।

पता—विजय लौज, पोस्ट सलकिया, हबड़ा ( बङ्गाल )



## निर्वासिता

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से चीखकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छतियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वृक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुल्लिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संचित परिचय है। मूल्य केवल ३) रु०

## लम्बी दाढ़ी

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,  
बड़ी मासूम बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।  
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है।  
लाख दो लाख में बस एक है लम्बी दाढ़ी ॥

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संचित विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ५,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥) ; स्थायी ग्राहकों से १॥॥) मात्र !

## बाल-रोग-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम खर्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु-सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार स्वयं कर सकती हैं। मूल्य २॥) रु०

## दक्षिण अफ़्रीका

### के मेरे अनुभव

जिन प्रवासी भाइयों का करुण स्थिति देख कर महात्मा गाँधी ; मि० सी० एफ़० एण्ड्रयूज़ और मिस्टर पोलक आदि बड़े-बड़े नेताओं ने खून के आँसू बहाए हैं ; उन्हीं भाइयों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने वाले पं० भवानीदयाल जी ने अपना सारा अनुभव इस पुस्तक में चित्रित किया है। पुस्तक को पढ़ने से प्रवासी भाइयों की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति तथा वहाँ के गौराङ्ग प्रभुओं की स्वार्थपरता, अन्याय एवं अत्याचार का पूरा दृश्य देखने को मिलता है। एक बार अवश्य पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए !! मूल्य २॥) रु०

## चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन की अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायेंगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम हास्यरस-पूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। भोजन के पश्चात् मनोरञ्जन के लिए ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत-मात्र १) ; स्थायी ग्राहकों से ॥) ; केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

## उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की खुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी ये सारी मुसीबतें दूर हो जायेंगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य १॥) रु०

## चित्तौड़ को चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं का महान साहस, उनका वीरत्व और आत्मबल भूल गए ? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना, आपने एकदम बिसार दिया ? याद रखिए ! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का खून उबल उठेगा ! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १॥) ; स्थायी ग्राहकों से १) रु०

व्यवस्थापक 'बाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद



# ये बच्चे क्या चाहते हैं ?

हिन्दी में बालक-  
बालिकाओं के लिए यही  
सबसे अच्छा, सबसे  
सस्ता और सबसे सुन्दर  
सचित्र मासिक पत्र है।



सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वार्षिक मूल्य २॥॥

एक प्रति १/-



बाल-सखा लड़कों  
का  
सखा है।

## बाल-सखा



बाल-सखा लड़कियों  
की  
सहेली है।

### यह चिट्ठी आपके लिए है

प्रिय महोदय,

यदि आपके घर में बच्चे हैं तो आपको यह जरूर चिन्ता रहती होगी कि वे पढ़-लिख कर होशियार हों और उनका जीवन सुखमय हो। इसके लिए आप उन्हें स्कूल भेजते होंगे, घर पर मास्टर रख कर पढ़ाते होंगे और भी बहुत कुछ करते होंगे। परन्तु इस युग में इतना ही काफी नहीं है। यह प्रतिद्वन्द्विता का युग है। हर एक मनुष्य दूसरों से बाज़ो मार ले जाना चाहता है। इसलिए बच्चों के हाथ में वह सब साधन देना, जिनसे वे अपनी उन्नति के मार्ग में तेज़ी से बढ़ सकें, हर एक माता-पिता का कर्तव्य है।

अपने बच्चों के भविष्य-निर्माण में आप थोड़ी सी सेवा हमसे क्यों न लीजिए ! गत १६ वर्षों से बाल-सखा द्वारा हम यही कार्य कर रहे हैं। हमारा यह अनुभव है कि बाल-सखा पढ़ने वाले बच्चे अन्य बच्चों की अपेक्षा बहुत तेज़ हो जाते हैं और हर बात को आसानी से समझ लेते हैं। उनका पढ़ना और लिखना तो दुरुस्त होता ही है, वे बिना मेहनत इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि विषय बड़े मज़े में सीख जाते हैं। यदि आप किसी ऐसे लड़के से बातचीत करें, जो बाल-सखा पढ़ता है, तो आप बिना उसकी तारीफ़ किए न रहेंगे। बाल-सखा में बालक-बालिकाओं की रुचि का बड़ा ख्याल रखा जाता है। बाल-सखा में जो लेख निकलते हैं वे बाल-रुचि के अच्छे से अच्छे जानकारों के लिखे होते हैं। और फिर भाषा इतनी दिलचस्प और इतनी सरल होती है कि बालक इसे बिना पढ़े नहीं छोड़ते। आप स्वयं बाल-सखा के ग्राहक बन कर देख सकते हैं कि एक ही साल में आपके बच्चे क्या से क्या हो जाते हैं। आजकल इसकी इतनी माँग बढ़ गई है कि नए अक्षर बच ही नहीं पाते, परन्तु यदि आप देखना चाहें और हमें एक कार्ड लिखें तो आपको हम इसकी नई संख्या भेज सकते हैं। अब बाल-सखा और भी अच्छा निकल रहा है। पहले से बहुत अच्छा। पर इसका वार्षिक मूल्य प्रचार के ख्याल से हमने सिर्फ २॥॥ ही रखा है। यानी सिर्फ़ ढाई रुपए

में आपके बच्चे सालभर बाल-सखा पढ़ सकते हैं। यदि आप बाल-सखा मँगाना चाहें तो नीचे लिखे पते पर २॥॥ मनी-ऑर्डर द्वारा भेजें या लिखें हम वी० पी० भेज दें। इस सम्बन्ध में और कुछ जानना चाहें तो भी हमें जरूर लिखें।

आपका—मैनेजर बाल-सखा

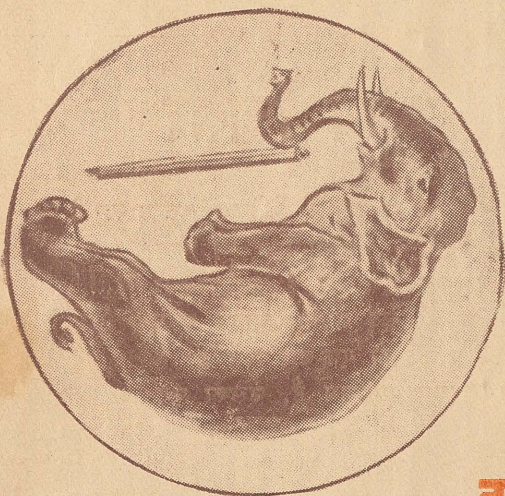
मिलने का पता :—

मैनेजर बाल-सखा

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड

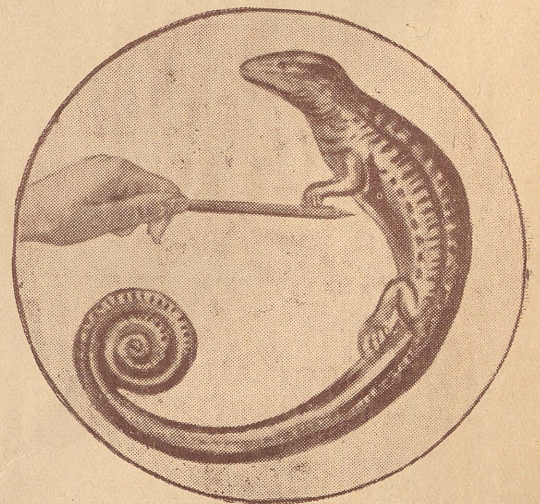
इलाहाबाद

मिस्टर गज्जू क्या भूल  
रहे हैं !



बाल-सखा पढ़ने वाले लड़के ऐसा  
हाथी बना कर उँगली पर  
भुला सकते हैं।

बताइए यह कौन  
जानवर है



यह खेल भी लड़के बना लेते हैं। ऐसी  
बहुत सी बातें बाल-सखा में प्रति  
मास निकलती रहती हैं।



This PDF you are browsing now is in a series of several scanned documents by the Centre for the Study of Developing Societies (CSDS), Delhi

CSDS gratefully acknowledges the enterprise of the following savants/institutions in making the digitization possible:

Historian, Writer and Editor Priyamvad of Kanpur for the Hindi periodicals (Bhavishya, Chand, Madhuri)

Mr. Fuwad Khwaja for the Urdu weekly newspaper Sadaqat, edited by his grandfather and father.

Historian Shahid Amin for facilitating the donation.

British Library's Endangered Archives Programme (EAP-1435) for funding the project that involved rescue, scan, sharing and metadata creation.

ICAS-MP and India Habitat Centre for facilitating exhibitions.

Digital Upload by eGangotri Digital Preservation Trust.

